कंगू
अयूब प्रेमी

ये कंगूरे

ये कंगूरे

डॉ० अयूब 'प्रेमी'

सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली-७

समर्पण

अपने गुरूदेव
प्रोफेसर पं० जगन्नाथ तिवारी जो को
जिन्होंने सदैव विषम परिस्थितियों में
ज़हर पीकर भी जीवित रहने के लिए
अपूर्व मनोबल दिया है।

—अयूब 'प्रेमी'

ये कंगूरे

'ये कंगूरे' नामक उपन्यास में 'कंगूरे' शब्द का प्रतीकात्मक अर्थ स्वातंत्र्योत्तर सामंतशाही संस्कारों द्वारा किये गये शोषण से सम्बद्ध है। उपन्यास का कथानक विराजपुर, दिल्ली, आगरा तथा देवनगर से सम्बन्धित होने के कारण चतुर्भुज के परिवेश में आबद्ध है। यहाँ उपन्यासकार ने आन्तरिक घटनाओं की अवतारणा करके पात्रों के मन के भावों को कुरेदने का प्रयास किया है।

डाक्टर अयूब प्रेमी' ने एक इतिहासकार के समान ही समाज के महत्त्वपूर्ण तथ्यों का अन्वेषण किया है। स्वतन्त्रता के प्रथम दशक में समाज सामंतशाही मनोवृत्ति के क्षोभमय शोषण का शिकार रहा है। इसी पृष्ठभूमि में डाकू बनाम विधानसभा के सदस्य जन्म लेते गये हैं जिनकी राजनीति ने शिक्षा के क्षेत्र में ये कंगूरे उभारे हैं। इन्हीं कंगूरों के नीचे गहरी खाई में भ्रष्टाचार, दुराचार और अनैतिकता के कीटाणुओं से किलबिलाती जनता संत्रस्त है। इस जीवन का प्रतिनिधित्व विषपायी चरित नायक द्वारा कराया गया है। अतः यहाँ हार एक व्यक्ति राजीव की ही नहीं, अपितु भ्रष्टाचार, दुराचार और अनैतिकता के कंगूरों से गिराई गई समस्त देश की मानवता की हार है। शिक्षा के प्रांगण में जिस नयी पीढ़ी का निर्माण हो रहा है उसका प्रतीकात्मक रूप राजीव का त्रासद जीवन ही है। जिस स्वतन्त्र देश की शिक्षा-संस्थाओं में शुक्ला जी, गुप्ताजी और मायाजी जैसे अध्यापक हों उसका भविष्य चिन्ता का कारण है।

लेखक ने बड़ी निर्भीकता के साथ जिन तथ्यों को प्रकट किया है उनमें भौतिक अस्तित्व है यह भौतिक अस्तित्व चेतना के अस्तित्व द्वारा

प्रकाशित हुआ है। इस चेतना के अस्तित्व में मधुरता के साथ कटुता का स्वाद है, उसी प्रकार जैसे किसी दवा की टिकिया का ऊपरी कोट मीठा और उसके अन्दर का तत्त्व तीखा तथा कड़वा हो। क्या आज देश के नवयुवकों को यही स्वाद चखने को नहीं मिल रहा ? क्या वे शहद के साथ जहर मिलाकर नहीं पी रहे ? क्या घनी निराशा की स्थितियों से होकर मानव आत्महत्या की ओर नहीं बढ़ रहा ? यह जीवन की निरर्थकता किसने पैदा की। निश्चय ही यह उपन्यास हमें इन प्रश्नों पर सोचने के लिए विवश कर देता है।

अतः संक्षेप में मैं यही कह सकता हूँ कि लेखक ने बड़ी भावप्रवणता तथा संवेदनशीलता के साथ उपर्युक्त कथ्य की अभिव्यंजना की है। उपन्यास की शैली अत्यन्त रोचक तथा व्यक्तित्वपूर्ण है।

—डा० रमेशकुमार शर्मा
आचार्य तथा अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर कश्मीर

ये कंगूरे

इस उपन्यास का सबसे मनमोहक तत्त्व तो लेखक का अपना भोला-भाला, कुछ सोचता और कुछ हिचकिचाता-सा अस्तित्व है। पूरी पुस्तक में मानो अंधेरी रात में कमरे में फैली हुई नीली, धुँधली-सी परन्तु आँखों को सुख और मन को शान्ति प्रदान करने वाला प्रकाश है। जो प्रकाश है भी और नहीं भी है क्योंकि धुंधलेपन से उसका सम्बन्ध अटूट है। लेखक ने एक स्थल पर जीवन को स्वप्न बताया है और मृत्यु को स्वप्न का टूटना। यही स्वप्न की सी मिठास, ठण्डक और धुँधलाहट लेखक ने उपन्यास के हर पृष्ठ पर बिखरा दी है।

दूसरी बात जिसने मुझे आकर्षित किया वह है सोच में डूबा हुआ मगर सीधा-सा स्टाइल। जैसे आपसे कोई बातचीत कर रहा हो और वह भी कान में। इन बातों में बड़ी मधुरता है, नर्मी है। सोच की शीतल मधुर लहरें बहती चली जाती हैं और उनकी इस शीतलता और मधुरता के नीचे जीवन का कितना कोलाहल, उसके व्यंग्य का कैसा विष और काँटे की भाँति खटकने वाला चिन्तन भरा है।

जाने-पहचाने पात्रों की यह दुनिया सजाकर जीवन के चिंतन को नये ढंग से प्रस्तुत करने पर मैं लेखक को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि पाठक इस यथार्थपरक उपन्यास का हार्दिक अभिनन्दन करेंगे।

—मुहम्मद हसन

आचार्य तथा अध्यक्ष

स्नातकोत्तर उर्दू-विभाग

कश्मीर विश्वविद्यालय

श्रीनगर

उपोद्घात—बिन्दु बिन्दु चमकते जुगनू

नियति का चंचल और वेगवान रथ मधुर ध्वनि करता हुआ चलता रहता है। उसके चक्रों की खड़खड़ाहट मृत्यु के भय को उत्पन्न करती है। उसकी घंटियां जन्म के समय मधुर ध्वनि करती हुई उन्मत्त बना देती हैं। यह ध्यान भी नहीं रह जाता कि रथ कितनी तीव्रता से चला जा रहा है। हमारी चेतना विमुग्ध हो जाती है। मानव आनन्द की मस्ती में झूमता हुआ उसी रथ के नीचे आ जाता है। उस समय उसे उसकी खड़खड़ाहट सुनाई देती है जिसको मृत्यु का अट्टहास कहा जाता है। उसी रथ के साथ ऋतुयें नृत्य करती हुई आती हैं और दुबारा आने का वचन देकर चली जाती हैं। जीवन-रूपी झरने में विविध राग-रंगों के साथ मधुर सुगन्ध व्याप्त हो जाती है। यह वही जीवन है जिसमें सुख-दुःख के ज्वार-भाटे आविर्भूत होते हैं। उसी रथ की खड़खड़ाहट से वह चौंका लेकिन उसने देखा कि पहिये अभी चकनाचूर किये देते हैं। यकायक रथ रुक गया। तभी भयंकर अंधकार को चीरते हुए उसे ये गम्भीर शब्द सुनाई दियेः—

"हम ज़िन्दगी से मरते हैं मौत से नहीं। हमारे जीवन में जब चेतना की पुकार थक कर सो जाती है तभी हम सांस लेते हुए भी मुर्दे के समान हैं। कौन कहता है कि मैं पागल हूं, कौन कहता कि मैं मुर्दा हूं। मैं अपने लक्ष्य के लिए तुम लोगों से ज़्यादा सावधान हूं। मैं जब सारा राज़ जान गया हूं तब तुम मुझे पागल कहते हो। ये तुम्हारे पुरजोश बेताब कहकहे ज़िन्दगी में ही मौत के प्रतीक हैं। मौत का अट्टहास शायद तुम नहीं

जानते। वह इससे कहीं अधिक भयंकर होता है। तुम्हारी ज़िन्दगी इन्हीं अट्टहासों को लेकर मार डालेगी। और अगर तुम मौत से ज़िन्दगी चाहते हो तो मेरी तरह जीवन जियो।"

इन्हीं शब्दों को सुनकर पहले वह राजकुमारी की ओर देखते हुए ठहाका मारकर हंसा था लेकिन आज एक एक शब्द हथौड़े के समान हृदय पर चोट कर रहा है। अपने खोखले जीवन का अनुभव करते हुए वेदना हो रही है। चेतना जो सारी ज़िन्दगी सोती रही आज अलसाये नयनों के साथ जाग रही है। यही कारण है कि उसे अपनी मौत पर दुःख नहीं हो रहा, अपनी जिन्दगी पर पश्चाताप हो रहा है। लेकिन यह सत्य है कि मौत से पूर्व की यह चेतना क्षणिक है। बुझते हुए सूरज के समान अतीत जीवन पर क्षीण प्रकाश डालती हुई शून्य में विलीन हो जायेगी। तभी मौत का भयंकर अट्टहास इस जर्जरित काया को प्रकम्पित करता हुआ झकझोर देगा।

नारी दया, प्रेम, सहृदयता की पुतली है। पुरुष से वह इन गुणों के पूरकों की कामना करती है। पाषाण के समान कठोर और लौह के समान दृढ़ मनुष्य उसका सम्बल होता है। इसी पुरुषत्व की कामना करती हुई नारी अपना सर्वस्व समर्पित कर देती है। निर्मला ने भी तो उससे यही सम्बल मांगा था, लेकिन उसके भी व्यक्तित्व ने असमर्थता दिखा दी। यही तो उसके जीवन की प्रथम हार थी। उसकी आंख से एक बंद चुपचाप टपक पड़ी। पास ही टिमटिमाती शमां की लौ में से चिनगारी का एक कण नीचे छिटक गया। स्वप्न का झीना आवरण एक दम चमक गया।

जीवन भी एक क्षणिक विनोद है। किसी को उस पर दुःख होता है किसी को झुंझलाहट, किसी को क्रोध आता है किसी को दया, किसी को घृणा होती है तो किसी को प्रेम, किसी को विस्मय होता है तो किसी को हंसी। लेकिन क्षण के अवसान पर दुःख रहता है, न मोह, न क्रोध, न घृणा और न हंसी का कलरव। सब कुछ शान्त हो जाता है उसी प्रकार जैसे कोई पक्षी अभी डाल पर बैठा चहचहा रहा हो और उसके उड़ जाने के

बाद शान्त वातावरण हो जाये। जन्म वास्तव में स्वप्न की स्थिति है और मृत्यु नींद टूटने की। आज उसे अनुभव हुआ कि उसने अपने जीवन से प्रेम नहीं किया। समय को व्यर्थ गंवाया क्योंकि जीवन की लड़ी समय की कलियों के गूंथने से बनती है। उसका सारा जीवन भूल, संघर्ष और पश्चाताप के त्रिशूलों पर गिर कर घायल होता रहा। जीवन के उपवन में पुष्प को प्राप्त करने के लिए वह आगे बढ़ा भी लेकिन अपने दामन से ऐसा उलझाया कि मधु प्राप्त न कर सका।

"लाला अब तो शादी होनी चाहिए।"

"किस की ?"

"तुम दोनों की। ठीक है न ?"

उसने करवट बदली और एक लम्बी सी आह उसके मुख से निकल गई। आह जीवन का संकोच कितना दुखान्त है। पूरी एक रात उसे मिल जाती जिसमें वह रंगमंच पर अपनी ज़िन्दगी के एकांकी को दिखा पाता। काश ! कोई साथी होता जिसे सिसक-सिसक कर अपनी छोटी-सी कहानी सुनाकर सुख से सो जाता। इतनी नीरवता और हृदय में भरा हुआ घोर अन्धकार ! लेकिन शमा की रोशनी कांपने क्यों लगी ? सम्भवतः शून्यों से निकले हुए झंझावात के कारण। ओह ! स्नेह के अभाव में शमा कब तक इसका सामना कर सकेगी।

देखते ही देखते शमा की रोशनी एक साथ बढ़ गई जिसमें कुछ उजले और कुछ धुंधले साये रहस्यात्मक रूप में विचरने लगे। न जाने किसने निर्वाणोन्मुख दीपक में तेज़ भर दिया। उसका मस्तक स्वतः आदर के साथ झुक गया—अपनी ममतामयी मां और पिता के चरणों में। उसकी आत्मा ने उठकर स्वर्गीय मां और पिता से मिलकर मानो सन्तोष पा लिया हो। लेकिन यह क्या ? चिराग की रोशनी कम क्यों हो रही है ? धुंधले प्रकाश में उसके धीर वीर पिता की आंखों से ये कैसे आंसू बहने लगे। ओह प्रकाश भैय्या भी रो रहे हैं। घर में सभी रो रहे हैं। वह भी रोने लगा। बांसों की छोटी-सी ठठरी भी बन गई और बहुत-से व्यक्ति लाल चादर से

ढंककर मां के विमान को शमशान की ओर ले चले। जहां चट्चट् करती चिताओं के चारों ओर प्रेतात्माएँ अट्टहास करती हैं, जहां शिशु की ममता बहिन की राखी, भाई का स्नेह और पिता का प्रेम सब कुछ अकिंचन होकर सिसक उठता है। जहां मिट्टी की चादर को जीवन भर प्रेम से ओढ़ने के बाद जला दिया जाता है। शमशान की भयंकर नीरवता में चिता सुलगती है, उद्दीप्त होती है और फिर बुझ जाती है चिता के प्रकाश में शमशान में हर एक व्यक्ति अपने जीवन के "कुछ उजले और कुछ धुंधले साये" घूमते हुए महसूस करता है। चिता के बुझ जाने पर शेष रह जाती है जीवन की वास्तविक निशानी—मुट्ठी भर धूल।

———

ये कंगूरे

अल्हड़ता आती है तो शोर मचाती हुई। यौवन एक ऐसा उन्माद है जिसमें बिना मदिरा-पान के भी निरन्तर मादकता छायी रहती है। यह एक ऐसा बुखार है जिसमें किया गया प्रलाप बड़ा मधुर होता है। मनुष्य भूला-भूला रहकर भी बहुत सी भूलें करता है। फिर भी उसे उनका अनुभव नहीं होता। पढ़ने के लिए वह पास के कस्बे में साइकिल पर चढ़कर जाता था, लेकिन पूरे रास्ते मस्ती में गाना गाते हुए या गुन-गुनाते हुए। पगडंडी गांव के ज़मींदार ठाकुर फतहसिंह के बाग के करीब से होकर गुज़रती थी।

ठाकुर साहब के इस बाग की रौनक आजकल देखने योग्य थी क्योंकि देवनगर के महाराज इसी बाग वाली कोठी में मेहमान बनकर ठहरे हुए थे। यहां पर रोज़ शानदार दरबार लगता था। चतुर्दिक शिविर तने हुए थे। सबके बाद पचास सिपाहियों के छोटे-छोटे खेमे थे। महाराज के कुत्तों के लिए मखमली गद्दे, पलंग और मेवे-मिठाइयों की कहानी तो विराजपुर के प्रत्येक ग्रामीण व्यक्ति के मुख पर थी। प्राय: चर्चाएँ हुआ करतीं कि महाराजा अमुक बन में हाथी पर बैठकर शिकार खेलने गये हैं। दान-वीरता की चर्चाएँ हुआ करतीं। फलां व्यक्ति को प्रसन्न होकर इतनी जमीन दे दी। इतने रुपये दान किये। बहुत-सी विधवाओं को कम्बल बांटे बहुत-से विद्यार्थियों को वज़ीफे अदा किये। अलावों के पास आग तापते हुए ग्रामीण महाराज की प्रशंसा और यश के गीत गाते रहते।

हां, सदैव की तरह वह आज भी कोठी के उत्तरी भाग वाले बाग के निकट से गाना गाता हुआ गुज़र रहा था। उस समय कोठी और शिविरों में शांति थी। महाराज शिकार खेलने गये हुए थे। वह इसीलिए साइकिल पर बैठा मस्ती में गाता जा रहा था कि अचानक कड़ी मिट्टी का ढ़ेला उसके सिर में आ लगा। निकट ही बाग में खिल-खिलाहट की ध्वनि सुनाई दी जो मधुर होते हुए भी कड़वी लगी। सिर चकरा गया और वह वहीं धड़ाम से गिर पड़ा। होश आया तो देखा कि बाग के माली के साथ चार लड़कियों से घिरा हुआ चारपाई पर पड़ा था। एक क्षण को अनुभव हुआ मानो इन चार परियों के द्वारा उड़न-खटौले पर उड़ कर नन्दन वन में आ गया हो।

"राजीव! तुम्हें बहुत चोट आई होगी। मेरी छोटी बहन चपला ने शरारत में ढ़ेला फेंक दिया था।"

वह मौन रहा।

"क्यों तबियत कैसी है"

"ठीक हूँ!" उसने बड़े साहस के साथ कहा—"लेकिन आप मेरा नाम कैसे जानती हैं?"

चपला जो अभी तक शान्त खड़ी थी, राजीव की नकल करती हुई बोली–"आप मेरा नाम कैसे जानती हैं।" "इतने बड़े बहादुर और रुस्तमे हिन्द को भला कौन नहीं जानता। वैसे महाशय का नाम भी चेहरे पर लिखा हुआ है...रे अजीब।"

"खामोश! चपला। क्या बक रही हो?" बहन ने डांटा।

"आई एम सॉरी दीदी। मेरा मतलब...मेरा मतलब था कि आपका नाम पुस्तक पर सैकड़ों जगह लिखा हुआ है। बेचारे को चिन्ता रहती होगी कि कहीं अपना नाम ही न भूल जाये।" पुस्तक को राजीव के सामने बढ़ाकर कान पकड़ते हुए चपला ने उत्तर दिया।

पुस्तक पर राजीव की दृष्टि गई। वाकई उसने हर पृष्ठ पर अपना नाम लिख छोड़ा था। राजीव की इस चेष्टा पर सभी को हंसी आ गई।

राजीव झेंप महसूस करने लगा। उसने छुपकर सभी लड़कियों पर एक सशंकित दृष्टि डाली। चपला की आंखों से जैसे ही उसकी आंखें मिलीं वैसे ही उसने मुंह बिचका दिया और शरारत भरे शब्दों में अपनी दीदी से कहने लगी—

"दीदी, ये इतने बड़े होकर दसवीं जमात में ही पढ़ते हैं। शायद अब तक अपने नाम की माला जपते रहे होंगे।" दीदी के अतिरिक्त सभी लड़कियाँ खिलखिलाकर एक बार फिर हंस पड़ीं। दीदी ने चपला को आंखों से डांटा।

राजीव की परेशानी हर मिनट बढ़ती जा रही थी। जवानी जब अपने मेज़मान के हृदय रूपी महल में प्रवेश करती है तब उसकी गति में झिझक और शर्म प्रतिबन्ध बन जाती है। जब व्यक्ति अपने व्यवहार पर संकोच करता है तब प्रेम की छेड़-छाड़ हृदय में गुदगुदी उत्पन्न करती है। यह गुदगुदी जब ज़्यादा होती है तो वह परेशान हो जाता है। इससे पहले वह कभी पढ़ी-लिखी लड़कियों के सम्पर्क में नहीं आया था। दूसरे यह लड़कियाँ राजकीय परिवार की थीं। उनके वैभवपूर्ण जीवन से चमत्कृत होना स्वाभाविक था। उसने अनुभव किया कि हृदय की धड़कनें अधिकार से बाहर होती जा रही हैं। उसने अपना हाथ सीने पर रख लिया जिससे परेशानी प्रकट न हो सके। उसे क्या पता था कि उसके इस व्यवहार का भी सूक्ष्म निरीक्षण हो रहा था।

चपला ने तुरन्त माली को डांटते हुए कहा—

"माली ! देखते नहीं हो ढ़ेला सिर से टूटकर दिल पर भी आ लगा है। उसकी भी मालिश कर दो।"

सभी को ज़ोर की हंसी आयी। इसी हंसी के उड़ते गुब्बारों के बीच राजीव ने हतप्रभ होकर चपला की ओर देखा जो अभी तक मुस्कराये जा रही थी। लेकिन जैसे ही राजीव की एक विशेष नज़र घबरा कर चपला की बड़ी-बड़ी आंखों के दायरे में बन्द हो गई वैसे ही वह गम्भीर-सी नज़र आने लगी। चारपाई से उठकर राजीव ने कांपते हाथों से साई-

किल उठाई और बिना कुछ कहे ही गांव को चल दिया। चपला बहुत दूर तक अपनी दृष्टि द्वारा उसका पीछा करती रही। अन्त में जब वह नज़र से ओझल हो गया तब निराश होकर उसकी दृष्टि उधर से लौट आई। दृष्टि-यान पर चढ़कर उसकी चेतना भी बहुत दूर तक चली गई थी। उसके प्रत्यावर्तन पर उसे सुख न मिला।

राजीव के पिता नरेन्द्र तीन सौ बीघे के काश्तकार थे। गांव के ज़मींदार ठाकुर फतहसिंह से कई पीढ़ी से चली आई शत्रुता अब तक विरासत के रूप में उन्हें प्राप्त थी। नरेन्द्र कानूनी कार्यवाही में सदैव सचेत रहा करते। कोई ऐसा अवसर न देते जिससे कि ठाकुर फतहसिंह को बहाना मिलता। स्वयं रक्षा के लिए नरेन्द्र अपने पास दुनाली बन्दूक सदैव रखते। ठाकुर साहब के अत्याचार के कारण साधारण ग्रामीण उनसे दिल ही दिल में असन्तुष्ट थे। ठाकुर साहब के पूर्वजों ने जो अत्याचार के भीषण कांड रचे थे, वे किसी यथार्थवादी साहित्य के द्वारा तो चित्रित नहीं मिलते लेकिन जनश्रुतियों के द्वारा कण्ठस्थ अवश्य हैं। उनका मूल पाठ वेदों ऋचाओं के समान परम्परा से अब भी याद किया जाता है। लेकिन आज विद्रोह की भावनाओं के साथ दुहराया जाता है।

यद्यपि ठाकुर साहब की गढ़ी के चारों ओर की खाई पट चुकी है। जिसके विषय में कहा जाता है कि यह खाई २० हाथ चौड़ी और तीस हांथ गहरी थी। ठाकुर साहब के परदादा ठाकुर सुमेरू सिंह अपने घोड़े पवन-पछाड़ पर बैठ कर खाई को पार किया करते थे। घोड़ा एक ही छलांग में खाई को पार कर जाता था। गढ़ी के चार बुर्ज हैं। लोहे का फाटक है जो कभी बंद नहीं होता। फाटक में घुसते ही दोनों ओर घुड़सालैं बनी हुई हैं। जिन में अब घोड़े तो नहीं रहते उनकी जगह पर कुछ कहार, चमार, धोबी भंगी आदि काम वालों की गृहस्थियां बसी हुई हैं। उसके बाद बारहदरी है जो गांव के एक मील दूर से दिखाई देती है। यहां ठाकुर साहब का

दरबार लगा करता है। पास ही खड़ा हुआ पीपल का वृक्ष बड़ा भयानक मालूम होता है क्योंकि इससे सम्बन्धित घटनायें बड़ी भयानक हैं। जिन्हें सुनकर छोटे-छोटे शिशुओं को कंपकंपी होने लगती है। न जाने कितने निरपराध व्यक्तियों को जूतों लाठियों और कोड़ों से अधमरा बनाया गया होगा। पीपल के पत्ते खड़खड़ाते हैं तो ऐसा अनुभव होता है जैसे ठाकुर साहब के पूर्वजों की प्रेत आत्माएं अट्टहास कर रही हों। रंगमहल की केवल दीवारें खड़ी दिखाई देती हैं। सुनते हैं कि देवनगर के वर्तमान महाराजा के पितामह ने गढ़ी पर आक्रमण किया था। तोप के गोलों से रंगमहल की छतें उड़ गई थीं। तभी से यह खड़ी दीवारें उसी आक्रमण की कहानी मौन रूप से दुहराती रहती हैं। रात में जब चमगादड़ें चींचीं की भयानक आवाजें करती हैं तो ऐसा आभास होता है जैसे रानियां चहक रही हों। एक ज्योतिषी ने इसी रंगमहल के नीचे किसी तहखाने में अपार धन-राशि बताई है और यह भी बताया है कि उस धन-राशि का प्रहरी एक अजगर है जो बिना ज़मीदार परिवार के सदस्य की भेंट लिए हुए खज़ाने को नहीं लेने देगा।

ठाकुर साहब आज भी कभी हाथी या घोड़े पर बैठकर निकला करते तो किसी का दुस्साहस न होता कि चारपाई या फर्श पर बैठा रहता। केवल नरेन्द्र कभी भी चारपाई से न उठे। इस व्यवहार को देखकर ठाकुर साहब के सीने पर सांप लेटा करते। लेकिन कुछ कर न पाते। ठाकुर साहब को मालूम था कि नरेन्द्र का गांव वालों पर बड़ा प्रभाव है और पढ़े-लिखे सभी लोग उसके मित्र हैं।

एक दिन ठाकुर साहब ने नरेन्द्र के लिए मोर्चा बना लिया। अपने पांच नौकरों और पांच महतरों को लेकर खेतों में छुपा दिया गया। नरेन्द्र अपते भतीजे प्रकाश के साथ अपने खेतों पर टहलने गए हुए थे उनके साथ बन्दूक न थी। इसीलिए ठाकुर साहब को मौका हाथ लगा।

खेतों की दूसरी ओर एक नाला था। उसका बांध बनाया गया था जिससे नरेन्द्र तथा अन्य व्यक्तियों की फसल सैलाब से बच सके। बातों के

बीच में ही नरेन्द्र ने देखा कि पानी एक जगह बांध तोड़ कर बड़ी तेज़ी के साथ बहा चला आ रहा है। उन्होंने देखा कि एक महतर बांध तोड़ रहा है। प्रकाश ने उससे मना किया लेकिन महतर ने नहीं सुना। प्रकाश ने फटकारा, उस पर कोई प्रभाव न पड़ा। प्रकाश ने क्रोध में महतर को नाले में धकेलते हुए उसके भाले को छीन लिया। इसी समय खेतों में छिपे सभी लोग निकल पड़े। नरेन्द्र ने गांव के लोगों को आवाज़ लगाई। लोग लाठियां लेकर दौड़े। दोनों गुटों में लड़ाई होने लगी। इसी लड़ाई के बीच प्रकाश के भाले से एक व्यक्ति धराशायी हुआ। उसकी आतें निकल पड़ीं। उसकी चीत्कार सुनकर विरोधी दल भाग खड़ा हुआ।

शाम को जब राजीव पढ़कर घर लौटा तो अपनी चौपाल पर गांव वालों का जमघट देखकर स्तम्भित रह गया। एक तरफ एक लाश और दूसरी तरफ खून से लथपथ उसके पिता का घायल शरीर। गांव के लोग सन्नाटे में गुपचुप बातें कर रहे थे। कुछ स्त्रियां रो रही थीं। पिता के घायल शरीर को देखकर राजीव भी अपनी छोटी बहन के साथ ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। नरेन्द्र अभी तक बेहोश पड़े हुए थे। प्रकाश का सर फूट गया था। बड़ा मनहूस दृश्य था। दोनों पक्ष के लोगों की आंखों में आंसू भरे हुए थे।

कुछ दिनों के पश्चात् एक दुर्घटना घटी। एम० एल० ए० के चुनाव में ठाकुर फतहसिंह उम्मीदवार के रूप में खड़े हुए और दूसरी ओर उनके विरोध में नरेन्द्र के मित्र सुरेशचन्द्र सक्सेना वकील खड़े हुए। चुनाव में वकील साहब सफल हुए। ठाकुर साहब ने चोट खाये सर्प के समान अपना फन उठाया। वकील साहब को कुछ मालूम न था। करीब के कस्बे से लौट कर आ रहे थे। खेतों में से रास्ता गुजरता था। उन्हें कुछ आहट मालूम हुई। उन्होंने घोड़ा रोका जिधर से खेतों में सरसराहट हुई, वकील साहब अन्धेरे में उधर देख ही रहे थे कि पीछे से किसी ने लाठी का प्रहार किया। रास्ते से दूर अरहर के खेत में उनको घसीटा गया। कुल्हाड़े से उनके टुकड़े किये गए। सुबह उनकी लाश मिली। तब से विराजपुर में दोनों

दल और भी सतर्क रहने लगे। मुकदमे पर मुकदमे लड़े जाने लगे। लाठी तलवार और बन्दूक चलाने की शिक्षा नियमित रूप से दी जाने लगी।

सावन की काली घटायें। आसमान पर छोटे-छोटे बादल हवा के साथ दौड़ लगाते। शीतल फुहारें जब पड़ती हैं तो दिल में प्यार की हूकें उठती हैं। गांव की फिज़ा ही बदल जाती है। आसमान की इन्द्र धनुषि छटा युवतियों की सतरंगी चुनरियों से प्रतिस्पर्धा करती दिखाई देती है। सारा वातावरण सावन के गीतों से गूंजने लगता है। झूले पड़ते हैं और आसमान में पैंगें बढ़ाई जाती हैं। हृदय पक्षियों की उड़ानों का मज़ा लेता है। राजीव की छोटी बहन रीता झूला झूलने का हठ करने लगी।

"भैय्या नीम पर झूला डाल दो। गांव में सभी लड़कियां अपने-अपने भैय्या के गीत गा रही हैं। मैं भी अपनी सखियों के साथ तुम्हारे लिए गीत गाऊंगी।"

मेरे गीत या उस काने और लंगड़े दुल्हा के। प्रकाश भैय्या तेरे लिए वर देख करके आए हैं। भूरी बिल्ली, म्याऊं, म्याऊं,।

मैं रूठ जाऊंगी। कभी नहीं बोलूंगी तुम से।

राजीव की नज़रों के सामने रीता का बचपन घूम गया। वह रीता को हमेशा से इसी तरह चिढ़ाता आया था। बड़े भाई होने के नाते कभी-कभी रीता को मार बैठता था। लेकिन जबसे उसने होश सम्भाला अपनी बहन को उसने इतना प्यार किया कि रीता अपनी फरमाइशें सिर्फ भैय्या से ही करती, पिता से नहीं। राजीव कस्बे से अक्सर कुछ न कुछ सौगात अपनी रीता के लिए लाया करता। रीता भी अपने भैय्या की प्रतीक्षा किया करती। रीता सातवीं जमात में थी। दोनों की उम्र में सिर्फ तीन वर्ष का अन्तर था। अब तक रीता की चार पांच सहेलियां आ गई थीं। उन्होंने 'राजीव भैय्या', 'राजीव भैय्या' का शोर मचा दिया। राजीव इन चुडैलों से घिरा खड़ा था। रीता की ओर देखते हुए राजीव ने कहा—

चालाक लोमड़ी उठो चलो झूला डालें। लेकिन एक शर्त पर।

सबने कहा—क्या ?

राजीव ने कहा—सभी को आज एक-एक चूहे के बदले दो-दो मैंढ़क खाने पड़ेंगे।

लड़कियों ने हंसते हुई कहा—मंजूर...मंजूर। और राजीव भैय्या की जय, राजीव भैय्या की जय, करती हुई चल दीं।

इस प्रकार विराजपुर में सावन का पूरा महीना खुशी के साथ गुजरा। युवक अखाड़े में जाते—कुश्ती लड़ते मुग्दर घुमाते ऊंची कूद और लम्बी कूद पैंतरे कूदते। प्रौढ़ आल्हखंड गाते। ढोलक, मंजीरे, खंजड़ी और सारंगी की ध्वनि के साथ रातें दमकने लगतीं। चांदनी रातों में जुते हुए खेतों में कबड्डियों के मैदान हुआ करते। यहां मर्दानगी का पूरा-पूरा जोश दिखाई देता।

सावन के अन्त में बहनों ने गांव के तालाब पर घूघें सिराये और रक्षा-बन्धन का पवित्र त्यौहार मनाया। रीता ने अपनी सखियों के साथ राजीव भैय्या की कलाई में राखी बांधी। इसी प्रकार दिवाली आई, खुशियों के चिराग जलाये गये। होली आई उल्लास लेकर। लोग मादकता से झूम गले से गले मिले। बसंत मंजरी की सुगन्ध बिखेरता चला आया जीवन को मधुवन बनाकर एक टीस भर कर छोड़ गया। प्रकृति के सभी कार्य स्वभाविक रूप में होते रहे। कहीं कोई बाधा नहीं, कहीं तार भंग नहीं। शिशु कुमार होते गए, कुमार तरुण बनते गए, तरुण प्रौढ़ होते गए। प्रौढ़ सर पर मौत के सफेद फरिशतों को देखकर वृद्धावस्था में सहमने लगे। पूरे ग्रामीण जीवन में सुख-दुख का चक्र भी अपनी तीव्र गति से परिवर्तित होता रहा। विराजपुर अपने खुशहाल जीवन के लिए अन्य ग्रामों के सामने आकर्षण-केन्द्र बना हुआ था, नियति के इस चक्र पर चढ़कर सिसकने लगा। फसल पर टिड्डियों का दैवी प्रकोप फिर महावृष्टि और उसके बावजूद लूट मार।

उसके बाद एक भयंकर रात। सभी तरफ घोर सन्नाटा। अन्धेरे की

चादर में लिपटा विराजपुर। हवा धीरे-धीरे तीव्रतर और उसके बाद तीव्रतम होती गई। दो बजे के समय जाड़े की रात ने हवा का यह भयंकर रूप अनायास ही राजीव को किसी अपशकुन का संकेत कर रहा था। राजीव ने विस्तर से उठ कर ऊपर की मंजिल वाले कमरे की खिड़की में से झांका। आसमान के एकान्त में असंख्य तारे चमक रहे थे। चारों तरफ का दृश्य बड़ा डरावना-सा लगा। पीछे के खेतों की मेडों पर उगे हुए झाऊ के वृक्ष सन् सन् की भयंकर आवाज़ से कुछ फुस फुसाहट-सी कर रहे थे। सुनसान में सूखी पत्तियों की रगड़ बड़ी मनहूस ध्वनि पैदा कर रही थी। कुत्ता ऊंचे स्वर से रोने लगा। दूर किसी खेत में कोई एक गीदड़ हुआ हुआ करने लगा। फिर तो उसके स्वर में स्वर मिलाकर बहुत-से गीदड़ों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। उसके एक मिनट बाद बिल्कुल नीरवता। राजीव कुछ देर तक दृष्टि जमाए हुए सारे गांव को देखता रहा। उसने देखा कि ठाकुर फतहसिंह की गढ़ी के उत्तर वाले छोर पर किसी कमरे में अब भी लालटेन टिमटिमा रही थी। किसी ने उस लालटेन को उठाया और बुझा दिया।

राजीव ने खिड़की बन्द की और फिर सोने का उपक्रम करने लगा। उसे ६ वर्ष पूर्व की एक ऐसी ही रात याद हो आई जब वह केवल दस वर्ष का बालक था। बचपन में उसे भूत-प्रेतों की कहानियां बड़ी दिलचस्प लगतीं। वह अलावों पर बैठे ग्रामीण व्यक्तियों के मुख से ऐसी रोमांच कहानियों को सुना करता या। कहानी कहने वाला इस तरह कहता और विश्वास दिलाता कि उसके व्यक्तिगत जीवन से ही उस कथा का सम्बन्ध है। कभी अमुक शमशान में खड़े पीपल के वृक्ष पर किसी चुड़ैल का निवास, कभी किसी कब्रिस्तान के इमली वाले पेड़ पर भूतों को बैठे हुए देखना। राजीव बिलकुल ऐसी ही रात में भूत-प्रेत से साक्षात्कार करने निकल पड़ा था। लेकिन बिस्तर से उठते ही रीता जाग गई थी। रीता और राजीव दोनों रात को भूतों की कथा पर बातें करते रहे थे। अतः रीता कोई दुःस्वप्न से चौंक कर जाग गई थी। राजीव ने उसे प्यार करते

हुए बहला कर सुला दिया और फिर वह अकेला कब्रिस्तान चल पड़ा था। कब्रिस्तान के पास ही खलिहान पड़े हुए थे जहां सभी किसान एक साथ सोते थे। राजीव घोर सन्नाटे में सफेद कपड़े पहने हुए इमली के पेड़ के नीचे एक चौड़ी कब्र पर बैठ गया। रात गहरा रही थी, अतः बहुत देर चुडैलों का इन्तजार करते-करते नींद आ गई। वह कब्र पर करीब एक घंटा सो पाया था कि गीदड़ों के बोलने से चौंककर जाग गया। वह जैसे ही खड़ा हुआ दूर खलिहान वालों ने उसे देखा। राजीव ने किसी भूत-प्रेत के दर्शन न किए अतः वह शमशान की ओर चल पड़ा। शमशान वहां से करीब आधा मील दूर था। रास्ते में आम के पेड़ थे। सोचा, नीची झुकी हुई डाली पर झूला जाए। उसने झूलना शुरू कर दिया। लाहौरी बनिया का घर वहां से थोड़ी दूर पर था। उसने इस भूत को आम के पेड़ पर चढ़ते हुए देखा। उसके रौंगटे खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद वह वहां से उठा और श्मशान की चहार दीवारी में घुस गया। लाहौरी बनिया का भ्रम विश्वास में बदल गया। उसकी घिघ्घी बंध गई। भूत, भूत कहते हुए बेहोश हो गया। मुहल्ले के लोग जमा हो गए। और उसी दिशा की ओर देखने लगे राजीव ने एक जलती हुई चिता को देखा। वह चौंका चिता के पास वाले पेड़ पर उल्लू हूं हूं कर रहा था। राजीव चिता के चारों ओर घूमता रहा था और परिक्रमा करने के बाद जैसे ही लौट रहा था, गांव में कुहराम मचा हुआ सुना। लोग हाथों में मशालें जलाए हुए हाथ में गंड़ासे, कुल्हाड़ियां लिए हुए चले आ रहे थे। राजीव को कुछ भय लगा। वह गेहूं के खेतों में हो कर दौड़ा दूसरे रास्ते से घर भाग आया। गांव के लोग गेहूं के खेत पर खड़े पीपल के नीचे रूक गए और भूत को देखने लगे। यह खोज पीपल के पेड़ पर सुबह तक होती रही। राजीव ने गांव की सुबह अलाव तापते हुए गामीण लोगों के मुख से सुना और यह भी सुना कि लाहौरी बनिया को बड़े जोर से बुखार आ गया है।

आज राजीव उस घटना को याद करके दिल ही दिल में बहुत हंसा। वह सोचने लगा कि अगर पकड़ लिया जाता तो उसके शरीर को लोग

टुकड़े टुकड़े कर डालते। वह उन्हें चाहे कितना ही विश्वास दिलाता कि मैं भूत नहीं हूं। वे कब मानते क्योंकि उनके कथनानुसार भूत धोखे में डालने के लिए किसी भी आदमी का रूप धारण कर लेते हैं। यही नहीं कभी वे कुत्ता कभी भैंस, कभी गधा, कभी घोड़ा, कभी सुअर और कभी-कभी कोई जंगली जानवर भी बन जाते हैं। आज राजीव के मन में इन अन्धविश्वासों के लिए कोई जगह नहीं।

राजीव इन्हीं विचारों में खोया हुआ था कि सहसा उसे एक भयंकर ध्वनि सुनाई दी। उसने बाहर निकलकर देखा कि पास वाले नीम के वृक्ष पर एक उल्लू बोल रहा था। 'धत्त तेरे की' कहकर वह फिर कमरे में आया और सोने का प्रयत्न करने लगा। लेकिन नींद न आई। इतने में राजीव ने सचमुच किसी मानव की चीख सुनी—ई ई ई ई...। "क्या मरेगा बुढ्ढा अन्दर चल" किसी ने फटकारते हुए कहा। मैं पिशाब करने ...गिड़गिड़ाते हुए रामा माली ने कहा। पेशाब करना है तो अन्दर कर वरना बन्दूक से समझे।"

राजीव ने खिड़की से देखा कि सचमुच किसी आदमी ने बन्दूक की मुठिया रामा माली की पीठ में मार दी। रामा कराहता हुआ मकान के अन्दर घुस गया। बन्दूक वाले आदमी ने बाहर से उसके मकान की कुंडी लगा दी। राजीव को पूरा विश्वास हो गया कि डाकुओं ने उसके घर को घेर लिया है। वह दौड़कर जैसे ही जीने की ओर चला वैसे ही पीछे से किसी ने बन्दूक के हत्थे का प्रहार किया। राजीव और उस डाकू में द्वन्द्व हुआ। राजीव की चीख सुनकर पास वाले मकान से पण्डित चोखेलाल ने छत पर चढ़कर पूछा—"राजीव क्या बात ?" किसी डाकू ने जवाब दिया—"पण्ड़ित साले क्या मौत मण्डला रही है तेरे सर पर !"

पण्डित जी ने परिस्थिति भांप ली। गोली की सनसनाती हुई आवाज़ उनके कान के समीप से गुज़र गई। वे तुरन्त जमीन पर लेट गये और फिर अपने घर में घुस गये। राजीव और उस डाकू में बराबर द्वन्द्व होता रहा। डाकू कोशिश कर रहा था बन्दूक की नली को राजीव के सीने की तरफ

फेरने की इसी छीना झपटी में कई फायर हो गए। अन्त में डाकू के धक्के से राजीव छत की मुंडेर पर से फिसलता हुआ पण्डित चोखेलाल के घर में गिर पड़ा। चोट बहुत होने के कारण वह बेहोश हो गया।

डाकुओं ने जीने के किवाड़ों को काटा। नरेन्द्र ने गोलियां चलाईं। लेकिन उनके एक फायर के जवाब में बारह फायरों का प्रहार। प्रकाश दिल्ली नौकरी के लिए चला गया था। आज उसकी कितनी ज़रूरत थी। राजीव का ऊपर के कमरे में क्या हाल हुआ होगा। इस विचार से वे और भी चिन्तित हो उठे। इसी बीच सदर दरवाजा काट दिया गया। डाकू घर में अन्दर घुस पड़े। नरेन्द्र के एक फायर ने एक डाकू को धराशाई कर दिया। इतने में जीने की ओर से गोली आई और उनकी पीठ में घुसती चली गई। अब तो नरेन्द्र ने पूरी मस्ती से फायर करने शुरू कर दिये। एक डाकू ने धमकी दी—"खबरदार अगर तुमने एक भी गोली चला दी तो तुम्हारी लड़की को जला देंगे। "नरेन्द्र ने तुरन्त गोली दागना बन्द कर दिया। लेकिन रीता की चीख सुनकर नरेन्द्र ने फिर फायर करना शुरू कर दिया। गरजते हुए डाकू ने कहा—"नहीं मानता है तो लड़की पर मिट्टी का तेल छिड़कर आग लगा दो।" उधर से आवाज़ आयी—"इसके लड़के को भी जला दो।" नरेन्द्र हतबुद्ध हो गये। लेकिन जब उन्होंने देखा कि डाकू उनको पकड़ने के लिए आगे बढ़ रहे हैं तो उन्होंने फिर फायर किया लेकिन निशाना खाली गया। दुबारा फायर करने से एक और डाकू धराशायी हुआ इसी बीच नरेन्द्र ने मिट्टी के तेल की दुर्गन्ध उठते हुए महसूस किया। वे अब बेजान होते जा रहे थे। उन्हें रीता की चीख सुनाई दी और उसी समय उनकी बन्दूक खामोश हो गयी। सचमुच उन निर्दयी डाकुओं ने तेल छिड़-कर रीता के वस्त्रों में आग लगा दी थी। बड़ा करुण-क्रन्दन था। नृशं-सता की चरम सीमा। कसाई द्वारा की गयी गो-हत्या बड़ी निर्मम होती हैं लेकिन उससे भी निर्मम हत्या उस त्राहि त्राहि करने वाली बालिका की थी। उसकी दर्द भरी चीख पर राक्षस अट्टहास कर रहे थे। कितनी तड़-पन और जलन हुई होगी उस बेगुनाह मासूम बालिका को। यह बहुत देर

तक छटपटाती रही होगी। तड़प-तड़प कर अन्तिम सांस निकली होगी। कोमल कमल की पंखुड़ी जल कर राख बन गई। किस निर्दयी के हाथों ने उस पर मिट्टी के तेल को छिड़का होगा और आग लगाकर उसकी मासूम निगाहों की वेवसी उसकी तड़पन और छटपटाहट को सहन किया होगा। नहीं, यह काम किसी मानव से नहीं हो सकता। यह दुष्कर्म अवश्य किसी शैतान के हाथों ने किया होगा।

डाकू अपने कुकर्म में सफल हुए। मनचाहा धन लूटा और फिर बड़ी सावधानी के साथ मरे हुए दो डाकुओं को घसीटते हुए वे अंधेरी रात में विलीन हो गये। गांव जो दो मिनट पूर्व मृत प्राय: था कोलाहल से जाग गया। उन्होंने देखा कि घर का सदर दरवाजा दीनता की परिभाषा बना हुआ खुला पड़ा है। आंगन में बालिका का जला हुआ वीभत्स पूर्ण शव पड़ा हुआ है। वह मौन है, न उसमें तड़पन है और न करुण क्रन्दन। वह गांव वालों को उनकी कायरता और हृदय हीनता के लिए मानों भर्त्सना दे रही हो। सभी की आंखों से आंसू बहने लगे। सिंह की भांति अकेले सामना करने वाले नरेन्द्र को उन्होंने देखा। वे अब थक कर अटल निद्रा में लीन थे। उन्हें पुकारा गया, वे बोल न सके। उन्हें हिलाया गया, वे हिल डुल न सके। धीर वीर नरेन्द्र अपनी पुत्री के साथ बहुत दूर चले गये थे जहां से वे अब ग्रामवासियों की आवाज़ भी नहीं सुन सकते थे।

प्रभात मानों शान्त सागर के रूप में स्तब्ध था जिसमें उठने वाली पक्षियों की चहचहाने की तरंगें या तो चली ही नहीं या ग्राम वासियों ने उनकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। फूल खिले अवश्य थे लेकिन उनको देख-कर ऐसा मालूम हो रहा था जैसे ओस के रूप में आंसू ही बह उठेंगे। स्वर्ण रश्मियां बादलों की ओटमें हो गई थीं जैसे मानव की अमानुषिकता को देखकर सहम गई हो और भीषण काण्ड को देखने का ताव नहीं रखतीं।

बसन्त की फिजा में एक दृढ़ वृक्ष काट डाला गया। उसकी सुकुमार कली को जला दिया गया। फूल मुरझा-सा गया था। बसन्त के उत्सव में

यह मनहूस वातावरण कई दिनों तक चलता रहा। प्रकाश दिल्ली से आये। सभी क्रियाएं सम्पन्न की गयीं। जीवन में नियति का चक्र विवश कर देता है—मानव को अपनी उसी स्वाभाविक दैनिक क्रियाओं में प्रवेश करने के लिए। मानव शिथिल कदमों के साथ फिर पूर्ववत् जीवन-पथ पर चल पड़ता है। राजीव के जीवन में भाग्य का यह उच्छृंखल खेल होता रहा। वह मायूस नज़रों से उसे देखता रहा। देखते-देखते अनिच्छा से ही वह भी खेल में शामिल हो गया। यही तो जीवन की विडम्बना है जिस पर किसी का वश नहीं चलता।

"राजीव ! राजीव ! उठो सुबह हो गया।"

राजीव मानो स्वप्न में भी निर्मला की इस मधुर शब्दमयी झंकार की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसने अर्ध जाग्रत अवस्था में ही उत्तर दिया—

"निर्मो, मैं पहले से ही जाग रहा हूं।"

लड़की ने हंसते हुए राजीव के कान में कहा—

"पहले भी नहीं और अब भी नहीं।"

राजीव ने हाथ फैला कर उसे पकड़ना चाहा। वह चपलता के साथ नीचे उतर गई। उसकी पग-ध्वनि बड़ी देर तक कानों में गूंजती रही। राजीव ने आंखें खोलीं और विस्तर पर पड़े हुए गुनगुनाने लगा। उसके बाद बाहों को झटका देकर अंगडाई ली और बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। उसके कन्धे पुष्ट, बाहुएं लम्बी और सुदृढ़ थीं। सुन्दर मांसपेशियों वाले शरीर को रेशमी चादर से ढक लिया। बालों में कन्धा किया जो पीछे की ओर काटने से कन्धों पर आकर विरम गये। शौच आदि से निवृत्त होकर नाश्ता करने और निर्मला की मुस्कान पीने नीचे उतरा।

राजीव के दो वर्ष प्रकाश भैय्या के यहां भाभी की ममता और स्नेह में ऐसे गुज़रे जैसे उनका पुनर्जन्म हो गया हो। विमला भाभी की सरल प्रकृति ने उसको अपने पुत्र की तरह दुलार दिया। उसके अभावमय

जीवन में भैय्या और भाभी का यह स्नेह बहुत बड़ा सम्बल था। विमला की छोटी बहन निर्मला ने भी राजीव पर अपने हृदय का सम्पूर्ण संचित धन न्यौछावर कर दिया। इस तरह राज़ीव का जीवन दिल्ली की चौड़ी सड़कों पर कुलाटें भरता हुआ, किला कुतुबमीनार और मकबरों में प्यार के चिराग जलाता हुआ यमुना की लहरों पर तिरोहित होने लगा।

विमला ने राजीव को उतरते देखकर निर्मला से मेज पर चाय लगाने के लिए कहा। भाभी और देवर में कुछ हास-परिहास हुआ जो नई बात न थी। लेकिन आज के परिहास का रूप बिल्कुल भिन्न था—

"लाला अब तो इसी वर्ष शादी होनी चाहिए।"

"किसकी"

"तुम दोनों की ठीक है न ?"

"नहीं भाभी इससे नहीं, यह तो बड़ा परेशान करेगी मुझे।"

"शरीर कहीं के दिल मैं लड्डू फूट रहे होंगे, ऊपर से इन्कार।"

यह वार्तालाप इतने धीमे शब्दों में हुआ कि दालान में मेज़ लगाती हुई निर्मला ने सुन लिया। राजीव के हृदय की दशा ठीक उस व्यक्ति के समान थी जिसे भूमि के नीचे मनोनीत गुप्त धन मिल गया हो। निर्मला ने चाय मेज़ पर लगा दी लेकिन राजीव को देखकर निर्मला आज नीची दृष्टि किये हुए थी। राजीव ने उसे फिर देखा तो चेहरा पहले पीला हुआ फिर सुर्ख़ी दौड़ी तो दौड़ती चली गई। मुस्कान के स्थान पर निष्पन्द ओष्ठ।

कई दिनों तक राजीव कोलाहल पूर्ण दिल्ली में अकेलेपन का अनुभव करता रहा। उसे न कालिज जाने में अच्छा लगता और न पढ़ने में। वह बी०ए० के प्रथम वर्ष में पढ़ रहा था। निर्मला इन्टरमिडिएट की छात्रा थी। वे प्रायः दोनों ही एकसाथ कालिज जाते और वापस लौट कर आया करते। कई दिनों से निर्मला कालिज नहीं गई। नाश्ते के समय अपनी बड़ी बहन के बार-बार बुलाने पर भी सामने नहीं आती थी। राजीव को उसका यह व्यवहार अपमानजनक लगा करता। उसके लिए वह समय

तो और भी मर्मान्तक प्रतीत हुआ जब निर्मला दूर के सम्बन्धी भाइयों या अपने सहपाठियों से बातें करती, वाद-विवाद करती हंसती और मुसकराती।

एक दिन पूरा घर राजीव के साथ पिक्चर देखने गया। केवल निर्मला नहीं गयी। उसके सिर में अचानक बड़े ज़ोर का दर्द होने लगा। राजीव की सारी पिक्चर इसी उधेड़ बुन में समाप्त हुई कि निर्मला किसी और से···तभी तो सर दर्द का बहाना बनाकर उसके साथ नहीं आयी।

राजीव के एकान्त ने उसे एक ऐसी प्रेरणा दी जो प्रत्येक कवि के व्यक्तित्व का प्राण है। जिसके न होने से काव्य में शक्ति सम्भव नहीं। विरह चाहे दो दिन का हो चाहे जीवन भर का, चाहे एक ही घर की चहार दीवारी में हो चाहे देशान्तरित, दोनों ही स्थितियों में संवेदना को तीव्र करता है। राजीव यद्यपि पहले भी गीत लिखता था लेकिन जो गीत का प्राण कहा जाता है वह केवल अभी स्पन्दित हुआ। उसकी अनायास प्राप्ति पर जो उसने गीत लिखा उसमें वह इतना तन्मय हो गया, ध्यान ही न रहा कि कब उसकी गुनगुनाहट तरन्नुम के पंखों पर उड़कर निष्तब्ध रात्रि के सितारों की झंकार बन गई। बन्द कमरे से निकल कर भाव लहरियां अनवरत रूप से बह रही थीं।

राजीव गीत गाने में इतना आत्मविभोर हो गया कि उसे पता भी न चला कि कब निर्मला आकर उसके पैरों तले बैठ गयी। राजीव कुहनियों के बल उल्टा लेटा हुआ गा रहा था। निर्मला ने जैसे ही उसके पैरों पर सिर रखा वैसे ही वह चौंक गया। उसने यह महसूस किया कि निर्मला की आंखों से निकले हुए आंसू उसके पैरों को भिगो रहे हैं। वह तुरन्त बैठ गया। लेकिन निर्मला उसके पैरों से लिपटी रही।

"यह क्या निर्मो, पैरों को छोड़ दो!"

"नहीं राजीव, यही तो मेरा आश्रय है। मुझे इसी तरह पड़ा रहने दो। मेरे देवता।"

"लेकिन तुम रो क्यों रही हो?"

"राजीव मुझे क्षमा कर दो, मैंने तुम्हें कितना दुखी किया। तुम्हारे गीत के दर्द से मेरी रूह बेचैन हो गई। मेरे प्राण।"

"नहीं निर्मो, तुम्हारे प्यार ने मुझे कवि हृदय दिया है। तुम नहीं जानती, जो आनन्द मुझे मिलता है इस दर्द में। जब तुम नहीं होती हो तो तनहाई में तुम्हें मनाया करता हूं—स्वप्नों में तुम्हें खोजता फिरता हूं और गीतों से तुम्हें पुकार लेता हूं। तुम मेरे गीतों की प्राण हो।" निर्मला का हाथ चूमते हुए राजीव ने कहा।

राजीव के इस स्पर्श को पाकर निर्मला की सांसें बड़ी तेज़ी के साथ चलने लगीं। सारे शरीर में रोमांच हो आया। वह बेसुध ही राजीव की तरफ खिचती चली गई। राजीव के हृदय की भी यही दशा थी। उसने अपने पैरों तले बैठी हुई तरुणी को अपनी शक्तिशाली भुजाओं में भर लिया। रात बेहोश सो रही थी और अन्धेरा मौन था। बेला की मदिर भीनी-भीनी सुगन्ध का एक झोंका खिड़की की तरफ से कमरे में बेरोक टोक घुसा चला आया। सहसा निर्मला आलिगन-पाश तोड़ कर अलग बैठ गयी—

"राजीव इतनी व्यग्रता क्या तुम अपने पर अधिकार नहीं कर सकते ?"

"क्षमा करो निर्मो। मैं भूल ही गया था कि अभी हम लोग कुंवारे हैं। हंसते हुए राजीव ने भोलेपन के लहजे में कहा।"

"अच्छा कान पकड़ कर उट्ठक-बैठक करो, तभी तुम्हें क्षमा मिल सकती है।"

"यह लो हुजूर—"

जैसे ही राजीव यह अविनय करने जा रहा था कि निर्मला चुटकी भरकर जीने की ओर भागी। राजीव ने पीछा किया लेकिन पकड़ न सका।

जब राजीव के गीत की ध्वनि निर्मला ने सुनी, वह बिस्तर से उठ बैठी। लेकिन तभी विमला के खांसने पर उसने सुराही से पानी उंडेला और अनचाहे पानी के गिलास को 'गड़र गड़र' करते हुए गले के नीचे उतार लिया। वह पानी की प्यास से नहीं जागी थी। उसकी प्यास कुछ और थी। अतः दुबारा मन मारकर बिस्तर पर लेट गई। सोने का अभिनय किया। उसने थोड़ी देर बाद देखा कि उसकी छोटी बहन खर्राटे भर रही है। वह धीरे से उठी और जीने पर चढ़ गई। विमला ने निर्मला का बिस्तर सुना देखा तो वह चिन्तित हुई। वह भी जीने तक गयी और बाहर से ही उन दोनों की बातें सुन कर के लौट आई। वह न जानती थी कि इनका यह प्रेम इस हद तक है। वह विवाह से पूर्व प्रेम का अंकुर होना तो अच्छी बात समझती थी लेकिन आज उसकी कल्पना ने जो स्वच्छन्द प्रेम का चित्र मन में खींचा उससे वह बहुत भयभीत हुई।

अनेक प्रकार के विचार उसके मन में आने लगे। उसने इसका उत्तरदायी अपने को माना। यदि वह निर्मला पर अंकुश रखती तो राजीव का दुस्साहस न होता। लेकिन इसमें राजीव का क्या दोष है? अपना ही पैसा खोटा न होता तो यह दशा क्यों होती? लेकिन निर्मला पर उसने पूरा विश्वास किया था। यही उसकी भूल थी। अन्त में उसने अपने को ही धिक्कारा। रात को तो कुछ कहना उचित नहीं समझा लेकिन प्रातः होते ही निर्मला को उसने खूब डांटा फटकारा। अतः तभी से निर्मला का ऊपर के कमरे में जाना बन्द हो गया। यहां तक कि निर्मला चाय और खाने के समय भी बहुत कम सामने आती। हां लुक छुप कर राजीव को ज़रूर देख लेती।

राजीव की समझ में नहीं आ रहा था कि निर्मला उससे दूर-दूर क्यों रहती है। उसकी दृष्टि से या तो निर्मल के व्यक्तित्व में मन का असन्तुलन है या कोई ऐसा राज है जिसे वह प्रयत्न करने पर भी नहीं समझ सकता। नारी-चरित्र के रहस्य को जब देवता तक नहीं समझ सकते तो वह तो केवल मानव ही है। दूसरे उसका कवि हृदय बड़ा कमजोर और नाजुक

था। वह किसी बात का अनुभव करता तो बड़ी तीव्र संवेदना के साथ। वह किसी को घृणा करता है तो बड़ी तीव्रता के साथ वह प्यार चाहता है तो पूर्ण रूप से प्यार करता भी है। चाहे उसके जीवन में खुशियों के स्थान अवसाद के आंसूओं के बादल घुमड़ आए तुफान क्यों न चले, बिजलियां क्यों न टूट गिरें। वह प्रेम में साहसिकता का कायल है। वह निर्मला के कहने से समुद्र पार कर सकता है, पहाड़ से कूद सकता है और आसमान के तारे उसके अंचल में भर सकता है। वह कौनसा असम्भव से असम्भव कार्य नहीं कर सकता। लेकिन निर्मला का एक दम मौन हो जाना, सामने न आना और अपने दिल की बात न बताना उसे मर्मान्तक प्रतीत होता है, साथ ही उसके हृदय में सन्देह जागता है। राजीव के अनुभव में गम्भीरता कम घनत्व अधिक था।

उसके हृदय की यह दुर्बलता सन्देह का सहारा पाकर उस समय और भी पुष्ट हो गई जब कई बार निर्मला को अपने सहपाठी दिनेश के साथ बातें करते हुए देखा। न जाने क्यों राजीव अपने रोमांस में हद से ज़्यादा स्वार्थी था। वह निर्मला की मुस्कान और हंसी पर एक मात्र अपना ही अधिकार समझता था। उसका मनोनीत स्वप्न यही था कि निर्मला को संसार के किसी ऐसे रमणीक स्थल में ले जाए जहां सिर्फ वही दो हों और कोई नहीं। हंसते हुए चांद-सितारों के साथ वे एक दूसरे को देखते हुए ही जीवन व्यतीत कर दें।

एक दिन घर के सभी लोग किसी शादी में गए हुए थे। राजीव एक कालेज से चला आया था और अनमना-सा अपने बिस्तर पर लेट गया। उसका शिथिल मन थोड़ी देर में ही निद्रा का सुख लेने लगा। निर्मला अपने कालेज से चार बजे लौट कर आई। उसने उपयुक्त अवसर देखकर राजीव से मिलने का निश्चय किया। ऊपर जाकर देखा कि स्वस्थ तरूण मुख पर एक दिव्य सौन्दर्य जाग रहा है लेकिन राजीव सचमुच सो रहा है। दीवार घड़ी ने पांच वजे की टनटन करना शुरू कर दी। इस आवाज़ से राजीव की निद्रा भंग हो गई। सिरहाने की तरफ से झुकी निर्मला को

खड़ा देखकर उसे अपनी आंखों पर विश्वास न हुआ। उसने पलक बंद कर लिए जैसे मधुर स्वप्न देख रहा हो और पलक खोलकर उसे खो न दे।

निर्मला को बुरा लगा। वह धीरे से नीचे उतर आई। नौकर से चाय ऊपर भिजवा दी। राजीव ने थोड़ी देर बाद आंखें खोलीं। निर्मला वहां न थी। चाय पीने के बाद वह नीचे उतरा और सीधे निर्मला के कमरे में चला गया। उसको अचानक कमरे में घुसते देख निर्मला कुछ घबरा-सी गई। नीची नज़रें किए खड़ी हो गई। राजीव ने कुर्सी पर बैठते हुए उससे चारपाई पर बैठने को कहा लेकिन वह खड़ी रही।

"क्या बात है निर्मो तुम्हारी तबियत तो ठीक है?"

"हां बिल्कुल।"

"तो फिर आज तुम्हें हुआ क्या है।"

"कुछ भी तो नहीं।"

'क्यों मेरा आना तुम्हें अच्छा नहीं लगा। लो मैं लौट जाता हूं।"

"आपको मेरे सर की कसम, कमरे से बाहर हुए तो मैं मर जाऊंगी।

राजीव उठा ही था कि फिर बैठ गया। उसने अब की बार निर्मला का हाथ पकड़ कर उसे चारपाई पर बिठा लिया।

"सचमुच बताओ निर्मो क्या बात है? तुम दुखी क्यों दिखाई दे रही हो?"

"कुछ भी नहीं।"

"फिर भी तो।"

"यही कि तुम्हें अपने कमरे में अकेलापन महसूस होता होगा।

"हां होता तो है लेकिन जब कोई मिलना न चाहे तो क्या किया जाए?

"और जब कोई किसी की सूरत देखकर आंखें बंद कर ले तो···

"किसने आंखें बंद कीं शरीर कहीं की···"

राजीव कुर्सी से उठकर अजीब अदा के साथ उसके सरहाने पीछे खड़ा हो गया। निर्मला के कन्धों पर से अपने हाथ निकालते हुए उसके हाथों को पकड़ लिया। बड़ी देर तक इसी तरह निर्मला के सर की सुगन्ध

लेता रहा। उसका श्वास उस बहार का सिंगार कर रहा था। पश्चाताप और उपालम्ब में उसे बिताना मूर्खता की बात थी, क्योंकि समय उड़ जाने के लिए पक्षी के समान अपनी पँखें खोल रहा था। थोड़ी देर के बाद प्रकाश भैय्या की आवाज़ बाहर गली में सुनाई दी। राजीव अपने कमरे में पहुंच गया। निर्मला रोज की तरह टेबुल-लैम्प जलाए हुए पढ़ने में बड़ी तन्मय दिखाई देने लगी। बिमला दरवाजे में बड़ी खामोशी के साथ घुसी। उसने जब यह देखा कि निर्मला पढ़ने में इतनी तन्मय है कि बहन के दरवाज़े पर खड़े रहने पर भी पता नहीं तो बिमला को अपनी बहन पर फख़्र होने लगा। उसने बड़े प्यार के साथ उसके गाल पर हल्की-सी चपत लगाई और किताब छीन कर टेबुल पर रख दी।

"पगली इतना पढ़ना कोई अच्छा होता है। जब देखो तो पढ़ना, पढ़ना और कुछ नहीं। न सहेलियों से मिलना, न सैर को जाना, न खेलना। इस तरह तुम्हारा सारा स्वास्थ्य गिर जाएगा।" बिमला ने उसे गले से लगाते हुए कहा।

प्यार पाकर निर्मला की आंखों से आंसू बहने लगे। गला रूंध गया। बिमला ने जब देखा तो उसे अपने कठोर व्यवहार पर पश्चाताप होने लगा। उसने अपनी छोटी बहन पर ममता बरसाते हुए कहा—

"मुझे माफकर दे बेबी। मैं तेरे दिल की बात जानती हूं। मुझे विश्वास है कि मेरी बहन किसी तरह गलत रास्ते पर कदम नहीं रख सकती। मुझे अब कभी भी भ्रम नहीं होगा।"

"दीदी, मेरी प्यारी दीदी! मुझे मां के पास भेज दो, मैं वहीं पढ़ूंगी।"

"ऐसा न कहो बेबी, तेरे जाने से मेरा घर सूना हो जाएगा। नासमझ मेरा हरगिज यह मतलब नहीं कि तुम राजीव से ना मिलो। राजीव भी अच्छा लड़का है। और उसी से तुम्हारी शादी कराऊंगी।"

निर्मला ने "दीदी दीदी" कहते हुए अपना मुख शर्म के मारे अपनी बहन के आंचल में छुपा लिया।

उसके बाद बिमला प्रकाश को साथ लेकर ऊपर राजीव का मुआइना करने गई। राजीव इस मुआइने के लिए तब तक सब तैयारी कर चुका था। कमरे में जल्दी जल्दी जगह जगह पर अपने तैय्यार किए हुए नोट्स डाल दिए। बिस्तर पर भी सरहाने किताबें बिछी हुई हैं। दोनों ओर बिस्तर के किताबों का बिछोना। वह डट कर अपनी टेबुल पर झुका हुआ पहले के तैय्यार नोट्स की नकल करने लगा। उसे दो मिनट तक भैय्या और भाभी के आने की खबर ही न लगी। इस अभिनय के बाद उसने सर उठाया और उनको देखकर हड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ। प्रकाश भैय्या ने मुस्कराते हुए उसके कंधे पर बड़े स्नेह के साथ हाथ रखा और पीठ थपथपाई।

"शाबाश राजीव! मुझे विश्वास है कि इस वर्ष तुम अपने कालेज में प्रथम स्थान पाओगे।"

"हां, दादा। ईश्वर ने चाहा तो भाभी का आशीर्वाद मुझे सफलता देगा।"

"लेकिन लाला। हर वक्त नहीं पढ़ना चाहिए। कभी-कभी सैर करने भी जाया करो। निर्मला हमेशा शिकायत करती रहती है कि राजीव अब स्वार्थी हो गए हैं। उसका भी ध्यान रखा करो।" भाभी ने मुस्कराते हुए कहा।

"लेकिन भाभी मुझे सैर में आनन्द नहीं आता। मेरा इम्तहान बहुत करीब है। रही निर्मला की बात तो वह अपनी सहेलियों के साथ सैर करने जा सकती है।"

"तुम नहीं हो, मेरा छोटा भाई लड़कियों की सुहबत से दूर ही रहा है और उसे आम लड़कों की सी आदतें पसन्द नहीं। राजीव हज़ारों में से एक है।" प्रकाश ने चमकती हुई आंखों के साथ बड़े गर्व का अनुभव करते हुए कहा।

बिमला को बड़ी ज़ोर की हंसी आ गई। राजीव मुस्कराने लगा। दोनों पति-पत्नी हंसी के गुब्बारे उड़ाते हुए नीचे उतर आए। राजीव इस मुआइने की सफलता पर मन ही मन हंसता रहा।

कुछ दिनों के बाद ही बी० ए० का इम्तहान हुआ और राजीव सचमुच सर्व प्रथम पास हुआ। खुशियां मनाई गईं। निर्मला को तो जैसे कोई अमूल्य निधि मिल गई हो। इन्हीं दिनों बिमला ने अपनी मां को बुला लिया था। निर्मला ने एक दिन राजीव से कहा—

"तुम्हें मालूम है कि अम्मा यहां क्यों आई हैं ?"

"नहीं। क्या उनके आने का कोई खास कारण है ?"

"हां, लेकिन कुछ इनाम दोगे तो बताऊंगी।"

"अच्छा मन्जूर है।"

"नहीं पहले अपना हाथ दो"

"यह लो।"

निर्मला ने उसके हाथ को पकड़ लिया और अपने हाथ में रखते कहा—"अब समझे ? इसलिए।"

"साफ़-साफ़ कहो न। क्या मतलब है ?"

निर्मला ने बड़ी अदा के साथ अपनी जुल्फ़ को हाथ में लिया और राजीव की तरफ करते हुए कहा—"तुम्हें यह केश कैसे लगते हैं ?"

"बहुत प्यारे। सुन्दर काली घटाओं में जब अपने को छुपा लेता हूं तो स्वर्ग की छटा नज़र आने लगती है और उसकी सुगन्ध से तो बस मदहोश हो जाता हूं।"

"सच कहते हो ?—तुम कवियों का क्या ठिकाना ? कभी कहते हो कि निर्मो परेशान करती है। कभी निर्मो देवी है और कभी चुडैल है।"

"नहीं निर्मो, यह सब तो मज़ाक है।"

"तुम्हारे इन बालों की घटाओं का में हमेशा तक प्यासा रहूंगा। लेकिन बताओ अम्मा क्या चाहती हैं ?"

"इन्हीं केशों से तुम्हें बांधना। समझे ?

दोनों खुशी-खुशी कालिज से घर लौटे। आज हम दोनों को काफी देर हो गई थी। मां, बेटियाँ चिन्तित हो उठी थीं। साथ-२ दोनों को अन्दर आते देख मां को अच्छा न लगा।

दिनेश से मां का कोई दूर का सम्बन्ध था। कई कारणों से मां को दिनेश बड़ा सुशील लड़का दिखाई दिया। वह मां के जाने पर अकसर निर्मला से मिलने जाया करता। निर्मला को मां के इस मनोभाव का ज़रा भी अहसास न हुआ। निर्मला ने एक सहपाठी से अधिक उसे कभी न समझा। हां, मन ही मन अपनी खिचड़ी पकाती रहीं। दोनों लड़कों का तुलनात्मक अध्ययन करती रही। लेकिन उन्हें अपने पहले के विचार में अन्तर नहीं मालूम पड़ा। राजीव को भी मां का रूखा व्यवहार पसन्द नहीं आया।

आज दिनेश बहुत खुश-खुश नज़र आ रहा था। मां से उसने बताया कि चौथे दिन उसका जन्म दिन है। वह उस अवसर पर वह सभी को आमंत्रित करने आया था। उसने साथ ही उस अवसर पर निर्मला से गीत गाने के लिए भी अपनी इच्छा प्रकट की। निर्मला ने स्वीकार नहीं किया। लेकिन मां के द्वारा आग्रह किये जाने पर निर्मला को स्वीकृति देनी पड़ी। इतना ही नहीं बल्कि मां के बार-बार कहने पर उसे दरवाज़े तक अपने सह-पाठी को भेजने जाना पड़ा। इसी बीच राजीव जीने से उतर रहा था कि उसके कानों में मां के शब्द सुनाई दिये। वह ठिठक गया। मां बिमला से कह रही थी—

"बिमला दिनेश कितना सुशील लड़का है। देखने में भी सुन्दर और अच्छी तहज़ीब भी। मेरे ख्याल में बेबी के लिए अच्छा वर है। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"अम्मा, दिनेश को मैं ज़्यादा नहीं जानती लेकिन राजीव जैसा लड़का चिराग हाथ में लेकर खोजने पर भी नहीं मिलेगा।"

"राजीव में वह गुण नहीं जो दिनेश में है। मुझे राजीव की तहज़ीव पसन्द नहीं। वह घमंडी और लापरवाह दिखाई देता है। साथ ही निर्मला का उससे मिलना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है।"

"लेकिन अम्मा आप राजीव को इतना नहीं जानती, जितना मैं जानती हूं।"

"इसी बीच निर्मला और दिनेश लौट आये। मां बेटियां खामोश हो

गईं। दिनेश राजीव को आमंत्रित करना भूल गया था। राजीव ने इन दोनों को साथ आता देखकर और मां के विचार सुनकर अपने कमरे में लौट जाना ही ठीक समझा। दिनेश राजीव के पास गया और उसे विशेष रूप से जन्म दिवस पर आने के लिए आग्रह करने लगा। राजीव की अजीब मनो-दशा थी। जब राजीव को मालूम हुआ कि निर्मला उस अवसर पर गाना भी गायेगी तो उसके दुःख की सीमा न रही। औपचारिक रूप से उसने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। दिनेश से निर्मला को जब यह मालूम हुआ कि राजीव भी जन्म दिन के उत्सव में शामिल होगा तो उसे बड़ी खुशी हुई। कई दिनों तक राजीव का मूड खराब रहा। मां के निमंत्रण के कारण निर्मला भी राजीव से न मिल सकी। दोनों ओर एक अजीब सी घुटन थी। लेकिन विमला की ममता राजीव की ओर अधिक दिखाई देने लगी।

निर्मला कई दिनों से कालेज भी नहीं गयी। यह रहस्य राजीव की समझ में नहीं आया। वह सोचने लगा कि निर्मला इतनी बदल क्यों गई। मां की बात अलग है लेकिन निर्मला को तो अपने निश्चय पर अटल रहना चाहिए। कभी-कभी वह वहां तक सोच बैठता जहां तक सोचते हुए बाद में उसे स्वयं पश्चाताप हुआ करता। निर्मला भी विवश थी। राजीव ने मिलने का कई बार निश्चय किया लेकिन उचित अवसर न मिल सका। कभी-कभी वह छुप कर राजीव को देख लिया करती और उसे दुःखी देखकर तड़प-तड़प कर रह जाती। दो एक बार राजीव ने भी उसे देखा लेकिन बिल्कुल बदला हुआ। चेहरे पर एक दुःख की छाया घुमड़ती हुई अनुभव की। इस तरह दिनेश का जन्म दिन आ गया। राजीव ने खिड़की से झांक कर देखा कि निर्मला आज बहुत खुश नज़र आ रही है। उसे जलन हुई निर्मला को इसलिए खुशी हो रही थी कि आज वह राजीव से जरूर मिलने का अवसर निकाल सकेगी। बातें होंगी और अपनी परिस्थिति से उसे आगाह करेगी। घर की सभी स्त्रियां पहले ही चल दीं।

दिनेश के यहां अधिक विलम्बमयी प्रतीक्षा से ऊब कर निर्मला को पूर्ण निश्चय हो गया कि अब राजीव नहीं आयेगा तो उसने मां से सर दर्द

का बहाना किया। दिनेश को यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ। संगीत के कार्य-क्रम में बाधा पड़ गयी। रंग में भंग हुआ। निर्मला इस कोलाहल पूर्ण वाता-वतण से ऊब कर एकांत चाहने लगी। उसने अनुभव किया कि एक या दो मिनट यहां और रहना उसकी सांस घोंट देगा। वह तुरन्त घर को लौट पड़ी। आज उसने निश्चय कर लिया था कि वह राजीव से खुल कर मिलेगी, चाहे जमाना उसे कुछ भी दण्ड दे।

लेकिन घर पहुंचते ही उसे अपने पंखों को निराशा के घोर अन्धकार में फड़फड़ाना पड़ा। राजीव कहीं जा चुका था। आज उसे अनुभव हुआ कि जीवन में कितना वैमनस्य है। नियति जरूर उसके साथ कोई भयंकर खेल खेल रही है। जिस प्रकार पावसऋतु में कभी-कभी जल के भार से बोझित बादल झुक जाता है, बरस नहीं पाता, वैसे ही उसके हृदय की दशा थी। निर्मला थक कर चारपाई पर गिर पड़ी। वह अपने जीवन के नवीन वातावरण की अधूरी लिखी पुस्तक को दुहराने लगी। राजीव के प्रवेश ने उसके जीवन में महकते हुए क्षणों की सृष्टि की। उसी प्रकार जैसे जल के छींटे किसी कोरे घड़े को सौंदी-सौंदी मादक सुगन्ध से भर देते हैं। हृदय में संस्कारवश अनजान छुपी प्रेम की मादकता के लिए वह चंचल हो उठी थी। उसने अपनी कुंवारी भावनाओं को राजीव पर समर्पित कर दिया था। कैसा अजीब आकर्षण था। कैसी मृग-तृष्णा! उसे इन पंक्तियों में श्रद्धा हो उठी—

जीवन क्या है
मृग मरीचिकाओं का फैला सरस प्रवाह!
हम उसके मधुबन-मरुस्थल में
पीते मधु-विषाद भर आह!

हुंमायूं के मकबरे की एक घटना उसे बड़ी प्यारी लगी थी। जैसे ही सभी लड़कियां और लड़के उसे देखने अन्दर गये तो अपने सेंडल, चप्पलें और जूते बाहर उतार गये। लेकिन जैसे ही बाहर लौटकर आये तो एक भी चप्पल कुमारी नहीं बची। सभी मिस चप्पलें मिसेज़ शू हो गईं। हर

एक चप्पल के साथ एक-एक मर्दाने जूते का ग्रन्थि-बन्धन देख कर सभी को हंसी ग्रा गई। ठहाका मारते हुए सभी लड़कों ने राजीव को इस कौशल की सफलता पर बधाई दी।

निर्मला ने जब ग्रपनी चप्पल से बंधे राजीव के जूते के फीते को खोला तो राजीव ने विनोदपूर्ण स्वर में कहा—"भई इस बन्धन को इतनी जल्दी न खोलो।"

उस समय उसने मुंह बना दिया था, लेकिन वाचाल राजीव का वाक्य ग्रन्दर से कितना मधुर लगा था। उसने हृदय को गुदगुदा कर तन के रोम-रोम को पुलकित कर दिया था। लेकिन क्या राजीव का वह ग्राकर्षण झूठा था? क्या उस विनोद में कोई सत्य नहीं था? उसके हृदय को यह पूरा विश्वास हो गया कि राजीव उससे दूर कहीं चला गया है। इसी उधेड़-बुन में उसे नींद ग्रा गई। चांद बादलों से निकलकर मलिन ग्रौर उदास पृथ्वी पर शानदार रोशनी बिखेरने लगा। क्षुब्ध रात ग्रपने ग्रन्ध-कारपूर्ण मस्तक की शिकनों को मिटाकर मुस्कराने लगी। काले कफन को उतार कर मृदुल रजत वस्त्रों से सुसज्जित होकर चांदनी के मिस खिलखिला पड़ी। स्वप्न की परियां चांद की हर किरन के सहारे स्वर्ग से भूमि पर उतरने लगीं।

रात के ठीक ग्राठ बजे राजीव दिनेश के यहां पहुंचा। दिनेश ने स्वागत किया। राजीव ने सबसे पहले सभी महमानों पर दृष्टि डाली लेकिन कुछ दिखाई न दिया। दिनेश ने बताया कि जैसे ही उसका ग्राना हुग्रा है, सिर दर्द के कारण निर्मला घर लौट गई है। राजीव को यह सुन-कर ग्राश्चर्य हुग्रा। उसके मन में सन्देहात्मक दुःखों का धुंग्रा घुटने लगा। काश! वह इस धुएं के पार उठे उस सर दर्द को समझ पाता।

वह ग्रपने सामने वाले दम्पति को देखने लगा। उसे ऐसा ग्रनुभव होने लगा कि वह ग्रौरत चालाक कोयल है। जिसने अपने पति को कौवा मान कर बुद्धू बना लिया है। तभी तो चापलूसी बातें बड़े रस के साथ कर रही है। किस लिए? केवल ग्रपने बच्चों के भरण-पोषण ग्रौर शिक्षा दिलाने

के लिए। अगर ऐसा न होता तो बीच-बीच में अपने मूर्ख पति की दृष्टि बचा कर उस मुंह फट युवक को कनखियों से क्यों देख लेती है। जब युवक कोई बात करता है तो वह मुस्करा क्यों देती है? क्या वह मनुष्य इतना मूर्ख है जो अपनी पत्नी के इस स्वच्छन्द व्यवहार की बिल्कुल चिन्ता नहीं करता। वह स्त्री कुलटा है जो अपने पति के सामने ही उसकी सम्पत्ति को लुटा रही है।

राजीव ने झुंझलाकर अपना सिर झटक दिया। उधर से दृष्टि हटा कर दूसरी ओर देखने लगा। राजीव ने दिनेश से कहा—"मेरे हृदय की शुभ कामनाएं···" वह इतना ही कह पाया था कि उसी औरत ने वाक्य पूरा किया।

"प्यारे दिनेश के जीवन में प्यार बनकर बरसें।"

दूसरी औरत ने कहा—"घर के दरोदीवार पर भी।"

एक युवक ने कहा—"दिनेश के चाहने वालों पर भी।"

दिनेश ने कहा—"और दिनेश के चाहने वालों पर भी।"

इसी समय राजीव की दृष्टि दूर एक युवती पर पड़ी। दिनेश घर के एक कोने में खड़ा होकर उससे बातें करने लगा। बातें करती हुई वह युवती बीच-बीच में खिलखिला पड़ती थी। राजीव दूर होने के कारण उसके वस्त्रों को ही देख सकता था, आकृति स्पष्ट नहीं थी। उसने और ध्यान देकर सुनने की चेष्टा की। उसे ऐसा लगा कि वह उसी के विषय में दिनेश से बातें कर रही है। उसने सोचा सम्भवतः ये लोग निर्मला के प्रसंग को लेकर ही उसके विषय में व्यंग्य कर रहे हैं। तभी वह लड़की उसकी ओर देखकर ठहाका मारकर हंसती है। दिनेश और निर्मला भी कभी-कभी ऐसा ही ठहाका मार कर हंसते हैं। उसने कई बार छुप-छुप कर देखा है। उसे महसूस होने लगा कि यहां आकर उसने बड़ी भूल की। अवश्य निर्मला भी यहीं कहीं होगी। सिर दर्द तो केवल बहाना है। मुझे इन दोनों के बीच से हट जाना चाहिए। निर्मला पर मैं अपना अधिकार क्यों समझने लगा। भाभी की बात दूसरी है। वह नहीं समझती कि सौदा

तो दिल का होता है। उन्होंने जब से विवाह का प्रसंग छेड़ा है तभी से हम दोनों के बीच एक ऐसा व्यवधान आया है कि टलता ही नहीं। सम्भवतः निर्मला स्वच्छन्द प्रेम की समर्थक है। तभी तो वह मेरे साथ-साथ और लोगों के साथ भी हंसती है। चहकती है और चपलता की बातें करती है। ये सब लड़कियां मुंहफट लोगों से प्रसन्न रहती हैं। निर्लज्ज, स्वैरणी। भारतीय शील और आदर्श सभी पाश्चात्य सभ्यता की बलि वेदी पर होम कर दिया है।

उसे ऐसा लगा कि हृदय-सागर में अन्तर्निहित बड़वानल जैसी कोई वेदना उभर रही है। जिसमें वह तिलमिलाता जा रहा है। जीवन रूपी सागर जिसमें वसन्त की शीतलता और मधुरिमा भाव लहरियों में ज्वार-भाटा उत्पन्न करती थीं। किसी के उच्छवासों से ही कमलों की सृष्टि हो जाती थी। किसी की मन्द-मन्द चाल सौरभ भार से बोझिल शीतल मन्द सुगन्ध समीर को मात देती थी। किसी के ध्यान से ही हृदय की अतल गहराई में पड़े पवित्र भाव—मोती उतराने लगते। आज वे सभी बड़वानल की आग में जलकर भस्म होते जा रहे हैं।

काश ! निर्मला यह समझ पाती कि प्रेम में प्राणों का आदान-प्रदान होता है। प्रेमी प्रेमिका एक दूसरे को अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं। प्रेम के घने वृक्ष की शीतल छाया में संसार की विषमता के थपेड़े खाकर मन विश्राम करता है। सौन्दर्य की मधुरिमा पीकर उन्मुक्त झूमने लगता है। यहां छाया-पथ के नक्षत्रों के समान भाव जगमगाते हुए जीवन को आलोकित करते हैं। लेकिन यह सब स्वप्न ही बन कर रह गए।

इतने में ही कहकहे की ध्वनि से उसकी विचारधारा टूट गई। उसने उसी ओर दृष्टि डाली। उसे मानों अब की बार एक अंधेरे से कोने में निर्मला खड़ी दिखाई दी। वह सहन न कर सका। यह पराकाष्ठा थी। उसके अपमान की। वह वहां से बिना आज्ञा लिए ही उठ बैठा। स्टेशन के लिए रिक्शा किया। टिकट लिया और गाड़ी में बैठ गया।

गंगाधर शास्त्री-भवन में आज बड़ी भीड़ थी। बाहर बहुत-सी कारें खड़ी हुई थीं। प्रोफेसर वर्मा का भाषण था। प्रिंसिपल की पत्नी मिसेज़ सक्सेना भी दिखाई दे रही थीं। उनके साथ फारवर्ड किस्म की लड़कियों का झुंड था। सम्भवत: मिसेज़ सक्सेना ही पहली महिला थीं जिन्होंने यहां की लड़कियों को फारवर्ड बनाने का सफल प्रयत्न किया। राजीव भी उसी गेट के अन्दर जाने लगा, जहां पर कि ये लड़कियां खड़ी हुई थीं। राजीव को देखकर एक लड़की ने नमस्ते किया और फिर क्या था कि नमस्ते की ध्वनियां गूंजने लगीं। राजीव ने नमस्ते करने वाली लड़की को ध्यान से देखा। उसे लगा जैसे इसे उसने पहले भी कभी देखा है। लेकिन अन्य दुष्टाओं के भय से वह घबराकर आगे बढ़ गया। उसका आगे जाना था कि पीछे से खिलखिलाहट की ध्वनि हुई।

प्रोफेसर वर्मा ने अपना स्थान ग्रहण किया। हाल में तालियां बजीं। प्रो० वर्मा मनोविज्ञान तथा दर्शन शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान थे। राजीव उनसे बहुत प्रभावित था। वर्मा जी ने उठकर व्याख्यान देना शुरू किया। विषय था, 'भारतीय समाज में नारी का स्थान' वर्मा जी ने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना आरम्भ कर दिया। श्रोतागण व्याख्यान में पूर्णतः तल्लीन हो गए। प्रोफेसर साहब के शब्द हाल में गूंज रहे थे—

"नारी सदैव से पुरुष का आकर्षण-केन्द्र बनी रही है। आज की नारी स्वतंत्रता से बाहर मिलती-जुलती है। लेकिन उसका हृदय इतना स्वच्छन्द नहीं है जितना कि भ्रमवश समझा जाता है। पुरुष का यह अनुमान इस-लिए है कि जितना वह बाहर से गम्भीर दिखाई देता है उससे कहीं अधिक उसका भीतरी भाग उच्छृंखल है। नारी का रहस्यमय स्वरूप कुछ समय के संकुचित अध्ययन में नहीं समझा जा सकता, उसके लिए सम्पूर्ण जीवन भी कम है।"

प्रोफेसर वर्मा के इन शब्दों के अनुसार राजीव को ऐसा लगा जैसे उन्होंने मनोविज्ञान के द्वारा उसी के जीवन का अध्ययन प्रस्तुत कर दिया हो। निर्मला के प्रति उठी हुई शंकाएं निर्मूल जान पड़ीं! उसके पश्चात्

वह पुनः दत्तचित्त होकर भाषण सुनने लगा।

"नारी प्रकृति से ही निर्बल है और हमारे समाज के अन्धविश्वासों ने उसे और भी अबला बना दिया है। हमारी सामाजिक व्यवस्था ही कुछ विचित्र है। मां बचपन से ही उसे सुन्दर आकर्षक गुड़िया का रूप देती है। उसे सजाकर रखती है। उसकी प्रगति का स्वाभाविक रूप यहीं से रुक जाता है। समाज के ठेकेदारों ने उसे पर्दे में रहने का आदेश दिया है। उसका उल्लघन भला कैसे किया जा सकता है। स्कूल और कालेजों में वह दुलहिन बन बन कर पर्दे वाली मोटर या रिक्शों में भेजी जाती हैं। उस पर भी बड़ी आश्चर्य की बात यह है कि एक ओर पर्दे की व्यवस्था और दूसरी ओर 'पर्दे के अन्दर कैसा माल है?' यह जानने की ललक। इस प्रकार उसका निसर्गतः कोमल रूप पुरुष की इस दुर्भावना से आतंकित होकर 'छुई मुई' जैसा बन जाता है। संकोच शील होने के कारण उसे पग-पग पर सावधानी से चलना पड़ता है।

हाल में फारवर्ड ग्रुप की तरफ से लड़कियों ने प्रशंसा में तालियां बजाईं। तालियों की प्रतिक्रिया स्वरूप लड़कों की ओर से शोर। लेकिन जैसे ही प्रो० साहब ने भाषण फिर शुरू किया एक दम शान्ति हो गई। वर्मा जी कह रहे थे—

"आज की नारी स्वयं पुरुष के लिए एक पहेली है लेकिन वह पुरुष के एक-एक तत्त्व से परिचित है। वह पुरुष की मनोवृत्तियों से पूर्णतः अवगत है। वह पुरुष को खूब समझती है। कुछ भी सन्देह पाकर वह मुंहफट जवाब नहीं देती। वह सदैव से सहन शीलता की प्रतिमा है। वह पुरुष की अनुचित बातों को सुनकर टाल जाना ही उचित समझती है। पुरुष सदैव अपनी शक्ति के साथ नारी पर हावी रहता है। वह प्रत्येक अधिकार की मांग रखने में संकोच का अनुभव नहीं करता। वह नारी को एक संकुचित घेरे में बन्द करना चाहता है। स्वयं स्वतंत्र रहना चाहता है। लेकिन फिर भी नारी सब कुछ स्वीकार करती है। समझौता लेकर पुरुष की अहमन्यता को सन्तोष देने का प्रयत्न करती है।"

राजीव इतना सुनते ही चौंक पड़ा। उसे अपनी एक घटना याद आ गई। एक दिन निर्मला के साथ उसने ऐसा ही व्यवहार किया था। निर्मला के पास उसका सहपाठी दिनेश अपनी पुस्तक लेने के लिए आया था। उसे देख कर राजीव को क्यों बुरा लगा ? शिष्टाचार की तो बात अलग उसने दिनेश के साथ अमानवीय व्यवहार भी किया था। यद्यपि दिनेश से निर्मला का साधारण परिचय था फिर भी उसे अच्छा न लगा। राजीव और निर्मला सैर करने की तैयारी में थे कि दिनेश ने पहुंच कर हाथ जोड़ते हुए नमस्ते किया। निर्मला ने शिष्टाचार से दिनेश को कमरे में बिठाया। राजीव को बुरा लगा था। दिनेश ने राजीव से भी बातें कीं। लेकिन उसने 'हां' या 'ना' में ही उत्तर दिया। जब राजीव से न रहा गया तो कह ही दिया—

"मिस्टर दिनेश ! हमारे पास अधिक समय नहीं है फिर कभी आना।"

दिनेश बड़े आश्चर्य से उसे देखता रह गया था। फिर भी बड़ी सरलता के साथ उसने पूछा—

"कहीं बाहर जाने का प्रोग्राम है क्या ?"

राजीव ने बड़े घृष्टतापूर्ण शब्दों में उत्तर दिया—"जी था तो लेकिन अब नहीं।"

"कहां जाने का ?" दिनेश ने पूछ लिया।

"अजायबघर देखने की इच्छा थी लेकिन जनाब को देखकर अब किसी भी अजायब घर को देखने की ज़रूरत नहीं है।" झुझंलाते हुए राजीव ने उत्तर दिया।

उसे भली प्रकार याद है कि उसके इस व्यवहार को देख कर निर्मला अवाक् रह गई थी। इससे पहले कि वह कुछ कहे, दिनेश "नमस्ते" कहकर चल दिथा था। उस समय राजीव जीतकर भी अपनी हार का अनुभव कर रहा था। निर्नला की आंखों में आंसू देखकर उसे भी स्वयं अपनी क्षुद्रता का ज्ञान हुआ था। उस दिन वह इतना लज्जित हुआ कि दो दिन तक निर्मला से बातें करने का साहस न हुआ। उसे बहुत आत्म ग्लानि हुई। लेकिन

तीसरे दिन "राजीव" सम्बोधन सुन कर वह अभयदान पा गया था। उसके पश्चात् निर्मला की वही हंसी। मानो निर्मला को उस घटना के विषय में कुछ भी याद नहीं, या पुरुष की स्वाभाविक कमजोरी समझ कर उसे विसार दिया हो। राजीव को आज ज्ञात हुआ कि नारी कितनी लाचार है। वह बेचारी पग-पग पर पुरुष से समझौता करती रहती है।

इसी बीच हाल में गूंजती हुई तालियों की ध्वनि से राजीव की विचार श्रृंखला टूट गई। उसे ज्ञात हुआ कि प्रोफेसर साहब का भाषण समाप्त हो गया है। अपनी व्यक्तिगत उलझनों के बीच भाषण का अंतिम भाग नहीं सुन सका। वह सोचने लगा कि प्रोफेसर साहब ने न जाने कौन-कौन से रत्नों को विचार-सागर में से निकाल कर लुटाया होगा। क्या ही अच्छा होता कि वह सारे व्याख्यान को सुन पाता। सभी के साथ वह भी उठा और सड़क पर चलती हुई भीड़ में खो गया।

आगरा आए हुए राजीव को कई माह हो गए लेकिन उसे मानसिक शान्ति न मिल सकी। कुछ शान्ति मिलती भी थी तो कालेज के समय में, जब वह प्रोफेसर वर्मा के व्याख्यान को सुनने में लीन हो जाया करता। राजीव यहां भी सर्वोत्तम छात्र बन गया था। समय-समय पर तर्क पूर्ण विवाद में सम्मिलित होने पर प्रोफेसर उससे काफी प्रभावित हुए। क्लास में सामने की सीट पर बैठी हुई निर्मला, मालती, मधु, किरन, सुधा, सुरेन्द्र आदि के लिए वह विशेष जन्तु था। वे इसे घूर-घूर कर देखती लेकिन वह सदैव उदासीन रहता। यहां तक कि वह अभी तक उनके नामों से भी परिचित न हुआ था।

एक दिन कालेज से घर जाते हुए राजीव के जीवन से जो घटना घटी वह बाद में महत्तवपूर्ण सिद्ध हुई। टयूशन की तलाश में वह कुछ सोचता चला जा रहा था और कुछ क्या यहीं सब कुछ कि जीवन में इतना आर्थिक वैषम्य क्यों है। ये मज़दूर जो सारे जीवन इसी प्रकार दिन भर परिश्रम करते हैं और ये मिल मालिक सारे दिन मखमली गद्दों पर करवटें बदलते रहते हैं। इनके मैनेजर भी आफिस में बैठे हुए सारा कार्य क्लर्कों पर छोड़

कर ऐश करते हैं। क्लर्क भी उसका बदला मज़दूरों से लेते हैं। गरीब मज़-दूर भी इसी चिन्ता में रहते हैं कि उसका काम अच्छा हो। अफसोस उनकी चेतना कितनी सोई हुई है? वे कभी सोचते भी नहीं कि यह काम दूसरों के लिए किया जा रहा है। उन्हें तो कुत्ते की तरह कुछ रोटी के निवाले फैंक दिए जाते हैं जिससे हड्डियों और मांस की मशीन काम कर सके। वे आधा पेट रूखा-सूखा भर कर सड़ी गली दुर्गन्धपूर्ण क्वार्टरों की कोठरियों में शेष जीवन के बीस-तीस दलदलों वाली बरसातें बिता कर बिलबिलाते कीड़ों जैसे बच्चों को उनकी माताओं की बेबसीपूर्ण आत्मा के गन्दे नाले में पड़ा छोड़ जाएंगे और यह नाला परम्परा को बढ़ाता हुआ इसी प्रकार सैंकड़ों कीड़ों को उत्पन्न करता हुआ चला चाएगा। इसका कहीं अन्त नहीं। सतत प्रवाहमान है।

वह दूर सामने रिक्शा वाला घोड़े टट्टू से भी गया बीता है। टांगे-वाला घोड़े के लिए खाना पानी आदि का तो कम-से-कम प्रबन्ध करता ही है लेकिन रिक्शा पर सवारी करने वाले लाला जी मोटेमल चार आना फेंक कर चल देते हैं। उन्हें रिक्शे वाले से कोई सहानुभूति नहीं। कृतज्ञता की बात तो दूर, वह तो चार आने में खरीदा हुआ गुलाम है।

अमरीका में दासों पर जो अत्याचार होते थे उनकी रोमांचकारी कहानियां उसने पढ़ी थीं वहां दासों को बेंतों से पीटा जाता था। उनके हाथ एक लम्बे तख्ते से बांध दिए जाते थे। गाय की खाल बना हुआ हन्टर जख्मों से भरी पीठ पर बार-बार मारा जाता था। खून की धारें बहती रहती थीं और अचेतावस्था में गुलाम नीलाम हो जाता था। यही दशा उसकी पत्नी की भी होती थी। उसको कमर तक नंगा कर दिया जाता था। उसके अंग प्रत्यंग की नुमायश होती थी और वह ज़रा भी आपत्ति करती तो उसकी छाती और पीठ पर हन्टर बरसते। नीग्रो दास उनकी सम्पत्ति समझी जाती थी। उन्हें अन्य सम्पत्ति की तरह कहीं भी खरीदा और बेचा जा सकता था। उनके शरीर पर घोड़े या खच्चरों की तरह निशान लगाए जा सकते थे।

वह उड़ेसर हाउस से आगे दयाल बाग की सड़क पर जा रहा था। दोनों ओर शानदार कोठियां बनी हुई थीं। उन कोठियों में रहने वाले व्यक्तियों से चिढ़ हो गई थी। आगे चल कर सड़क बिल्कुल वीरान। दोनों तरफ झाड़ खड़े हुए। शाम का झुट-पुटा सा। एक अजीव सा सन्नाटा। उसे कुछ डर सा लगने लगा। लेकिन थोड़ी ही देर में उसने चीख सुनी उसने देखा एक झाड़ी में से निकल कुछ लोग बग्घी चलाने वाले को धमका रहे हैं। एक लड़की सहमी हुई खड़ी है। एक व्यक्ति चाकू लिए हुए उसी लड़की को झाड़ी की ओर खींचने लगा।

झाड़ी में और भी साथी बैठे हुए हैं। लड़की और ज़ोर से चीखने लगी। झाड़ी में बड़े ज़ोर का कहकहा लगाया गया इससे उसे यह अनुमान लगाने में देर न लगी कि आखिर इस खींचातानी का क्या उद्देश्य है। राजीव ने परिस्थिति का अध्ययन किया उसे भयंकरता का आभास हुआ। उसके मस्तिष्क ने कायरता के साथ "अपने मतलब से मतलब है" पटवारी के इन १३ अक्षरों के सत्य में विश्वास करने का प्रयत्न किया। लेकिन प्रो० वर्मा के आदर्श के सामने उसके स्वार्थ के पैर कांपने लगे। वह "त्राहि-त्राहि करने वाली नारी के उद्धार के लिए लौट पड़ा। उसने देखा शाम के ५ बजकर ३० मिनट पर दयाल बाग की सड़क पर कितना सन्नाटा है और वह अकेला है। कोचवान घबराया हुआ चीखने वाली अबला जिसके आंचल में दूध और आंखों में पानी बताया जाता है। लेकिन इन पुरुषों को जन्म देने वाली भी तो वही है। फिर वह इतनी लाचार क्यों ? जो अपने से उत्पन्न पुरुष से आत्म-रक्षा भी नहीं कर पाती। इतने में फिर एक ज़ोर दार चीख सुनाई दी। उसने देखा कि वह लड़की झाड़ी में पहुंचाई जा चुकी है।

उसने तुरन्त बिजली की गति से दौड़ कर झाड़ी में से बांस उखाड़ा और निर्भय होकर लाठी चलाना शुरू कर दिया। उसके इस साहस को देख कोचवान भी आगे बढ़ा। उसने ढेले पत्थर फेंकने शुरू किए। उधर समूह के व्यक्ति भी साधारण नहीं थे। छटे हुए शहर के गुण्डे थे। आगरा गुंडा गर्दी में मशहूर है। लंगड़ा बाबू को कौन नही जानता ? उसी का यह

समूह था जो इतने पर भी विचलित नहीं हुग्रा। राजीव लाठी चलाना बचपन से ही जानता था। उसके इस कौशल के सामने बाबू का पूरा प्रयत्न करने पर भी ग्रसफल रहा। वैसे बड़े-बड़े लठैतों के पेटों को वह फाड़ चुका था। लड़की के चेहरे पर रंग ग्रा जा रहे थे। बीच-बीच में जब राजीव संकट की स्थिति में होता तभी वह चीख पड़ती लेकिन इस दृश्य को सहन करना उसकी शक्ति से बाहर प्रतीत होने लगा। वह ग्रन्त में लड़खड़ाती हुई पृथ्वी पर अचेत होकर गिर पड़ी। उधर जब कोचवान ने ग्रपने प्राण संकट में देखे तो वह बग्घी पर चढ़कर भागने लगा। दो गुण्ड़ों ने साइ-किलों से उसका पीछा किया। उसे थोड़ी दूर पर पकड़ लिया गया ग्रौर पेड़ से बांध दिया गया। लाठी चलाते-चलाते राजीव शिथिल होता जा रहा था ग्रौर गुंडे शिकारी कुत्तों की तरह चारों तरफ से उस पर ग्राक्रमण कर रहे थे। राजीव ग्रब प्रहार करने के स्थान पर ग्रात्म-रक्षा ही कर रहा था। इसलिए ग्रब ग्रौर भी कठिन था कि वह ग्रपनी रक्षा कर सके। उधर गुंडों का साहस कोचवान को ग्रधिकृत करने के पश्चात् ग्रौर भी बढ़ गया था। राजीव को ऐसा लगा मानो ग्रब प्राण नहीं बचेंगे। उसने मृत्यु से प्रेरणा प्राप्त कर ग्रौर भी तीव्र गति से लाठी चलाना प्रारम्भ किया। इतने में लाठी घूमती हुई एक गुंड़े के सर पर पड़ी। वह "अरे मरा" कहता हुआ धराशाही हो गया। राजीव लाठी चलाता रहा। उसे लगा कि गुंड़े पांच सात की संख्या में नहीं हैं। वरन् सौ, दो सौ की संख्या में हैं। एक के गिरने से क्या होता है। उसने ग्रौर भी तेज़ी के साथ लाठी चलाना शुरू किया। इसी बीच बाबू के छूरे का प्रहार हुग्रा। बाबू का प्रयत्न सफल रहा। छुरा पेट के नीचे कमरे पर खुचरट करता हुग्रा जांघ में घुस गया। राजीव की लाठी किसी पेड़ से टकराती रही। तभी मोटर कार की रोशनी में उस ने पांच छः गुंड़ों को ग्रौर उतरते हुए ग्रनुभव किया उसने देखा कि वे उस लड़की को कार में चढ़ा रहे हैं। उसे बिठाने के बाद वे उसकी ग्रोर बढ़ने लगे। उसकी शक्ति ने जवाब दे दिया। वह लड़खड़ाता हुग्रा गिर पड़ा।

× × ×

"यह आदर्श बहुत पुराना हो चुका है। पगली।"

"लेकिन मेरे लिए यही सर्वस्व है।"

"अभी तू नहीं समझती कि भारतीय आदर्श अब सड़ने की स्थिति तक पहुंच चुके हैं। यह बीसवीं शताब्दी है जिसमें प्राचीन मान्यताएं अधिक नहीं टिक सकतीं। नारी अब पुरुषों का खिलौना बनकर मनबहलाव का साधन नहीं है। जिससे जब चाहा खेला, चाहा तोड़ दिया। मेरी प्यारी निर्मो इस जवानी में तुम्हें सचेत रहना चाहिए। क्योंकि बहुत से भोले पुरुषों के रूप में भेड़िये घूमते हैं। जो किसी भी अचेत अबला के ऊपर अवसर पाकर झपट पड़ते हैं अपनी भूख शांत करने के लिए। यह भोला-पन यह प्रेम का आलिंगन सब विडम्बना है, छलना है, प्रवंचना है। सावधान राजीव भो कोई········।

"कमला ऐसा न कहो।" बड़ी घबराहट में निर्मला ने प्रार्थना की।"

"मैं ठीक कहती हूं बहन।"

"नहीं मेरी अन्तरात्मा यह स्वीकार नहीं कर सकती। राजीव का वह प्रेम केवल प्रदर्शन था अथवा उसके भोले पन में प्रवंचना थी मेरे अन्तर का विश्वास इसका प्रमाण है। मुझे अपने निश्चल प्रेम की शक्ति पर पूरा भरोसा है। मेरी साधना अवश्य उन्हें यहां तक खींच लाएगी क्योंकि प्यार की कशिश में आत्मिक सम्बन्ध सदैव सत्य और शाश्वत रहा है।

"तो क्या तू निश्चय कर चुकी।"

"निश्चय किसका ? कैसा ?

यही कि तू राजीव से शादी करेगी।

"वरण तो मैं कर चुकी।"

"क्या अपने ही मन से ?

"और क्या तेरे मन से करती ?"

"मेरा मतलब कि राजीव भी इस बात को जानते हैं या नहीं?"

"अभी तो नहीं।"

"तो कब जानेंगे। उनको आज ही प्रेम-पत्र लिखो।"

"प्रेम-पत्र क्यों लिखूँ मैं आज ही रात को मिलूंगी तभी सब कह लूंगी। तू नहीं जानती बहन ! स्वप्न में मेरी उन से रोज मुलाक़ात होती है।"

इतने में नीचे से कमला के लिए पुकार हुई। उसका भाई दिनेश लेने के लिए आया था। प्रेम के रहस्यमय लोक में विचरण करने वाली दोनों कुमारियों का स्वप्न महल पल में ढह गया। हृदय की मनोहर भावनाओं के पंखों पर चढ़ कर नन्दन बन में पहुंचने की अभिलाषा पल भर में ही सहम गई।

× × ×

राजीव के इस प्रकार एकाएक चले जाने पर पहले तो सभी लोगों को चिन्ता हुई। लेकिन ज़ब यह पूरा विश्वास हो गया कि वह गांव चला गया है तो क्रोध भी हुआ। विशेष कर उसके चचेरे भाई प्रकाश बाबू को। निर्मला की मां विदुषी थीं, फिर भी राजीव के इस व्यवहार से उनको भी क्षोभ हुआ। विमला को आश्चर्य के साथ इस रहस्य को जानने को कौतूहल हुआ।

कमला के चले जाने पर जैसे ही निर्मला जीने से उतर रही थी उसके कानों में इन लोगों के ये शब्द पड़े। उसका हृदय धक् से रह गया। मां कह रही थीं —

"राजीव जैसे लापरवाह लड़के के साथ निर्मला की शादी नहीं हो सकती।" मां ने अपना अन्तिम निर्णय देते हुए क्रोध की मुद्रा में कहा।

"लेकिन मां इस विषय में इतनी शीघ्रता न कीजिए। हो सकता है इसके मूल में कोई कारण रहा हो।"

"विमला चुप रहो। कारण वारण कुछ नहीं। यह सरासर राजीव की धृष्टता है। हम अपनी ज़िम्मेदारी लेकर क्यों बुराई लें ? राजीव के इस व्यवहार से हमें सचेत हो जाना चाहिए। अम्मा का निर्णय ही ठीक है।" प्रकाश बाबू ने विमला को झिड़कते हुए बड़े तटस्थ भाव से कहा।

"लेकिन मां, निर्मला पढ़ी-लिखी लड़की है। इस विषय में उसकी रुचि का भी तो ख्याल करना ही होगा। क्योंकि जीवन भर का सुख-दुःख

इसी पर निर्भर करता है।" विमला ने गम्भीरता के साथ कहा।

"उसकी रुचि का क्या मतलब ? हम उसे कुएं में थोड़े ही डाल देंगे। मां ने क्रोध में कहा।

"मां एक दूसरे की रुचि का फिर भी महत्त्व है। वैदिक युग में भी स्त्री पुरुषों की रुचि का सम्मान किया जाता था। स्वयंवर को छोड़िए प्रत्येक प्रकार के विवाह का यही उद्देश्य है कि दो व्यक्ति प्रेम के अटूट कोमल वन्धन में एक होकर एक दूसरे के लिए जिएं। सहयोग का आदान-प्रदान करते रहें। जीवन के अभावों को भरें। यह तभी हो सकता है जब जीवन-साथी मनोनुकूल हो।"

लेकिन तुम्हें कैसे मालूम है कि निर्मला की रुचि राजीव की ओर है और राजीव भी निर्मला को चाहता है। प्रकाश बाबू ने बिमला से पूछा।

"इसका उत्तर उस दिन चाय पीते हुए राजीव से मुझे मिल गया है। निर्मला भी शरमा गई थी। उसके पश्चात् मैंने हमेशा इन दोनों के व्यवहार का अध्ययन किया है।

बिमला ने उत्तर दिया।

"तुम्हारे अध्ययन को हम नहीं मानते।

राजीव से पत्र द्वारा इस विषय में पूछताछ ठीक है। ठीक है न अम्मा ? —प्रकाश बाबू ने समझौता करते हुए कहा।

अन्तिम प्रस्ताव ही सर्वमान्य रहा। निर्मला उल्टे पैरों जीने से ऊपर कमरे को ही लौट गई।

× × ×

लगभग १२ बजे रात को राजीव की बेहोशी थोड़ी-सी दूर हुई। उसने जैसे ही आंखें खोलीं तो उसे विश्वास नहीं हुआ कि वह स्वप्न देख रहा है अथवा जाग रहा है। उसने अपनी उंगली को काट लिया तब कहीं अपनी सावधानी पर विश्वास हुआ। वह बड़े आरामदेह बिस्तर पर लेटा हुआ था। पलंग स्प्रिग का था अतः जैसे ही वह करवट बदल रहा था कि दो इंच उछल गया।

कमरा बहुत शानदार था। हरे रंग की मध्यम रोशनी में उसकी जगमगाहट से ऐसा मालूम हो रहा था मानो स्वर्ग में उसे कोई कमरा अलौट कर दिया गया हो। शाम की घटना केवल अन्तश्चेतना में कभी-कभी बिज़ली की तरह कौंध कर छुप जाती। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहां है? जैसे ही उसकी आंख खुली तो अपने पलंग के पास कई सुन्दर अज़नबी नारी पुरुषों को देखा। उसने आंखें फिर बन्द कर लीं। उसे महसूस होने लगा कि संध्या की घटना एक डरावना सपना हो। अथवा इससे पूर्व का जीवन ही एक ख्वाब की तरह चेतना से मिटता जा रहा हो। अन्त में उसे यह मानना पड़ा कि गुंडों के द्वारा वह मौत के घाट पहुंचाया गया और नेकी के कारण वह स्वर्ग के किसी कमरे में पहुंचा दिया गया है। ये पलंग की तरफ झुके नर-नारी स्वर्ग के फरिश्ते हैं जो खिदमत के लिए तैनात किए गए हैं। इसी समय जांघ में उसे दर्द महसूस हुआ।

धीरे-धीरे दर्द बढ़ता गया। वह कराहने लगा वह आंखें बन्द किए हुए ही अपने पास कुछ फुसफुसाहट की ध्वनि सुन रहा था। एक हाथ से टटोल कर उसने जांघ पर बंधी हुई पट्टी को महसूस किया। चुपके से आधी आंखें खोलीं। डाक्टर कोई मिक्चर तैयार कर रहा था। उसे वह दवा पिलाई गई। एक भव्य आकृति वाले पुरुष ने डाक्टर से कोई प्रश्न किया। डाक्टर ने कहा—"कोई चिन्ता नहीं युवराज, आप सभी अब आराम कीजिएगा। यहां सिर्फ एक नौकर देखभाल के लिए काफी है। हां बीच-बीच में जागें तो यह मिक्चर कोई देता रहे। सुबह तक काफी आराम मिल जाएगा।" यह कहकर डाक्टर अपना बैग उठाकर 'गूड नाइट' कहता हुआ चला गया। गाउन पहने हुए भव्य आकृति वाला युवक भी चल दिया। उसके जाने के बाद सभी लोग कमरा खाली कर गए। एक बजे दवा के असर से दर्द कुछ कम हो गया और उसे नींद आ गई। लगभग चार बजे फिर उसकी नींद टूटी। अबकी बार चारों तरफ सन्नाटा महसूस किया और साहस करके वह तकिये के बल पलंग पर

सहारा लेकर बैठ गया। पास ही एक स्टूल पर चांदी का जग रखा हुआ था। उसने गिलास में थोड़ा-सा पानी उंडेला और एक ही सांस में पी गया। मेंटल पीस पर बड़े-बड़े गुलदान सजे हुए थे। उनमें से निकलती हुई फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध से सारा कमरा महकने लगा। कमरे में बहुमूल्य फर्श था जिसके बीचों-बीच ईरानी कालीन बिछा हुआ था। उसके बिलकुल सामने दीवार के सहारे ड्रैसिंग टेबुल थी जिसमें इस समय उसका प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था। इस समय उसे दर्द बहुत कम महसूस हो रहा था। इसी लिए कमरे का जुगराफिया देखने के लिए मन आतुर होने लगा। कमरे की छत में झाड-फानूस लटक रहे थे। लेकिन उधर से उसने जैसे ही कमरे के दरवाजे की ओर देखा वह चौंक गया। एक निहायत खूबसूरत अप्सरा खड़ी हुई उसके इस अजनबी व्यवहार को मुस्कराती हुई देख रही थी। अपनी बेवकूफी को देखकर वह बड़ा लज्जित हुआ। उसने समझ लिया कि इस रंगीन महल की वही स्वामिनी है। वह झेंप महसूस करता हुआ कहने लगा—

"क्षमा कीजिए। मेरे इस अजीब व्यवहार से इतनी रात गए आपको यहां आने की तकलीफ हुई।"

अप्सरा ने कुछ भी नहीं कहा। वह पूर्ववत उसी प्रकार मुस्करा रही थी। राजीव ने फिर कहा—

"शायद आप मेरी असभ्यता पर मुस्करा रही हैं। मुझे शिष्टाचार भी तो नहीं आता। अच्छा, नमस्ते तशरीफ लाइए। आप बहुत देर से खड़ी हुई हैं।"

अप्सरा भी मौन।

राजीव ने हाथ जोड़ते हुए प्रार्थना के स्वर में कहा—

"कृपया मुझे बताने का कष्ट कीजिए कि मैं कहां हूं।"

अप्सरा अब भी मौन खड़ी थी।

राजीव ने सोचा शायद ये हिन्दी नहीं जानतीं। या हिन्दी सुनना भी पसन्द नहीं करतीं इसलिए उसने अब की बार अंग्रेजी में ही प्रश्न किया।

उसे फिर भी उत्तर न मिला। अब तो उसके मुख से चीख निकल गई। 'मैं कहां हूं' 'मैं कौन हूं' से सारा कमरा गूंजने लगा। इतने में ही उत्तर मिला—"आप राजीव हैं।"

"और तुम?"

'पत्थर की प्रतिमा' कहती हुई एक तरुणी ने दरवाज़े से प्रवेश किया। राजीव ने पहले प्रतिमा को देखा फिर आई हुई तरुणी को पहचाना। उसे अपनी मूर्खता पर बड़ी झेंप महसूस हो रही थी।

"राजीव आप कैसे हैं? दर्द तो नहीं हो रहा? अच्छा आप बैठने के बजाय लेट जाइए।"

"जी, जी, आप—?"

"खामोश क्यों हो गए। बोलो न राजीव।"

"आप···आपको—।"

"शायद पहले भी कभी देखा है।" वाक्य पूरा करती हुई वह मुस्कराने लगी। राजीव आदमी भूल सकता है औरत याद करती रहती है। औरत की जिन्दगी में मनभायी सूरत एक बार ऐसी अंकित हो जाती है कि लाख समय का कुहरा पड़े उसके मन का शीशा साफ होता रहता है। तुम्हें उस रोज़ कालेज के कवि-सम्मेलन में कविता पढ़ते हुए सुना। सूरत और शक्ल की बात दूर आवाज़ से ही मैंने पहचान लिया। फिर प्रो० वर्मा जी के व्याख्यान वाले दिन मैंने तुम्हें हाथ बांध कर नमस्ते कहा। मेरी नटखट सहेलियों ने भी तुम्हें उसी तरह नमस्ते किया। कल मेरी दीदी की प्राण-रक्षा और मान-रक्षा आपने की। भाई शैलेन्द्र जब कार में लिटा कर दीदी के साथ आपको यहां लाए तो मैं कह नहीं सकती मेरी जैसे जान निकल गई हो। मुझे थोड़ा सुकून डाक्टर की बातों को सुनकर मिला। मैं कई बार रात में आपके पास आई हूं। कभी मैं दीदी को देखती थी और कभी आपको। अभी-अभी बीस मिनट पहले ही नौकर को मैंने थोड़ा-सा आराम करने के लिए भेज दिया। दूसरा नौकर आ रहा है।"

"अरे! आपने अब भी नहीं पहचाना!"

"जी, नहीं।"

"मैं आपकी सहपाठिनी हूं। अन्तर इतना है कि आप ए० सेक्शन में हैं और मैं बी० में। लेकिन मनोविज्ञान पढ़ने के लिए हम दोनों वर्मा जी के यहां मिल जाते हैं। हां लड़कियों की ज्यादा संख्या होने से हम सब ने आपको भी नारी वर्ग का एक सदस्य मान लिया है।"

उसे विश्वास था कि राजीव अब तो पहचान ही लेगा। लेकिन ऐसा लगा कि अब भी राजीव अजनबी का सा व्यवहार कर रहा है। अतः उसने शरारत-भरे लहजे में कहा—"राजीव, शायद आपको डर तो नहीं लग रहा कि मैं ढेला मार दूंगी।"

अब राजीव को कुंजी मिल गई। वह मुस्कराने लगा। लेकिन दूसरे क्षण गम्भीर हो गया। वह निर्मला की स्मृति में खो गया।

"राजीव! मैं समझ गई। कोई अन्दरूनी चोट आपको सता रही है। अभी डाक्टर को फोन करती हूं। वह दिल की बीमारी ठीक कर सकते हैं। शायद ढेले का दर्द फिर उखड़ आया है।" चपला ने राजीव को हंसाने का प्रयत्न किया। लेकिन राजीव मुस्करा भर दिया।

"राजीव।"

"जी।"

"आपने मेरी प्यारी दीदी की रक्षा की है। मैं अहसान के बोझ से दबी जा रही हूं। चपला ने गम्भीर होकर कहा।"

"लेकिन यह तो अहसान नहीं। यह मेरा उसी तरह का कर्तव्य-पालन है जैसा कि आपने मुझ घायल व्यक्ति के प्रति निभाया है।"

"आपने तो अस्तित्व की रक्षा करके बहुत बड़ा उपकार किया है। हालांकि इस जीवन के तकाज़े की खातिर आपने यह रक्षा की है फिर भी मैं बेखटके कह सकती हूं कि आपने अपने अस्तित्व से जब अस्तित्व की रक्षा की है तो यह उपकार केवल मेरी दीदी पर ही नहीं समस्त मानव-जाति पर है।"

आप तो सचमुच मुझे शर्मिन्दा करने पर तुली हुई हैं। असल में यहां

अहसान का सवाल ही कब उठता है। विश्वास कीजिए मैंने अभी तक किसी पर अहसान नहीं किया है। यह सब कुछ मनुष्यता के नाते अपने आप हो गया है।

"लेकिन राजीव आप तर्क में जीत जाएं फिर भी मैं इसे एक बड़ा उपकार मानूंगी। आपके विचारों को सुनकर मेरा मन इतना खुश है कि मैं बयान नहीं कर सकती। आपकी उदारता को देखकर सचमुच मेरा सिर गर्व से ऊपर उठा जा रहा है। हां, राजीव, एक बात सचमुच बताइएगा। ढेले की घटना के बाद कभी मुझे याद किया है ? इतना कहकर चपला बड़ी उत्सुकता और बेसब्री से अपने दिल की धड़कनों को तेज़तर होता हुआ अनुभव करने लगी। उसकी आंखों में आशा भरी परीक्षा के व्याकुल क्षण चंचल मछली की तड़पन की उपमा पा सकते थे। राजीव को मौन धारण करते देख उससे न रहा गया। उसने फिर सवाल किया।

"राजीव ! क्या मैंने अनुचित प्रश्न किया है ?"

"कदापि नहीं।"

"तो फिर।"

"राजकुमारी ! मुझ साधारण व्यक्ति के जीवन में ढेले की घटना भी साधारण की सीमा तक ही रही। मैंने कभी भी उस मामूली बात को ध्यान में लाने की कोशिश नहीं की।"

"राजीव एक बात पूछूं।"

"क्या ?"

"क्या आपने कभी किसी से प्यार किया है ?"

"जी, जी, जी, जी नहीं।"

"नहीं ? उसने आश्चर्य के साथ पूछा।"

"जी।"

"अच्छा, तो किसी ने आपसे प्यार किया है ?"

"जी हां।"

"किसने प्यार किया है ?"

"जी हां।"

"किसने ?"

"आपको नहीं मालूम कि मेरे पिताजी मुझे कितना प्यार करते थे। प्रकाश भैया तो जान से भी ज़्यादा चाहते हैं, और भाभी की आंखों का तो तारा हूं। और निर्मला तो—

"यह निर्मला कौन है।"

"मेरी तो कोई नहीं।"

"फिर भी।"

"एक चुड़ैल थी। एक बार मैंने उससे कहा कि निर्मो मैं तुमसे प्यार करता हूं।"

"तो फिर उसने क्या कहा।"

"उसने मुझे ऊपर-नीचे देखा। फिर मुझे हाथ पकड़ कर कमरे में ले गई।"

"अच्छा ! फिर क्या हुआ ?"

"फिर उसने हंसते हुए कहा—मैं कितनी सौभाग्यवती हूं कि तुम जैसा प्यार करने वाला मिला।"

"फिर क्या हुआ ?"

"फिर वह हाथ पकड़े हुए मुझे अपने बेड रूम में ले गई। मैं दिल ही दिल बड़ा खुश हो रहा था।

"फिर क्या हुआ ?"

बैड रूम में ही एक ओर ड्रैसिंग टेबिल थी। वह मुझ साथ लेकर शीशे के सामने खड़ी हो गई और बोली—"जनाब पहले अपनी सूरत देखिए। इस सूरत का प्रभाव कम करने के लिए कमरे में दो हज़ार वाट के कई बल्ब लगाने पड़ेंगे।"

"बड़ी बदतमीज़ लड़की थी।"

"जी नहीं, वह बड़ी अच्छी लड़की थी। उसने मुझे सबक सिखा दिया कि आगे मैं कभी गलत फ़हमी में नहीं पड़ूंगा।"

"ऐसी तो बात नहीं है। कोई भी लड़की आप जैसे व्यक्ति पर अपना सब कुछ वार सकती है। यह पौरुष और यह सौन्दर्य।"

"यही मैं खुद समझ बैठा था। एक बार देहली में मिरांडा हाउस की तरफ जा रहा था। सामने से कुछ दूर दो खूबसूरत लड़कियां आ रही थीं। मैं अपना सिर और आंखें दोनों नीचे की ओर किए जा रहा था। मैं हमेशा से शर्मीला था। अतः अपनी उसी अदा के साथ चला जा रहा था कि लड़कियों के झुंड में से एक लड़की ने रौब के साथ कहा—'सुनिए महाशय।'

मैं चौंक पड़ा और अपने आप कदम रुक गए। बदहवासी में दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते कर लिया। अब की बार और सख्ती के साथ कहा—

"हमने नमस्ते मंजूर किया। लेकिन महाशय अब कभी भी इस तरफ से न गुज़रिएगा। इस बार तो खैर माफ किए देते हैं।"

मैंने पूछ लिया—"क्यों?"

"क्यों कैसी महाशय! हमने ख्वाब में भी ऐसा ख्याल नहीं किया कि आप जैसे आदमी भी दुनिया में पाले जाते हैं। खबरदार! आयन्दा आप हमारे सामने न आएं। आखिर आप अपने को क्या समझ बैठे हैं।"

मेरे मुख से निकला—"इंसान।"

"नौट ऐट आल" कभी तसव्वुर भी नहीं किया था कि इंसान इतना भी बदसूरत हो सकता है। सारा ऐस्थेटिक सैंस खराब हो गया।"

"राजीव, आप बड़े विनोदी हैं।"

राजीव खुद-ब-खुद शैतानी दे रहा था। इसी बीच चपला के बड़े भाई शैलेन्द्र आ गए। शैलेन्द्र ने स्वस्थ होने की कामना प्रगट करते हुए खैरियत पूछी। चपला, शैलेन्द्र और राजीव सुबह के पांच बजे तक बातें करते रहे। पांच बजे के बाद सभी दैनिक चर्या में लीन हो गए।

तीसरे दिन बैड टी के बाद सुबह सात बजे चपला की दीदी राजकुमारी अजीता भी राजीव से मिलने आई। अजीता ने कृतज्ञता भरी दृष्टि

से राजीव को देखा। राजीव ने औपचारिक रूप से ही कुशलता मालूम की। राजीव को राजकुमारी अजीता बिल्कुल बदली हुई मालूम हुई। उसने और भी गहराई के साथ उसकी आंखों में झांकने का प्रयत्न किया। उसे मालूम हुआ कि आंखों का दायरा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। बढ़ता जा रहा है। अब वह झील बन गया है। गहरी झील जिसके बीच में उसने कोई हृदय की चीज़ फैंक दी है। लहरें उठने लगीं। लहरों का आवर्त शांत रूप से तट की ओर बढ़ रहा है। लेकिन केन्द्र में कोई चीज़ छटपटा रही है। वह असहाय अन्दर की ओर घूमती चली जा रही है। घूमती जा रही है। वह भी तो लाचार-सा उसको डूबते हुए देख रहा है। वह साहस करके हृदय की चीज़ निकालने के लिए कूद पड़ा। जैसे ही वह कूदा आंखों की झील में बड़ी बड़ी ज़ोर की तरगें उठीं। कुछ बूंदें किनारे का अतिक्रमण करती हुई उछलीं। राजकुमारी का अन्तर तट भीग गया। आन्दोलन हुआ। वह भी सिहरने लगी। बहुत देर तक दोनों की यही दशा रही। दोनों प्राणी सुध-बुध खोए हुए बैठे रहे। इस दशा में बहुत-सी बातें हुईं। हृदय का समर्पण हुआ। आत्म निवेदन हुआ। लेकिन कुछ देर के बाद राजीव सचेत हुआ। उसे बड़ी लज्जा का अनुभव हुआ। सोचने लगा कि कहीं उसे घृष्टता तो नहीं की। राजकुमारी अपने मन में क्या सोच रही होगी। कितना छिछोरापन है। उसने अपने मन पर काबू क्यों नहीं किया। वह अवश्य राजकुमारी की नज़रों से गिर जाएगा। इन्सानियत के फर्ज़ को पूरा करते हुए उसका नाजायज़ फायदा उठाना अच्छी बात नहीं। दूसरे राजकीय महमान है। उसे अपनी मान प्रतिष्ठा की रक्षा करना चाहिए। क्या वह इस दशा में एक प्रेमी होने का अधिकारी है। नहीं! कदापि नहीं। इसके बाद उसको कोई चीज़ अन्दर ही अन्दर चुभने लगी। मन के अन्दर ग्लानि के कांटे उग आए। भावना की हवा के चलने से बार-बार वह कांटों की चुभन महसूस करता रहा। वह अतीत के घावों को रिसता हुआ अनुभव करता रहा। निर्मला ने झांककर उसका गुनाह देख लिया था। यह अनैतिक चोरी थी। वह अपनी नज़र में अपराधी था। उसने

निश्चय ही आज प्रेम की हत्या की है। वह पापी है। घृणा के योग्य है। इस अहसास के बोझ से उसका सर झुक गया। नज़र की डोर ढीली पढ़ गई थी। राजकुमारी की चेतना को लाचार ज़मीन की ओर गिरना पड़ा। वह राजीव पर अपनी भावना का फूल अर्पित कर चुकी थी। लेकिन जब राजीव को घबराया हुआ देखा तो उस घबराहट में आरती की थाली सहसा गिर पड़ी हो। वह चौंक पड़ी। उसे यह प्यारा सपना किसी कहानी का मनोहर मोड़ लगा जहां नायक वस्तु जगत का नाम गुण युक्त व्यक्ति ही नहीं था वह उसकी प्रेरणा का देवदूत भी था। लेकिन अब तो वह कुछ और ही देख रही थी। उसके सामने एक साधारण युवक था। कल्पना के सत्य और वस्तु जगत के सत्य में बड़ा अन्तर है। राजीव जैसे अनेक युवक उसके सौन्दर्य के पुजारी रह चुके हैं। लेकिन दूसरे क्षण राजीव के उपकारक व्यक्तित्व के सामने अहं अकिंचन हुआ और फिर गीला होते होते धुंए की तरह खोखला होता गया। राजकुमारी अपने स्त्रीत्व में पिघल गई।

इसी तरह लगभग दस मिनट गुज़र गए। इसी बीच दोनों में से किसी ने भी कोई बात नहीं की। राजीव की इस स्थिति को देख कर राजकुमारी के होंठ कई बार फड़के लेकिन कुछ भी व्यंजना न कर सके। अन्त में बहुत साहस बटोर कर राजकुमारी ने पूछा—"राजीव आप कैसे हैं।"

"मैं ठीक हूं लेकिन आप।"

"आप मेरी चिन्ता न कीजिए मुझे हुआ ही क्या था? आपने जिस वीरता का परिचय दिया उसको देख कर मेरा दिल श्रद्धा से भर उठता है। मैं सोचती हूं कि आप मनुष्य नहीं देवता हैं। हां देवता की अर्चना करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूं। आपने अपने प्राणों को खतरे में डाल कर जो मेरी रक्षा की उससे आपके क्षत्रिय धर्म का पूरी तरह से सबूत मिल जाता है। देवता भी लोक रक्षा के लिए राक्षसों से युद्ध करते थे।"

अगर मैं अपनी रक्षा करने में असफल होता और मारा जाता तब भी क्या आप देवता मानती।"

"निश्चय ही क्योंकि साधना की सिद्धि से इसका निर्णय नहीं होता।

इसका प्रमाण शुभ कार्य के प्रति उठी हुई सुन्दर भावना से ही है। मानव मन में सोया हुआ देवत्व यही है। यही अनुभूति मुक्तात्मा के रूप में सत्कार्य के लिए प्रेरित करती और मानव का देवता उसमें प्रवृत हो जाता है।"

"लेकिन मेरे मन में तो सब से पहले स्वार्थ की यही भावना उठी थी कि मुझे अपने प्राणों को खतरे में क्यों डालना चाहिए। दुनिया में ऐसा होता ही रहता है। अतः मैं अपना रास्ता बदल ही रहा था कि एक दर्द भरी पुकार ने मुझे मजबूर कर दिया। उस समय मेरे मन में कर्तव्य-भावना जाग्रत हुई। मैं उसी के आवेश में कूद पड़ा मैदान में। बस इतना ज़रूर कहूंगा कि मैं देवता तो नहीं हां एक इन्सान अवश्य था।

"नहीं, नहीं राजीव। आप उस समय सचमुच देवता थे इन्सान नहीं। इंसानियत ने तो अपने दुर्बल पक्ष को प्रकाशित करके कर्तव्य-भावना जगा दी थी। कार्य में प्रवृत होने के समय फिर इन्सान देवत्व की सीमा में पहुंच कर देवता बन गया। इसी तरह जब स्वार्थ की भावना से पराजित होकर यदि आप परांमुखी होते तो कायरता के इस कार्य में प्रवृत होने पर आप को राक्षस कहने में कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी। ऐसी दशा में आपको भी उन्हीं दुष्ट गुण्ड़ों के वर्ग में ही सम्मिलित किया जाता। चाहे स्पष्ट रूप में आपका उसमें हाथ नहीं, लेकिन अन्दर के राक्षस का उसमें बहुत बड़ा हाथ रहता। मुझे संसार में ऐसे राक्षस ज़्यादा दिखाई देते हैं। देवता बहुत कम।"

"आप तो बहुत आदर्शवादी दिखाई देती हैं। सच पूछिए तो यह आदर्श वाद ही मानवता की प्रगति में आजकल बाधक सिद्ध हो रहा है। इस अतीत और वर्तमान में जीने के कायल हैं। न हमें भविष्य भाता है। क्योंकि भविष्य के अनिश्चित रूप के प्रति हमारा संदिग्ध मन उपेक्षा का भाव ही प्रकट करता है। अतः मन संघर्ष से बचता हुआ परांमुखी हो जाता है। उसे केवल अतीत के रंग महल में छुपने का अभ्यास पड़ गया है। क्या सम्पूर्ण देश के युवकों और युवतियों की यही हालत नहीं है। वे आदर्श में

तो सफल योद्धा हैं और यथार्थ में इतिहास के उन्हीं मुर्दों से उनकी खूब पटती है जिनके गुणगान हमें अकर्मण्य बना देते हैं। कोरी भावुकता किसी काम की नहीं।"

"लेकिन राजीव यह भावुकता ही तो प्राण-शोषक है। इसी का मूल्य है। इसके बिना मानव मानव नहीं। फिर आप ही सोचिए कि आपने क्यों इसी भावुकता में बह कर अपने प्राणों को संकट में डाला।"

"मैंने न तो देवता बनने की भावना से यह कार्य किया न भावुकता में बह कर। सच बात तो यह है कि मेरी विवेक-बुद्धि ने निर्णय कर दिया और आत्म-विश्वास ने उस निर्णय को प्रवृत्ति में बदल दिया। मैं जानता था कि लाठी चलाने में सिद्धहस्थ हूं और घण्टे तक मुझे कोई भी परास्त नहीं कर सकता। इसी बीच में कोई भी व्यक्ति सड़क से गुज़रेगा वह पुलिस को सूचना दे देगा। हुआ भी यही कि शैलेन्द्र जी उसी सड़क से गुज़रे। पस्त होकर गुण्डों को भागना पड़ा।"

"अगर आप लाठी चलाना न जानते होते तो क्या एक दीन और त्राही-त्राही करती हुई नारी की रक्षा का उपाय न करते।"

"क्यों नहीं करता। उस उपाय का दूसरा रूप होता। मैं अपने प्राणों को संकट में नहीं डालता। तब रास्ता बदलकर निकट के पुलिस स्टेशन पहुंचता और आपकी सहायता करता।"

"लेकिन राजीव मैं आपके इस विचार से सहमत नहीं। मान लीजिए पुलिस स्टेशन करीब न होकर दूर होता या इसी प्रयत्न के बीच गुण्डे मुझे कहीं दूर ले जाते। ऐसी दशा में आप एक नारी के ऊपर होने वाले अत्याचार के भागी बन जाते। मेरा तो विश्वास है कि जिस प्रेरणा से प्रवृत्ति होती है वहीं मानव की विवेक-बुद्धि की सीमा समाप्त हो जाती है। राजीव आप जीवन को बौद्धिकता से सदैव न तौला कीजिए। भावुकता का भी अपनी जगह बहुत बड़ा मूल्य होता है। मैं यकीन के साथ कह सकती हूं कि आप में देवत्व की ही प्रबलता है जो आपको अपने पूर्वजों से मिली है। हमारी सभ्यता और संस्कृति इन्हीं संस्कारों के कारण जीवित

है। पूर्वजों को आप मुर्दा समझते हैं लेकिन वे हमेशा हमेशा के लिए अमृत पी के जी रहे हैं। आप मानें या न माने आप भी इसी इतिहास में ही जीना चाहते हैं लेकिन यथार्थ का फैशन जो पाश्चात्य जगत की देन है उस को दिखाने का आग्रह उस इच्छा को कुण्ठित कर देता है या आप स्पष्ट-वादी नहीं हैं, कोई बात आप छिपा रहे हैं। यह भावुकता के दुश्मन असली दुश्मन नहीं हैं दुश्मन हैं। वे लोग जो इस भावुकता की जिन्दगी जीते हुए उसका अनुपयोग करते हैं। भावुकता की रक्षा के साथ ही उसकी पुष्टि भी आवश्यक है। उसके लिए प्राणों को संकट में डालना मामूली सी बात है।"

"मामूली-सी क्या बात है दीदी ! दीदी राजीव तो बस फिलास्फर हैं और आप भी कम फिलास्फर नहीं हैं। छोड़ो भी दीदी बहस। इनको आराम करने दिया जाए।"

"अरे हां चपला। मैं तो भूल ही गई कि इनको इस वक्त आराम करने की ज़रूरत है। "राजीव को संबोधित करती हुई।" माफ कीजिए मैंने आपको आराम नहीं करने दिया। नाश्ते के समय मैं फिर हाज़िर हूंगी। विश्वास दिलाती हूं कि उस समय कोई जिरह नहीं छेड़ूंगी।" इसके बाद राजकुमारियां चली गई। चपला ने चलते समय राजीव को आराम करने के लिए कहा। राजीव ने राजकुमारी अजीता की उसके उच्च और गंभीर विचारों के लिए प्रशंसा की।

× × ×

रियासतें समाप्त हो जाने पर भी महाराज के दैनिक कार्य-क्रमों में अन्तर नहीं आया। अतः प्रत्येक दिन उनका दरबार सजता। देवनगर में उनके प्रशंसक ज़मींदार महीनों महमान बने रहा करते। दशहरे के उत्सव में जो दरबार लगता उसकी निराली शान हुआ करती। सैकड़ों आदमियों को भोजन खिलाया जाता। दान दिया जाता। दरबार में कई दिन तक जश्न मनाया जाता। एक दिन नृत्य और संगीत दूसरे दिन ड्रामा, तीसरे दिन मुशायरा, चौथे दिन भजन और कीर्तन, पांचवें दिन पुरस्कार वित-

रण, छटे दिन यज्ञ ग्रोर दान, सातवें दिन दार्शनिक ग्रौर धर्मात्माग्रों के वाद-विवाद ग्रादि। ठाकुर फतहसिंह महाराज के साथ परछाईं की तरह रहा करते। महाराजाधिराज महेन्द्र सिंह को शिकार खेलने का व्यसन हमेशा से था। ठाकुर फतह सिंह के साथ चम्बल नदी के वन-प्रदेश में वे शिकार खेलने गए। ऊबड़-खाबड़ वन मीलों तक घोर सन्नाटा। महाराज घोड़े पर सवार थे। पीछे-पीछे ठाकुर फतह सिंह ग्रौर उसके बाद पांच सिपाही। प्यार में महाराज ठाकुर साहब को मामा जी कहा करते।

"मामा जी कहां है वह शेर?"

"महाराज थोड़ी दूर दक्षिण की तरफ हमें चलना होगा।"

"ग्रापने खुद उसे देखा था या सुनी हुई बातों के ग्राधार पर हमें यहां लाए हैं।"

"महाराज मैंने खुद ग्रकेले यहां ग्राकर उस टीले के करीब देखा है। ग्रापको बिल्कुल भयभीत नहीं होना चाहिए। हम छः व्यक्ति ग्रापके रक्षक हैं।"

"मामा जी ग्राप मेरी ताकत ग्राजमाना चाहते हैं? ग्राप सभी यहीं रहेंगे मैं ग्रकेला उस टीले पर जाऊंगा।"

"नहीं महाराज ऐसी बात नहीं। हम ग्रापको ग्रकेला नहीं जाने देंगे।"

"हमारा हुक्म है कि ग्राप सभी यहीं रहेंगे" गर्जते हुए महाराज ने कहा।

महाराज सिर्फ पचास कदम बढ़े होगें कि ठाकुर साहब ने पीछे से सीटी बजा दी। सीटी के साथ लगभग दस बन्दूकों की धायं-धायं होने लगी। महाराज की समझ में कुछ नहीं ग्राया। वह घोड़े से उतर गये। एक छोटे से टीले की ग्राड़ ली। धीरे-धीरे एक गहरे खन्दक में उतरने लगे। खन्दक पहले तो चौडा दिखाई दिया ग्रौर फिर एक तंग गली की तरह हो गया। ग्रंदर के ग्रन्धेरे को देखकर ऐसा मालूम हुग्रा जैसे किसी गुफा में चल रहे हों। एक चट्टान के नीचे बनी हुई खन्दक में वे छुप गये। ऊपर दौड़ते हुए व्यक्तियों का पद-चाप सुनाई दे रही थी। महाराज साहसी थे लेकिन इस

रहस्य को समझने का प्रयत्न कर रहे थे। इसलिए उन्होंने बन्दूक का प्रयोग नहीं किया। जब काले कपड़े पहने हुए हाथों में मशाल लिए हुए कुछ व्यक्ति खन्दक में उतरे। सबसे आगे एक लम्बा-चौड़ा युवक था। उसके बाद कई डाकू बन्दूकें ताने हुए चले जा रहे थे। आगे वाले व्यक्ति ने कहा—

"मोहन तुमने कहा था कि सोने की चिड़िया हाथ लगेगी वह कहां है? शहर का सबसे बड़ा रईस।"

"सरदार वह आज बचकर निकल गया फिर कभी हाथ लगेगा।"

"मुखबर कहां है उससे मिलना चाहते हैं?"

"वह भी भाग गया। सरदार हमें जल्दी यहां से भागना चाहिए। मुझे डर है कि पुलिस घेरा न डाल दे।"

इतना सुनते ही सरदार आग बबूला हो गया, बोला—

"मोहन तुम कैसे जानते हो कि पुलिस हमारा पीछा कर रही है? पुलिस को किसने खबर दी है? हो सकता है कि हम में से किसी ने दी हो।"

इतने में ही खन्दक के ऊपर ठाकुर साहब की सीटी बजी। सरदार ने 'खबरदार' कहते हुए अपने साथियों को डटकर मुकाबला करने का हुक्म दिया। लेकिन सरदार ने पीछे घूमकर जैसे ही देखा, मोहन चुपचाप भागने की तैयारी कर रहा था। सरदार चीखा—

"मोहन भागना नहीं वरना पीछे से गोली दाग दूंगा।"

वह मोहन को पकड़ने के लिए भागा। महाराज ने भी निशाना लगाकर फायर कर दिया। गोली मोहन की टांग पर लगी। इसी बीच खन्दक के मुहाने पर पुलिस आ चुकी थी। डाकुओं और पुलिस के बीच फायरिंग होने लगी। सरदार और मोहन खन्दक के रास्ते से बचकर निकल भागे। धीरे-धीरे शेष डाकुओं ने भी भागने का प्रबन्ध कर लिया। तीन डाकू महाराज के निशाने से मारे गये और दो पुलिस के द्वारा। पुलिश ने डाकुओं का पीछा किया। फतहसिंह प्यार के साथ महाराज से लिपट गये। लौटते समय ठाकुर साहब अपनी अक्ल की तारीफ कर रहे थे कि किस तरह

उन्होंने दो सिपाहियों को दौड़ाकर पुलिस स्टेशन खबर की। किस तरह पुलिस के साथ उन्होंने निशाना लगा कर डाकुओं पर हमला किया आदि-आदि——

महाराज खामोशी के साथ सुन रहे थे। उनका मन कहीं और था। ठाकुर साहब बोले—

"महाराज ये डाकू शहर के बहुत-से रईसों को उठा चुके हैं। इनके लूटने का यही एक नया ढंग है। उस रईस के घर पत्र भेजते हैं कि फलाँ जगह इतने हजार रूपये लेकर आओ वरना लाश मिलेगी। घर के व्यक्ति इस तरह मजबूर होकर रुपये पहुंचा देते हैं।"

"लेकिन महाराज आप कैसे जानते हैं इनके विषय में।"

"महाराज मुझे एस० पी० साहब नें अभी-अभी बताया था कि नट-खट रंगी-डाकू का गिरोह उसी वन में ऐसी हरकतें कई बार कर चुका है। रंगी और मोहन ये दो मशहूर डाकू हैं। सारा इलाका इनसे परेशान है। महाराज ने सिर्फ "हूं" कहा और फिर कुछ सोचने लगे। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा—

"मामा आपका बेटा अभयसिंह आज कल कहां है ?"

"महाराज वह तो हमेशा राजकुमार शैलेन्द्र की सेवा करता है। आजकल आगरे में ही होगा। दोनों सहोदर भाई कैसे लगते हैं महाराज।

बिल्कुल राम-लक्षमण की सी जोड़ी है। इतनी मुहब्बत अपने खास भाइयों में भी नहीं होती महाराज।"

"महाराज ने फिर 'हूं' कहा और खामोश हो गये।"

थोड़ी देर बाद फिर हुक्म दिया—

"हम सीधे आगरा जायेंगे। शैलेन्द्र से मिलने की इच्छा हो रही है।"

"लेकिन महाराज आगरा यहां से ३० मील दूर है। रात हो जायेगी।"

"कोई चिन्ता नहीं।"

"सातों सवारों ने आगरे की तरफ घोड़ों का रुख कर दिया। घोड़े

सरपट दौडे चले जा रहे थे। बन जो थोड़ी देर पहले हंगामें से गूंज रहा था अब केवल घोड़े की टापें ही सुन रहा था। भयंकर वन पार करते हुए घोड़े उड़े चले जा रहे थे। लगभग दस बजे रात को उन्होंने आगरा पहुँचकर ही दम लिया। महाराज की कोठी अपनी शान के साथ जगमगा रही थी।

महाराज को अचानक आया हुआ जान कर सभी सन्नाटे में रह गये। शैलेन्द्र नाइट गाउन पहने पिता का स्वागत करने दौड़ा। चपला और अजीता भी पिता जी के गले में बाहें डालकर खुश दिखाई दे रही-थीं। महाराज बार-बार शैलेन्द्र को देखे जा रहे थे उनकी सशंक्ति दृष्टि चेहरे के भाव पढ़ने का प्रयत्न कर रही थी। शैलेन्द्र बिलकूल स्वाभिविक रूप से व्यवहार कर रहा था। महाराज का मनोवैज्ञानिक अध्ययन असफल रहा। अन्त में उन्होंने पूछा—"शैलेन्द्र अभय कहां है?"

"पिता जी अभय भाई तो एक सप्ताह पूर्व ही अपने गांव गये हैं।" चपला ने जवाब दिया

"बेटी हम तुम से नहीं पूछ रहे"

"क्षमा कीजिए पिता जी।"

"कोई बात नहीं। शैलेन्द्र आजकल तुम क्या करते रहते हो?"

"मैं मैं, पिता जी वह अपने फार्म में, अंग्रेज़ी ढंग से खेती कराने की व्यवस्था कर रहा हूं। अभी-अभी लाइब्रेरी में कृषि-विज्ञान का ही अध्ययन कर रहा था। आप आइये मेरी लाइब्रेरी देखियेगा।"

"हां ज़रूर देखना चाहेंगे" महाराज ने कहा। शैलेन्द्र पिता जी को लाइब्रेरी ले गया। वहां सचमुच टैबुल लैम्प के नीचे कृषि-विज्ञान पर लिखी हुई पुस्तकें खुली रखी थीं। महाराज को पूर्ण सन्तोष हुआ। फिर वे चपला और अजीत का हाथ पकड़े हुए अपने कमरे में चले गये। पीछे-पीछे शैलेन्द्र भी गया। सेवकों ने महाराज के पैरों को धोया। महाराज ने आचमन करके भोजन किया और फिर सो गये। प्रातःकाल ही अपने देव-नगर को कूच कर दिया। शैलेन्द्र के सर से जैसे पहाड़ का बोझ दूर

हो गया हो। चैन की सांस ली। महाराज के जाते ही अभय भी शैलेन्द्र से मिलने आया। शैलेन्द्र, चपला और अजीता राजीव के साथ सुबह की चाय पी रहे थे। राजीव को देखते ही अभय ठिठकते हुए बोला—" भैय्या इस नये मैमने की तारीफ़ ?"

अभय के इस व्यवहार को देखकर शैलेन्द्र ज़रा क्रोध के साथ बोला—"आइये महाराज गीदड़ पछाड़। आपको दूर से यह शेर मैमना मालूम पड़ रहा है। (राजीव की ओर) माफ कीजिए, मिस्टर राजीव, यह मुंह फट दोस्त है। इसके कहने का बुरा न मानियेगा। वैसे ऊपर से यह दुष्ट मालूम पड़ता है। अन्दर से बड़ा अच्छा आदमी है।" इसके बाद सभी लोग हंसने लगे। सातवें दिन राजीव बहुत स्वस्थ था। वह आसानी से चल फिर सकता था। प्रातः आठ बजे राजीव दोनों राजकुमारियों के साथ गार्डन में टहलने के लिए चल पड़ा। कोठी के बरामदे से निकल कर लगभग एक मील के दायरे में यह राजकीय गार्ड़न अपनी शान के साथ खिलखिला रहा था। देवनगर के महाराजा के आलीशान भवन में महमान बनने पर उसे एक हल्की हंसी आई। क्योंकि कुछ दिन पूर्ण इसी भवन के बाहर ही से उसे भगा दिया गया था। वह ट्यूशन की तलाश में मैनेजर साहब से मिला था लेकिन मैनेजर साहब ठाकुर अभयसिंह ने फाटक के अन्दर तक नहीं घुसने दिया था। उसके चेहरे पर आज व्यंग्य भरी मुस्कान बाहर फूटी पड़ रही थी। वह सोच रहा था कि आज वह इस भवन का अन्तरंग मेहमान ही नहीं अपितु इन लोगों के हृदय में विराजमान है। बार-बार अक्खड़ कबीर की उसी साखी का नायक बन कर यह अपना ही महत्वांकन कर रहा था···।

नयनों की करि कोठरी पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डालके, प्रिय को लिया रिझाय।।

दोनों युवतियों के साथ स्वच्छन्तापूर्ण विहार करते हुए अपने को अन्तरिक्ष का यात्री समझ रहा था। सूर्य की सुनहली किरणें मखमली घास के मोती चुन रही थीं। सामने सफेद संगमरमर के फव्वारे में से

निकली हुई फुहारों पर रोशनी की किरणें पड़तीं तो ऐसा लगता जैसे नीलम और लालमणि पिघल कर जलकण के रूप में बिखर रही हों। फव्वारे के चारों ओर बेंत के सोफे पड़े हुए थे। बहुत देर तक तीनों व्यक्ति फुहारों का आनन्द लेते रहे। उसके पश्चात चपला और राजकुमारी अजीता अजायब घर दिखाने ले गईं। यहां अनेक प्रकार के पशु-पक्षी थे। दोनों राजकुमारियों को देखकर हिरनों के जोड़े दौड़कर आ गये। चपला का हाथ बड़ी चपलता के साथ उनके कोमल शरीर का स्पर्श कर रहा था। राजीव को बड़ा अच्छा लगा और मंत्र मुग्ध होकर कभी चपला की ओर और कभी हिरनों को क्रीड़ाओं को देखने लगा। आगे एक छोटे से टैंक में रंग बिरंगी मछलियां सूरज की किरणों से झिलमिलाती हुई उन्हें देख कर तैरने लगीं। उसके वाद और भी अनोखी वस्तुओं को देखा। यह सब कुछ उसके लिए कौतूहल का विषय बनी हुई थी। थोड़ी दूर आगे चलने पर वह ठिठक गया। उसने देखा सामने एक बड़ा शेर दांत निकाले चला जा रहा है। उसके दहाड़ने से वह कांप गया। राजकुमारी अजीता को हंसी आ गई। बोली "राजीव डरिये नहीं यह शेर आदमखोर नहीं है। हमारा पालतू शेर है।"

"हां राजीव" चपला ने कहा…"भय्या शैलेंद्र ने इसे बहुत छोटे बच्चे के रूप में जंगल से पकड़ा था। हम तो इसके साथ खेलती हैं।" और सचमुच चपला उसके गले से लिपट गई। लेकिन शेर के तेवर चढ़े हुए थे। उसने चपला को बड़े ज़ोर के साथ ज़मीन पर पटक दिया। यह देखकर अजीता ने उसके गाल पर बहुत ज़ोर की चपत जमा दी। शेर दहाड़ने लगा और राजीव पर आक्रमण कर दिया। राजीव पहले से सतर्क था। उसने शेर की गर्दन को कसकर पकड़ने की कोशिश की। अजीता चीखने लगी। शैलेन्द्र ने दूर से देखा और जल्दी से बन्दूक लेकर शेर पर तीन लगातार गोलियां दाग दीं बन्दूक चलने की आवाज़ सुनकर सभी नौकर घटना स्थल पर आ गये। अभय भी वहां पहुंच गया था। शैलेन्द्र अपने प्रिय शेर को दम तोड़ते देख रहा था। उसकी आंखों से

आंसू प्रवाहित होने लगे। अभय नौकरों को हटाने लगा। अजीता अब भी राजीव से चिपकी हुई बेहोश-सी दिखाई दे रही थी। थोड़ी देर बाद लज्जित-सी राजीव से अलग खड़ी हो गई। अभय बड़े क्रोध के साथ अजीता की ओर घूर रहा था। चपला ने शैलेन्द्र के आंसुओं को अपने रुमाल में जज़्ब कर लिया। वह अपने भैय्या के दुःख को समझ रही थी। यह शेर भैय्या को अपनी जान से भी प्यारा था। राजीव इस काण्ड का सम्बन्ध अपने दुर्भाग्य से लगा रहा था। वह सोच रहा था कि उसके कदम जहां भी पढ़ते हैं वहां दैवी प्रकोप होता है। विपत्तियों के बादल के बादल घुमड़ जाते हैं। उसका अस्तित्व एक अपशुकन है। जो भी उसके सम्पर्क में आता है संकट के घेरे में घिर जाता है। चपला ने राजीव के मुख पर अंकित भावों को पढ़ा और वह उसे बड़ी स्निग्ध दृष्टि से देखने लगी। कुछ देर बाद सभी वहां से चले आये।

× × ×

राजकुमारी अजीता कई साल से हिस्टीरिया के रोग से पीड़ित थी। ज़रा-सी भावना में तनाव होता कि उसे दौरा पड़ने लगता। बहुत-से डाक्टरों ने महाराज को सुझाव दिया था कि राजकुमारी की शादी कर देनी चाहिए। कई स्टेट के शौकीन राजकुमारों से राजकुमारी का परिचय कराया गया। लेकिन उनकी शोखियाँ शान-शौकत अजीता को बिलकुल अच्छी न लगती। प्रारम्भ से ही वह आदर्शवादी रही थी और कोमल भावना की पुतली थी। उसे शान-शौकत से चिढ़ थी। पैसे वालों से घृणा। प्यार को आत्मा की प्यास मानती थी, शरीर की भूख नहीं। प्यार के लिए शादी कोई अनिवार्य साधन नहीं। इन्हीं विचारों को महत्त्व दिया था। प्रकृति की गम्भीर होने के कारण उसी आकृति से एक ऐसा सौन्दर्य झलकता था जिसे दिव्यता की संज्ञा दी जा सकती है। इस सौन्दर्य में अजीब जादू था जिससे चंचल और शोख नज़रें जहां एक ओर टकराने के लिए तड़पती रहती थीं तो दूसरी ओर गम्भीर व्यक्ति चांदनी की सी शीतलता अनुभव करता। यही कारण था कि राज़ीव चपला की अपेक्षा

अजीता का पुजारी बनता जा रहा था। एक दार्शनिक की सी शान्ति उसे प्रायः उस समय मिला करती जब वह उससे किसी विषय पर तर्क करता। अजीता के चिन्तन में कोरे दार्शनिक की सी शुष्कता नहीं थी, वहां अनुभूतियों का मधुसिचन भी था। एक कोरा दार्शनिक तो दूसरा मधुर अनुभूतियों से भरा स्पन्दित शान्त सागर जिसमें रहस्यवादी व्यक्ति के समान एक विचित्र आकर्षण था। आज की जो दुर्घटना हुई उसका बहुत गहरा असर अजीता पर देखा जा सकता था। दिन में कई बार वह हिस्टीरिया के दौरे की शिकार हुई। लेकिन बेहोशी दूर होने पर वह शैलेन्द्र भैय्या से सहानुभूति प्रकट करने के लिए व्यग्र हो उठती। रात के नौ बजे सब लोगों ने आग्रह करके शैलेन्द्र को खाना खिलाया तो उसे कुछ शांति मिली। जब सभी लोग अपने-अपने शयन-कक्ष में चले गये तो वह कुछ देर बाद उठी सबसे पहले राजीव के कमरे की खिड़की में झांका। राजीव लेटा हुआ कोई पुस्तक पढ़ रहा था। उसको देखने के बाद शैलेन्द्र के कमरे की खिड़की से जैसे ही झांका वह बड़े कौतूहल के साथ दृश्य देखती रह गई। कमरे में बाग का माली, अभय, दो अन्य नौकर और वह बदमाश जिसने चार दिन पहले अजीता की इज़्ज़त पर हाथ डाला था। वह दिल थाम कर सुनने का साहस करने लगी। शैलेन्द्र भैय्या पूछ रहे थे—

"बाबू अब लंगड़े की हालत कैसी है ?"

"सरकार वह चल बसा।"

"कैसे ? मुझे बताया क्यों नहीं। उसकी लाश का क्या हुआ ?"

"छोटे सरकार ने अपने साथ ले ली थी।"

अभय ने कहा—"हां मैंने उस लाश को सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया है।"

"अच्छा बाबू, अब तुम जा सकते हो लेकिन खबरदार कभी भी शराब के नशे में कोई कमीनी हरकत मत कर देना और आज की बात किसी के कानों तक न पहुंचे वरना…

बाबू चला गया। दोनों नौकरों ने उसे फाटक के बाहर कर दिया और

खुद फाटक पर बन्दूक लिए हुए पहरा लगाने लगे। अब कमरे में सिर्फ माली और अभय ही गये रह थे। अभय की तरफ़ मुखातिब होते हुए शैलेन्द्र बोला---"अभय ! मुझे बड़ा अफसोस है कि बहुत दिनों से तुम ऐसी बातें करने लगे हो जो मुझे बिलकुल पसन्द नहीं। मैंने कई मामलों में देखा है कि तुम मुझ से मशवरा लिए वगैर मनमाती करने लगे हो। मुझे अच्छी तरह याद है कि लंगड़ा अभी मरने लायक नहीं था तुमने या तो उसे कत्ल करा दिया है या मुझसे बेकार का पर्दा रखा जा रहा है। मेरे प्यारे दोस्त उसके बारे में सही सही इत्तला दो।"

शैलेन्द्र भैय्या मैंने जो कुछ किया है तुम्हारी भलाई के लिए किया है। मुझे लंगड़े से डर था कि वह कहीं अस्पताल में जाकर पुलिस का गवाह न बन जाय इसलिए उसे ज़िन्दा ही कटघरे में डाल दिया गया।"

"शेर के कठघरे में ? क्यों बतदमीज हरमाजादे माली के बच्चे तूने भी मुझे क्यों नहीं बताया ?

माली ने कहा—"सरकार जान की माफी चाहता हूं। छोटे सरकार ने ही मुझे ऐसा करने का हुक्म दिया था। अपनी जान की भीख मांगता हूं। सरकारी मुझे कहा गया था कि शेर को तीन दिन तक बकरे का मांस न देना मैंने वैसा ही किया और चौथे दिन ज़िन्दा आदमी शेर के कठघरे में पड़ा तो भूख की वजह से शेर ने उसकी एक-एक बोटी को खा डाला। माली ने कांपते हुए अपना बयान खत्म किया। अजीता बड़ी कठिनाई से अपने ढुलकते जिस्म को सम्हालने लगी।

(क्रोध के साथ) "तो अभय तुम यहां तक पहुंच गये हो। मैं आज घर पर न होता तो बेचारे राजीव को शेर चीर डालता। चपला और अजीता भी नहीं बच पातीं। यह दुश्मनी तुम कब की निकाल रहे हो।"

"शैलेन्द्र भैय्या ! अब बहुत हो चुका। तुमने मुझ पर बहुत बड़े इलज़ाम लगाए हैं। मैं अपराधी ज़रूर हूं लेकिन सभी अपराध तुम्हारी खातिर किये हैं। मैं अगर उस रोज़ तुम्हें खन्दक से न भगाता तो महाराज के सामने तुम्हारे हाथों में हथकड़ी पड़ी होतीं और सारा राज़ खुल जाता।"

थोड़ी देर वह रुका और शैलेन्द्र के चेहरे पर अपनी दृष्टि नत्थी कर दी। शैलेन्द्र का चेहरा एक क्षण के लिए सफेदी से पुत गया। तब अभय और तेज़ स्वर के साथ कुटिलता घोलता हुआ बोला—"मैं अगर लंगड़े को न मरवाता तो यह कोठी आज इस तरह न जगमगाती दिखाई देती। यहां इस समय उल्लू बोलते दिखाई देते। मैं दो दिन पहले ही लंगड़े के बारे में तुम्हें बताना चाह रहा था कि तुम्हें इस मेमने की खातिरदारी से ही फुरसत न थी। ज़रा दिल में सोचिए कि इसमें मुझे क्या मिल रहा है। मैं तो सिर्फ एक ही व्यक्ति की खातिर ज़िन्दा हूं। मुझे कुछ नहीं चाहिए। सिर्फ अजीता का प्रेम और अब सच कहता हूं कि राजीव की खातिर ही मैंने इस रहस्य को छिपा रखा था।"

इतना सुनते ही अजीता बेहोश होकर दीवार के सहारे खिसकती गई थी। उसका जिस्म जमीन पर गिर पड़ा था। शैलेन्द्र की भौंहें टेढ़ी हो गई थीं। ओंठ बार बार फड़क रहे थे। वह चीख पड़ा था···"अभय तुम यहां से दफा हो जाओ। मेरे सामने से हट जाओ मैं अब और ज़्यादा सहन नहीं कर सकता। लेकिन खबरदार। राजीव पर तुमने हाथ डाला तो मैं तुम्हें ज़िदा नहीं छोड़ूंगा। जानते हो राजीव मेरा महमान है।"

"हां हां जानता हूं। खूब जानता हूं और यह भी जानता हूं कि तुम्हें उससे प्रेम हो गया। बना लो उसे बहनोई।"

शैलेन्द्र ने आप ने देखा ताव आगे बढ़ कर एक चांटा अभय के गाल पर रसीद कर दिया। अभय खामोश रहा। दूसरे गाल पर भी जड़ दिया। तब भी खामोश रहा। यद्यपि उसकी आंखों में खून उत्तर आया था। फिर भी वह खामोश रहा। उसकी जड़ता को देखकर शैलेन्द्र को झुंझलाइट हुई। वह खोखली दृष्टि से उसे देखने लगा। तभी तिरछे ओठों पर व्यंग्य भरी मुस्कान नुकीली करता हुआ अभय बोला—

"तबियत भर गई तुम्हारी? यह मेरी पिस्तौल लो और मेरा खून करके अपने अशान्त मन को सहारा दे लो। तुम्हारे सर की कसम मैं उफ़ नहीं करूंगा। तो इस बद को बदी का फल दो।"

यह कहते हुए अभय ने अपना पिस्तौल शैलेन्द्र के सामने फैंक दिया। शैलेन्द्र ने घबराकर अभय को अपनी बाहों में कस लिया। वह पश्चाताप से घुलने लगा था। आंखों से आंसू बहने लगे। अभय ने प्यार के साथ शैलेन्द्र को पलंग पर बिठा दिया और माली से बोला—"देख माली लंगड़े की हत्या का पाप नहीं है। इस लिए अब जा और किसी से भी इस विषय में चर्चा न करना वरना तुम्हारी मौत मेरे हाथों है। समझे ?

माली सकपकाता हुआ अपने क्वार्टर की ओर चला। थोड़ी देर के बाद शैलेन्द्र ने अभय से पूछा-अभय पिता जी और मामा जी जंगल में कैसे आ गये थे ? क्या उन्हें हमारे राज़ का पता चल गया है ? क्योंकि वह तुरन्त ही वहां से सीधे आगरा आये थे और मुझे बड़ी गहराई के साथ घूर घूर कर देख रहे थे।

अभय ने कहा "हो सकता है किसी शत्रु ने उन्हें ऐसी खबर दी हो। वह तो खैरियत रही कि अगले गिरोह के लोगों का निशाना चूक गया वरना हमारे हाथों के तोते ही उड़ जाते।

शैलेन्द्र बोला "क्या उन लोगों में से कोई भी महाराज को नहीं जनता था।

"नहीं। हम दोनों जब वहां पहुंचे हैं तब महाराज कहीं छुप गये थे।

"अभय कभी-कभी सोचने लगता हूं हम इन हरकतों को छोड़ दें और शरीफ बनकर समाज में रहें। एक न एक दिन हमारी बुराई प्रकट हो जाएगी तब हम कहीं के न रहेंगे। महाराज को मैं ऐसा कलंकित मुंह दिखा नहीं सकता। इसलिए प्यारे भाई अब भी समय है कि हम अपने को सुधार लें।"

"भय्या कैसी कायरता दिखाते हो। राजपूत होकर आपको ऐसी बातें शोभा नहीं देतीं। सरकार ने जब हमारी ज़मींदारियां और रियासतें हथियाली हैं तो हम अब क्या करें। शेर को भूखा रखा जाएगा तो वह हिंसक ज़रूर हो जाएगा। दो टके के आदमी सीना तान कर चलें और बहादुर अपनी मूछें नीची कर लें। यह नहीं हो सकता। मेरा वश चले

तो सारे देश के राजपूतों की एक सेना बना लूं जिससे कि फिर राजपूत राज्य स्थापित हो सके। इसके लिए देश के सभी राजकुमारों को एक जगह बुलाया जाए। इस स्कीम के लिए धन की ज़रूरत है और धन इक-ट्ठा करने के लिए यही साधन है।"

"तुम्हें भगवान ने दिमाग खूब दिया है। सच तो यह है कि तुम्हें सौ साल पहले पैदा होना चाहिए था। अब ज़माना काफी आगे बढ़ गया है। रूस में तो किसानों और मज़दूरों का राज्य है। कब तक हम दबा कर रख सकते हैं। हां एक बात ज़रूर है कि जितने भी सेठ लोग हैं उनके यहां से दौलत छीन कर गरीब लोगों को बांट दिया जाए तब तो कुछ देश का भला हो सकता है।"

"घूम फिर के आ गए न फिर धन की बात पर। भैय्या कोई भी बड़ा काम करिए सब में पैसे की ही ज़रूरत है। और एक बात गांठ बांध लीजिए कि हम इतनी दूर बढ़ चुके हैं जहां से अब लौटना बड़ा कठिन है। दूसरे सौ-सौ चूहे खाय बिल्ली हज्ज को चली "हम नहीं करेंगें। अहिंसा परमो धर्म: सिर्फ बनियों को अच्छा लगता है।"

"(हंसते हुए) अच्छा अभय अब जाओ। रात काफी हो चुकी है। हम लोगों को सोना चाहिए। अभय शैलेन्द्र के कमरे से निकलकर अपने कमरे में चला गया। बाहर रात खामोश नज़र आ रही थी। तारे टिम-टिमा रहे थे। सिर्फ सन्नाटे की आवाज़ ही सुनाई देती थी।"

× × ×

लगभग १२ बजे रात को चपला चुपके से उठकर राजीव के कमरे की तरफ चली। राजीव उस समय सो चुका था टेबुल लैम्प जल रहा था। उसके सीने पर किताब उल्ठी पड़ी हुई थी। चपला ने देखा कि राजीव कितना भोला है। वह कमरे की सभी खिड़कियों को खुला छोड़ कर सो गया है। सर्दी में बिना ओढ़े हुए वह सुख के साथ लेटा हुआ है। चपला ने पहले किताब उठाकर शाल से राजीव को कन्धे तक ढक दिया। फिर खुद खिड़कियां बन्द करने लगी। खिड़कियां इतने धीरे से बन्द कीं कि राजीव

की निद्रा उचट न जाए। वह राजीव के सिरहाने खड़ी हो गई। बहुत देर तक भावविभोर सी उसे देखती रही। उसके भोलेपन को देखकर उसे लगा जैसे कोई फरिश्ता सो रहा हो जो शक्ल सूरत से इन्सान होने पर भी स्वर्ग का देवता मालूम पड़ रहा था। मानो झिलमिलाते हुए प्यार का संदेश वाहक हो जिसके माथे पर आशा का सितारा चमक रहा हो वह राजीव के पलंग पर बैठ गई। धीरे से राजीव के माथे को चुम लिया। उसे अपने सीने के अन्दर प्यार की पवित्र आग जलती महसूस होने लगी। राजीव उसके दिल में ऐसे आया जैसे स्वर्गीय अतिथि आकाश से उतरा हो। उसकी इच्छा होने लगी कि राजीव के चरणों से लिपट जाए। राजीव अपने पंखों से उसे दबाता जाए दबाता जाए। वह अपने पावन करों से उसके केशों को सुलझाए पविश्र उच्छवासों के कोमल स्पर्श से उसकी आखों की पाखें कमल दल के समान खिल जाएं। वह उसकी सांस का स्पर्श अपनी आंखों पर तब तक महसूस करती रहे जब तक उसकी पवित्र आत्मा मृतक खोल को अलग करके प्यार की आवाज़ करती हुई अग्नि शिखा की तरह स्वर्ग की ओर उठने लगे। वह इसी तरह की कल्पना में लीन थी कि कमरे के पीछे कुछ सरसराहट की आवाज़ उसने सुनी। वह चौकन्नी हो गई। कौन है, उसने चीखकर पूछा। कोई आदमी भागता हुआ मालूम हुआ। चपला ने एक विश्वस्त सिपाही को कमरे का पहरा लगाने के लिए तैनात किया। एक बार फिर राजीव को स्निग्ध दृष्टि से निहारा और फिर अपने कमरे की तरफ चल दी। हारसिंगार के फूल मह-कने लगे थे। हर सांस में ताज़गी थी लेकिन मन अज्ञात आशंका से कांप रहा था। आज पहली बार उसे ऐसा भय महसूस हो रहा था। उसने अपनी दीदी के कमरे में प्रवेश किया। हल्की रोशनी हो रही थी। उसे पलंग पर दीदी नज़र नहीं आई। वह सन्नाटे की हालत में पड़ गई। बरा-मदे में आकर उसने चारों तरफ नज़र दौड़ाई। फिर शैलेन्द्र भैय्या के कमरे की तरफ चल दी। कमरे में झांक कर देखा। शैलेन्द्र सो रहा था। वह वहां से वापस चल दी लेकिन खिड़की के पास उसे कुछ दिखाई

दिया। बड़ा साहस करके वह निकट पहुंची। देखा दीदी बेहोश पड़ी है। नौकरानी की सहायता से अजीता को उठाकर लाई और पलंग पर लिटा दिया वह उसे होश में लाने का प्रयत्न करने लगी। बड़ी देर बाद उसे होश आया। आंखें खोलते ही बड़बड़ाने लगी। "प्यारे राजीव तुम अभी चले जाओ। लोग तुम्हारे खून के प्यासे हैं।" इतना कहकर वह फिर खामोश हो गई। चपला की समझ में कुछ नहीं आया। उसने दीदी को सचेत करने का प्रयत्न किया। अजीता फिर होश में आ गई। चपला की आंखों में आंसू देखकर वह कहने लगी—

"बुजदिल कहीं की। रो क्यों रही है। देख मैं ठीक तो हूं। चपला अरी पगली। इसलिए रो रही है न कि मैं राजीव से दूर जा रही हूं। छीः छीः छीः चपला तुम राजीव की रक्षा···। देखो मैं जा रही हूं। स्वर्ग में राजीव की राह देखूंगी। "इतना कहते ही फिर दौरा पड़ा। अबकी बार वह जबरदस्त था। हार कर चपला को फोन उठाना पड़ा। डाक्टर दौड़ा चला आया। उसने परीक्षा की। चपला को बताया कि इन्हें किसी बात पर ज़बरदस्त सदमा पहुंचा है। दवा की जगह दिल बहलाने का ज़्यादा ध्यान रखना चाहिए। इसी कारण बड़ा तेज़ बुखार है। दिल की हालत काबू से बाहर होती जा रही है। इन्हें कभी अकेले नहीं रहने देना चाहिए। डाक्टर दवा का सेवन कराके बहुत देर तक बैठा रहा। काफी देर बाद अजीता ने फिर आंखें खोलीं। वह बोली······

"डाक्टर मैं बिल्कुल ठीक हूं। आप इस वक्त यहां कैसे ?"

"जी आप बिल्कुल ठीक हैं। सिर्फ यही खैरियत मालूम करने के लिए आया था।" वह उठा और नमस्ते कहते हुए बाहर चला गया। चपला बहुत देर तक दीदी से बातें करती रही। अजीता को लगभग दो बजे नींद आ गई। वह नौकरानी को सब बातें समझा कर अपने कमरे में चली गई। पलंग पर लेटी लेकिन नींद नहीं आ सकी। अजीब कशमकश में थी वह। राजीव जिसे वह सिर्फ अपना समझती थी, उसकी आत्मा ने वर्षों भटकने के बाद एक सहारा पाया था। मन में दीपक जला कर उसने राजीव

को देखा था। क्या उसकी चाहत, उसका प्यार अन्धकार का प्रश्न बनकर रह जाएगा। उसकी दीदी क्या सचमुच राजीव को प्यार करने लगी है। या यह बुखार का सन्निघात है। राजीव का जानी दुश्मन कौन है? भैय्या? नहीं, नहीं, नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। फिर दीदी को कौन-सा गहरा सदमा पहुंचा है। अवश्य कोई बात ज़रूर है जिसका राज दीदी को मालूम है। फिर इतना पूछने पर भी उन्होने बतायाया नहीं। उसे दीदी पर तरस हो आया। दीदी के लिए वह सब कुछ कुर्बान कर सकती है। वह पलंग से उठी और धीरे-धीरे राजीव के कमरे की तरफ फिर चल दी। दिल की हलचल पर वह काबू नहीं कर पा रही थी। बाहर नौकर पहरा दे रहा था। उसे आराम करने के लिए आदेश दिया और कमरे में चली गई। राजीव अभी तक सो रहा था। शायद कोई अच्छा स्वप्न देख रहा था। क्योंकि चेहरे पर आनन्द की झलक स्पष्ट थी। चपला उसे जगाना चाहती थी। उसने धीरे-धीरे सिर पर अंगुलियां फेरना शुरू कर दिया। राजीव ने अपनी आंखें खोलीं और अवाक् देखता रह गया। "राजकुमारी! आप इस वक्त? और यहां।"

"हां, राजीव मैं ही हूं लेकिन मुझे गलत मत समझना। मैं बहुत ज़रूरी काम से मिलने आई हूं।"

"आज्ञा दीजिए," उठते हुए राजीव ने कहा।

"राजीव!" चपला की आंखों में आंसू झलकने लगे।

"राजकुमारी यह क्या? आप रो रही हैं! क्या मुझ से कोई गलती हुई है।"

"नहीं राजीव आप मेरे लिए फरिश्ता हैं। आपकी आंखों से स्वर्ग का प्रकाश झलकता है। मेरे प्राण उसी से प्रकाशित हैं। आपका बोलना देवदूत के पवित्र परों की सरसराहट है। आपका व्यवहार आत्मा को शान्ति देता है। आपके रूप और आत्मा ने ऐसा इन्द्र जाल बुना है जिससे सौन्दर्य छन कर चांदनी की तरह मेरे हृदय में बिछल गया है। उसकी रोमांचकारी खामोशी आशा के अनगाए गीतों के साथ बजने लगती है।

मैं उसी संगीत को सुनती हूं और उसकी मस्ती में तुम्हें अपना समझने लगती हूं।

"राजकुमारी ! यह आप क्या कह रही हैं ? आप कुछ अस्वस्थ-सी हैं। चलिए मैं आपको आपके शयन-कक्ष में पहुंचाए देता हूं।"

"नहीं राजीव ! मुझे आज आखिरी बार दिल की बात कह लेने दीजिए। मैं क्या कहूं। दिल जो महसूस कर रहा है ये शब्द नहीं कह पा रहे। शब्द कितने लाचार हैं राजीव। प्यार के आनन्द रूप में ये जीवित नहीं रह पाते। राजीव जब मैं तुम्हारे पास आती हूं तो मैं अपने अन्दर की नाशवान सभी चीजों को दूर फेंक कर आती हूं। विश्वास करो मेरा प्यार पवित्र है। मैंने विचारों को धो-पौंछ कर साफ कर लिया है। यद्यपि मैं समझती हूं कि आपकी महान आत्मा के योग्य नहीं फिर भी मैं आपकी आंखों में देखने का साहस करती आई हूं। यह मेरी कमज़ोरी है। राजीव मुझे क्षमा कर दो। अब मैं कभी भी इस तरह नहीं देखूंगी। सिर्फ एक बार मेरी आंखों को अपने हाथों से छू लो। फिर मैं अपनी आंखों को बन्द कर लूंगी। मेरे लिए अमर प्यार अनजाने में कभी देखे हुए स्वर्ग के मधुर क्षणों की यादगार बन जाएगा।"

"राजकुमारी ! ऐसा न कहो। मेरा प्यार कितना अकिंचन है और आपना अधिकार कितना ज्यादा। मैं लोगों से लेता ही आया हूं बदले में कुछ नहीं दे सका।"

"राजीव, आप सब कुछ दे सकते हैं। आपने मेरी दीदी को प्राण दिए हैं। आज फिर दीदी संकट के क्षणों में है। मैं दामन फैलाकर आपसे भिक्षा मांगती हूं। क्या आप नहीं देंगे ?

राजीव मौन रहा।

"राजीव आप खामोश क्यों हैं ? क्या मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं होगी।"

"राजकुमारी जो कुछ मेरे पास है। मैं उसका स्वामी नहीं। वह दूसरों का है। आप आज्ञा दीजिए मैं क्या सेवा कर सकता हूं।"

राजीव ने डरते हुए कहा।

चपला की आंखों में आशा की रोशनी दिखाई देने लगी। उसने राजीव की ओर सकरुण दृष्टि से देखा और फिर कहने लगी—"राजीव दीदी वर्षों से हिस्टीरिया की शिकार है। इधर एक बात और हुई है। वह यह है कि वे आपसे···आपसे प्यार करने लगी हैं। मेरे राजीव। मैं पत्थर का दिल बनाकर तुम्हें यह सन्देश दे रही हूं। राजीव चौंक क्यों रहे हो। चेहरे पर भगवान के लिए ऐसे भाव मत दिखाओ। राजीव मैं इसे देखने का ताव नहीं रखती। मेरे अच्छे राजीव दीदी को···दीदी को···अपना लो और मुझे बिल्कुल भूल जाओ। जैसे हम दोनों कभी मिले ही न हों। मेरे लिए बीते मधुर क्षण काफी हैं। मेरे देवता।"

"राजकुमारी! यह नहीं हो सकता। तुम नहीं जानती कि मैं कितना लाचार इंसान हूं। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। मैं किसी का नहीं हूं। बेसहारा हूं। किनारा नहीं बन सकता। मैं राजकुमारी अजीता से क्षमा मांग लूंगा। मुझे आशा है कि वे मेरे अनजाने में हुई गलती को माफ कर देंगी।"

"लेकिन राजीव डाक्टर ने कहा है कि बिना प्यार के वे जीवित नहीं रह सकती। प्यार की निराशा उनका खात्मा कर देगी।"

"फिर मैं क्या कर सकता हूं। राजकुमारी! आप जो कुछ कहेंगी मैं कर दूंगा।" बड़ी उदासी भरे लहज़े में राजीव ने उत्तर दिया।

सुबह के लगभग पांच बज चुके थे। दोनों वहां से उठकर अजीता के कमरे की तरफ गए। राजीव पलंग के पास पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गया। अजीता अभी सो रही थी। थोड़ी देर के बाद उसने करवट बदली। आंखें खोलकर देखा। राजीव को बैठा देखकर पहले प्रसन्नता की लहर दौड़ी और फिर वह कहीं विलीन हो गई। राजीव ने चपला के निर्देशन के अनुसार ही दवा पिलाने के लिए अजीता को अपने हाथों से बिठाया। अजीता की देह थर-थर कांपने लगी। उसने आंखें बन्द करके स्पर्श-सुख का मन ही मन अनुभव किया। राजीव के हाथों उसने दवा पी। अब वह

पूरे होश में थी।

× × ×

राजीव स्वस्थ होकर होस्टल चला गया। आज कई दिनों के पश्चात् वह अपनी यथार्थ स्थिति में लौट आया था। शाम को वर्मा जी की कोठी पर गया। वर्मा जी बगीचे में बैठे हुए थे। उनके पास वाली कुर्सी पर प्रोफेसर श्याम मनोहर शुक्ल विराजमान थे। प्रोफेसर वर्मा के यहां राजीव ने इन्हें पहली बार ही देखा था। साहित्य-विभाग के अध्यक्ष होने के कारण राजीव उनसे ज्यादा परिचित नहीं था। राजीव को निकट बुलाकर बड़े प्यार के साथ उसके विषय में पूछते रहे। उन्होंने प्रो० शुक्ल से उसका परिचय कराया। राजीव इससे पूर्व अपने एक दोस्त से प्रो० शुक्ल के सम्बन्ध में कुछ सुन चुका था। जब वह वापस लौटा तो प्रोफेसर शुक्ल भी उसके साथ हो लिए। रास्ते में शुक्ल जी ने राजीव को अपने घर ले जाने का आग्रह किया। वह विवश होकर उनके साथ चल दिया। घर करीब दो फर्लांग की दूरी पर था। रास्ते में बारबार शुक्ल जी अपने घर की तारीफ करते जा रहे थे। घर पुराने फैशन का बना हुआ था। दरवाज़े में घुसते ही ड्योढ़ी में दो दरवाज़े अन्दर की ओर थे। एक जनाने भाग के लिए दूसरा शुक्ल जी के ड्राइंग रूम के लिए था। मकान क्या था सचमुच दर्बाखाना था जिसके अन्दर परिवार के सदस्य मुर्गे मुर्गियों की तरह भरे हुए थे। ड्राइंग रूम में बैठते ही शुक्ल जी ने शुतुर्मुर्ग जैसी लम्बी गर्दन को ऊपर उठाया जिस पर कुल्हड़ जैसा चेहरा लटका दिखाई दिया। अधिक फैले हुए ओंठ खोले और एक आवाज़ घर में गूंज गई—"गीता।"

"आई पापा"—कहती हुई एक लड़की दाखिल हुई जो स्कर्ट और फ्राक पहने हुए थी। आयु लगभग बारह साल थी। नक्शे में बिल्कुल शुक्ल जी का चेहरा था।

"यह मेरी सब से छोटी बच्ची है। हाईस्कूल में पढ़ती है।"

लड़की ने आते ही गुड ईवनिंग कहा और सैलूट करने की मुद्रा में खड़ी हो गई। राजीव ने देखा कि शुक्ल जी मुस्करा रहे हैं। इसके बाद

उन्होंने अपनी सारस जैसी लम्बी टांगों को फैला कर एक स्टूल पर रख लिया। इसी बीच कन्धे को कई बार उठाया और गिराया। राजीव के चेहरे पर कुछ परेशानी पढ़ते हूए फिर उसी गर्दन को उठाया और अबकी बार—"रंजन का शब्द गूंजा, जी डैडी, कहता हुआ एक दस वर्ष का बालक लैफ्ट-राइट करता हुआ दाखिल हुआ। राजीव के बिलकुल सामने खड़ा हुआ और फौजी सैलूट दिया। राजीव भौंचक्का रह गया। एबाउट टर्न करके उसने डैडी को सैलूट दिया।" राजीव की परेशानी की इंतहा तब हुई जब कि प्रो० शुक्ल जी सैलूट लेने के लिए सचमुच खड़े हो गए। बाकायदा दोनों ने फौजी अदब के साथ हाथ मिलाया। इसके बाद वह अपनी बहन के निकट खड़ा हो गया। मुस्कराते हुए प्रो० शुक्ल जी ने कहा—"यह मेरा सबसे छोटा लड़का है। सातवीं जमात में पढ़ता है।" इसके बाद "सुनीता की पुकार हुई। सुनीता बड़ी खामोशी के साथ कमरे में दाखिल हुई और दोनों हाथ बांधे हुए राजीव को नमस्ते की। लगभग १७ वर्ष की इस लड़की में बिल्कुल सादगी नज़र आई। भोला-सा चेहरा जो अपनी गम्भीर आंखों के साथ अपने पिताजी की ओर घूमी और मंत्र-वत हाथ जोड़े हुए ही नमस्ते की। राजीव को यह लड़की कुछ अच्छी लगी। शुक्ल जी ने भी हाथ जोड़कर नमस्ते की और फिर मुस्कराने लगे। यह लड़की अपने छोटे भाई और बहन के बिल्कुल सामने दूसरी ओर खड़ी हो गई। यह मेरी दूसरी लड़की है। इण्टर में पढ़ती है। इसके बाद शुक्ल जी ने सुनील को पुकारा। सुनील, छापा तिलक लगाए गीता के श्लोक का उच्चारण करते हुए दाखिल हुए। सर पर चोटी कुर्ता और धोती पहने हुए थे। आयु लगभग चौदह-पन्द्रह साल होगी। एक छोटी-सी प्याली में चन्दन घिसा हुआ था। आते ही राजीव के मस्तक पर तिलक लगाया और दण्डवत प्रणाम किया। राजीव बड़ा हैरान और परेशान नज़र आ रहा था। सुनील ने उसके बाद अपने पूज्य पिताजी को भी तिलक लगाया और फिर चरण स्पर्श करके सुनीता की बगल में खड़ा हो गया। राजीव ने दोनों पार्टियों की ओर बारी-बारी से देखा। वहां एक दूसरे के

प्रति तिरस्कार की भावना नज़र आई। शुक्ल जी ने बताया कि सुनील देव पुराण और मनुस्मृतियों का अध्ययन कर रहा है। गुरुकुल कांगड़ी की स्नातक परीक्षा में बैठा है। तख्त पर सोता और वक्त पर उठता है। ब्रह्मा मूहूर्त में श्लोकों का उच्चारण करके सभी को जगा देता है। घड़ी में अलार्म भरने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके बाद "नीना" को पुकारा गया और शुक्ल जी जम्हाई लेते हुए अपनी टाई से खेलने लगे। कुछ देर तक सस्पेंस बना रहा। थोड़ी देर के बाद एक बीस वर्षीय अत्याधुनिक युवती कमरे में दाखिल हुई जिसके बाल कन्धे तक कटे हुए थे। कमीज़ और पैंट पहने हुए थी। उसने आते ही "हल्लो डैडी" कहते हुए हाथ मिलाया और अंग्रेज़ी में प्रो० शुक्ल से मिज़ाज पुर्सी की। उसके बाद वह उनकी टाई से खेलने लगी। शुक्ल जी ने राजीव का परिचय दिया तब वह राजीव से मुखातिब होती हुई पूछने लगी—"हलो मिस्टर राजीव हाऊ आर यू।" राजीव अजीब-सी झेंप महसूस करने लगा। उसे लगा कि इन पागलों के बीच सचमुच वह अजायबघर की वस्तु बन गया है। उसके बाद नीना बड़े ज़ोर के साथ हंस पड़ी। उसकी हंसी का साथ सुनील और सुनीता के अतिरिक्त सभी ने दिया। इसके बाद वह मिस्टर रंजन के पास खड़ी हो गई और राजीव को देखती हुई मुस्कराती रही। राजीव ने देखा कि दोनों पार्टियों में कुछ तनाव-सा बढ़ता जा रहा है। इसके बाद ही शुक्ल जी ने बताया कि नीना मैडीकल कालेज में पढ़ती है। राजीव का वश चलता तो वह तितली बनकर उड़ जाता। इसके बाद प्रो० यकायक उठ खड़े हुए। राजीव कौतुहल के साथ देखने लगा कि बाज़ीगर अब क्या तमाशा दिखाता है। शुक्ल जी ने अपनी टाई खोली और उसे हैंगर पर टांग दिया। उसके बाद कोट उतारा। दूसरा कोट पहना। शायद यह खद्दर का बन्द गले का कोट था। उसके बाद सोफे पर बैठ गए। अब राजीव शुक्ल जी के बिलकुल निकट था। धर्मवीर को पुकारा गया। राजीव बड़े कौतूहल के साथ आने वाली मुसीबत को देखने लगा। इतने में लगभग बाइस वर्ष का युवक दाखिल हुआ, खद्दर का कुर्ता उस पर

जवाहरकट वास्कट चूड़ीदार पाजामा और सिर पर गान्धी कैप। उसने नेतागीरी की शान में हाथ हिलाया और राजीव के पास बैठ गया। शुक्ल जी अपने इस पुत्र से नवीन समाचार पूछते रहे। वह राजनीतिक विषयों पर टीका टिप्पणी के साथ जवाब देता रहा। राजीव मन में सोच रहा था कि किस गुनाह के कारण वह इतनी बड़ी सज़ा भुगत रहा है। इसके बाद उसने देखा कि कमरे में एक प्रौढ़ा प्रवेश कर रही हैं। राजीव उन्हें देखते ही पहचान गया कि यही धरती माता है जिनकी रंग-बिरंगी खेती इस कमरे में लहरा ले रही है। राजीव ने उठकर हाथ जोड़ कर नमस्ते की। आशीर्वाद सुना और उनके विराजमान होते ही वह बैठ गया। शुक्ल जी बोले—"यह मेरी धर्म-पत्नी हैं। (बच्चों की ओर घूमते हुए) अच्छा तुम लोग अब जाओ।" पहले फारवर्ड ग्रुप ट्विस्ट करता हुआ बाहर निकला फिर दूसरा जुलूस। अब कमरे में केवल चार व्यक्ति रह गए थे। मिसेज शुक्ल स्थूलकाय थीं। ऐसा मालूम होता था कि दूध की मलाई उतार कर खुद खा लेती होंगी। बातों-ही-बातों में शुक्ल जी ने बताया कि यह उनकी लव मैरिज थी। बातों के ही बीच में उन्होंने कई बार अपने कन्धे ऊपर उचकाए और गिराए। इसके बाद नौकर ट्रे में काफी बनाकर लाया। काफी के दौर के बीच प्रोफेसर साहब किसी ख्याल से चौंके और गर्दन लम्बी की। इसके बाद नीना को पुकारा गया। नीना दौड़ती हुई आई। प्रोफेसर साहब बोले—"नीना ज़रा मेरा पाइप तो लाना।" नीना ने ज़रा-सी देर में पाइप लाकर दे दिया। फिर शुक्ल जी ने राजीव से मुखातिब होकर पूछा—"जानते हो राजीव। यह पाइप कहां का है? अरे भई! इसकी हिस्ट्री भी बड़ी दिलचस्प है। वैसे मेरे बड़े भाई देहली यूनिवर्सिटी में डिपार्टमेंट के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हैं। इससे पहले वे इलाहाबाद में थे। इलाहाबाद में बड़े भाई का बंगला। यहां अक्सर बड़े-बड़े साहित्यिक लोगों की बैठकें हुआ करती थीं। वहीं मेरा परिचय महाकवि निराला, पन्त, महादेवी वर्मा आदि से हुआ और यह परिचय घनिष्टता में बदलता गया। वहीं उर्दू के फिराक साहब से भी मुलाकात हुई। एक बार मैंने

इन्हीं लोगों के सामने अपनी एकांकी रचना सुनाई। उसे सुनकर डा० वर्मा खुशी के साथ उछल पड़े। अरे मुन्ना भाई! तुमने तो मुझे एक नई दिशा सुझा दी है। इस तरह के एकांकी मैं भी लिखूंगा।" सच राजीव! अगर मैं एकांकी लिखता रहता तो दुनिया के साहित्यकारों में मेरे प्रयोगों की बड़ी इज़्ज़त होती। लेकिन उन दिनों मैं भावुकता में वह गया और एक सहपाठी लड़की से मेरा प्रथम प्रेम हुआ। इसी वजह से मैंने हिस्ट्री विषय छोड़ दिया और हिन्दी पढ़ने लगा। लेकिन वह लड़की छलना बन कर किसी दूसरे की हो गई। खैर, जाने दो इन बातों को मैं कहां-से-कहां पहुंच गया। तो मैं कह रहा था कि पाइप की हिस्ट्री बड़ी दिलचस्प है। एक बार मैं गर्मियों की छुट्टियों में पहाड़ों पर गया। वैसे मैं हर साल पहाड़ों पर जाया करता हूं। मैं शुरू से ही आज़ाद ख्याल का रहा हूं। यू० पी० के प्रोग्रेसिव चिन्तकों में मेरा नाम भी लिया जाता रहा है। मैं पैसे को कुछ भी महत्व नहीं देता। पैसा कमाता हूं तो खर्च करना भी जानता हूं। डैड मनी हमारे देश को पीछे किए हुए हैं। पैसे का सर्क्यूलेशन होना चाहिए। कुछ हमारे साथी ऐसे भी हैं जो कमाना ही जानते हैं। खर्च करने में जान निकलती है। हां फिजूल खर्ची मुझ से नहीं होती। एक बार इसी साल बच्चों ने पिक्चर देखने का बड़ा आग्रह किया। पिक्चर हाल हमारे यहां से सिर्फ ५ मील दूर है। मैंने सोचा बच्चों की इच्छा पूरी कर दूं। पूरे घर के साथ हम पैदल टहलते हुए चल दिए। वैसे नीना ने कई बार कार खरीदने के लिए मुझे दर्खास्त लिखने पर मजबूर कर दिया है। यह बात नहीं कि मैं कार खरीद नहीं सकता। मेरा बैंक बैलेंस ६० हज़ार रुपए हो चुका है लेकिन उसूल की खातिर मैं कार नहीं खरीदना चाहता। महात्मा गाँधी क्यों पैदल चलते थे? वे अधनंगे क्यों रहते थे? भई वे उसूल के कारण ही ऐसा सादा जीवन अपनाए हुए थे। इस बड़े देश के ६५ फीसदी आदमी भूखे, अधनंगे पैदल चलने वाले हैं। फिर हम कार में बैठ कर शान दिखायें तो इन्सानियत कहां रहेगी? सारी दुनिया माने या न माने मैं तो गान्धी जी को मार्क्सवादी मानता हूं।

राजीव के मन में आया कि कह दे कि महाशय क्यों पूर्व-पच्छिम, उत्तर-दक्षिण आसमान और ज़मीन सभी को मिला कर एक किए जा रहे हो ? लेकिन प्रथम परिचय में ऐसा कहना अभद्रता होती। थोड़ी देर बाद वे फिर बोले—"हां मैं कह रहा था कि हम लोग पैदल जा रहे थे। उधर से जो भी कालेज का लड़का मिला बड़ी इज्ज़त के साथ प्रणाम करता गया। ये कालेज के लड़के भी कैसे होते हैं ? ज़ब भी अकेला चलता हूं तो काइयां काटकर चले जाते हैं लेकिन जब भी नीना वगैरह के साथ होता हूं तो झुक-झुक कर प्रणाम करते हैं। जानते हो क्यों ? भई सीधी-सी बात है कि मेरे रौब के कारण सामने आने की हिम्मत भी नहीं करते लेकिन ये लड़के भी साइकोलौजी जानते हैं कि परिवार के सामने कितना ही कोई सख्त पत्थर आदमी हो मोम हो ही जाता है। इसलिए उनकी इतनी हिम्मत होती जाती है। इसकी सबसे बड़ी मिसाल तुम्हारे ही सामने है कि यहां तुम से जिस तरह बातें कर रहा हूं उससे तुम स्वप्न में भी नहीं सोच सकते कि मैं वही प्रोफेसर हूं जिससे लड़के थरथर कांपते हैं। अभी कुछ दिन पहले प्रिंसिपल साहब ने स्टाफ की एक विशेष मीटिंग बुलाई थी जिसका एजेंडा था—अनुशासनहीनता। बारी-बारी से सभी प्रोफेसर लोगों ने विचार प्रकट किए। फिर प्रोफेसर वर्मा कहने लगे—"अनुशासन-हीनता का मुख्य कारण यह है कि स्थानीय राजनीतिक नेता अपना उल्लू सीधा करने के लिए विद्यार्थियों को अपना साधन बना लेते हैं। इतना ही वे कह पाए थे कि मैं तिलमिला गया और मुझ से रहा नहीं गया। मैं झट से उठकर वर्मा जी के विचार का खण्डन करने लगा। मैंने कहा कि जो कीमती-कीमती सूट, चमकते हुए सफेद कालरों पर अच्छी-अच्छी टाइयाँ और विलायती मौज़ों पर शीशे की तरह चमचमाते हुए जूते पहन कर कालेज आता है। उन लोगों को देखकर लड़कों की साइक्लौजी अजीब होती है। वे देखते हैं कि उनके असाधारण कपड़ों के कारण लड़कियां उन पर जान छिड़कती हैं। यह अत्याचार नहीं तो क्या है ? गरीब लड़कों के मन में असन्तोष भर जाता है। तभी स्थानीय नेताओं को उन्हें उछालने

का साहस होता है। इतना ही मैं कह पाया था कि कुछ नौजवान साथी बौखला उठे। सच्चाई हमेशा कड़वी होती ही है। एक ने कहा—"बड़ा महात्मा गांधी का चेला बना है।" बस यह सुनना ही था कि मेरी नसें तन गईं। खून खौल उठा। बड़ी जोर के साथ टेबुल पर मुक्का मारकर मैंने कहा—"बड़े शर्म की बात है कि पढ़े-लिखे लोगों के ऐसे नीच ख्यालात हैं। फिर मैंने महात्मा गांधी की फिलासफी पर एक भाषण दे दिया।" लोगों को सचेत करते हुए "भाइयो यह न समझो कि मैं किसी विवशता के कारण सादगी पर ज़ोर दे रहा हूं। आप अगर ऐसा सोचते हैं तो बड़ी भूल करते हैं। क्योंकि आज भी मेरे वार्ड रोब में ऐसी टाइयां हैं जिनको आप क्या आपके पुरखों ने देखा तक न होगा।' फिर मैंने चलते-चलते हुए कहा—"मैं हमेशा सूट पहनता रहा हूं लेकिन उसूल के कारण कालेज में कभी सूट पहन कर नहीं आता। हमें बलिदान की भावना रखनी चाहिए। उसूल के पीछे गान्धी जी ने इतना बड़ा त्याग किया, क्या हमें नहीं करना चाहिए? ज़रूर करना चाहिए। राजीव ने देखा कि शुक्ल जी के अन्दर एक ऐसा तनाव है जिसके कारण वह कुछ भयभीत हो गया और सोचने लगा कि उनका व्यवहार कतई नार्मल नहीं। तभी हाथ जोड़कर जाने की अनुमति मांगी। लेकिन उन्होंने उसी तनाव की स्थिति में उसे ऐसा पकड़ा जैसे किसी ने संडासी से उसकी कलाई को दबा दिया हो। वह चुपचाप बैठ गया इसके फौरन बाद बड़े आवेश में गीता को पुकारते हुए कहा—"गीता ज़रा मेरी छड़ी तो लाना" अभी तक वे हाथ कस कर पकड़े हुए थे। मन में एक विचार आया कि छड़ी किस लिए मंगाई जा रही है? क्या यहां अतिथि की मेहमानदारी का आखिर दस्तूर छड़ी द्वारा सम्पन्न किया जाता है? दिल बड़े ज़ोर से धड़कने लगा। ज़रा-सी हिम्मत करके मैंने अपना हाथ छुड़ा लिया और एक नज़र कमरे के दरवाज़े की तरफ डाली। फिर धर्मवीर के चेहरे का अध्ययन किया लेकिन वहां कोई विशेष चिन्ता आदि का भाव नज़र नहीं आया। मिसेज़ शुक्ल जी की मुस्कराहट ने भी कुछ हिम्मत बढ़ाई। थोड़ी देर बाद गीता छड़ी लेकर आ गई। तब

तक शुक्ल जी का तनाव खत्म हो गया था। छड़ी हाथ में लेकर वे उसका अवलोकन करने लगे और फिर कुर्सी के सहारे टिका कर पाइप उठाने लगे। हां भई ! तुम्हें मैं इस पाइप की हिस्ट्री बता रहा था। शिमला में जिस होटल में मैं ठहरा हुआ था। उस में बड़े-बड़े लोग ठहरे हुए थे। मेरे बगल वाले कमरे में जो सज्जन ठहरे थे उनकी सैलरी ३००० रु० मासिक थी। दूसरे कमरे में एक नवयुवती थीं जो एक करोड़पति सेठ की सुपुत्री थीं। तीसरे कमरे में लार्ड माऊंट वेटन के प्राइवेट सेक्रेटरी के हैड कुक के भतीजे ए० आर० डे० थे। जो इस समय बम्बई के एक होटल में मैनेजर हैं और ४००० रु० मासिक वेतन पाते हैं। इत्तफाक की बात है कि मेरी बर्थडे उसी बीच में पड़ने वाली थी। मैंने उनसे यों ही ज़िक्र कर दिया। बस बात की बात में उस दोस्त ने मेरी वर्थडे मनाने का सारा प्रोग्राम बना लिया। आह ! वह शाम कितनी रंगीन थी। मैं बयान नहीं कर सकता। मेरे उस दोस्त ने महफिल में आने वालों को ऐसा अचम्भे में डाल दिया कि सभी दंग रह गए।। वैसे तोहफे तो बहुत मिले लेकिन दो तोहफे जिनकी हिस्ट्री है वो यहीं हैं—एक पाइप दूसरी छड़ी। मि० डे० ने बड़े-बड़े रईसों को दावत पर बुलाया था। जब उन्होंने यह पाइप मुझे भेंट किया तो लोगों ने इसकी हिस्ट्री जाननी चाही। तब उन्होंने बताया कि यह लार्ड घराने का वह पाइप है जो महारानी विक्टोरिया की ताजपोशी के दिन कम्पनी के लार्ड को पेश किया था। यह छड़ी महाराजा आफ सेतपुर ने भेंट की थी, इस छडी का निर्माता छड़ी पेश करने के लिए जब महाराजा के पास गया तो उन्होंने इसकी कीमत ५००/ रुपये दी थी।

बर्थडे की पार्टी में ह्विस्की चली तो लोगों ने मुझे भी पीने के लिए मजबूर किया। मि० डे० भारतीय ईसाई थे लेकिन उनकी मिसेज़ इंग्लैण्ड की हैं। जब उन्होंने आग्रह किया तब सभी लोगों ने तालियां बजाईं और कर्टसी सेक मैंने एक पैग लिया। मैं विचारों से महात्मा गान्धी का अनुयायी हूं लेकिन खान-पान में स्वतन्त्र प्रकृति का हूं। इसके बाद हाई

स्टेक पर ब्रिज का खेल हुआ, मैंने दूसरे दिन सुना कि उस रात पलड़ा मि० डे० का भारी रहा उन्होंने लगभग ५००० रु० अपनी मिसेज़ की पार्टनर-शिप में जीते।

प्रोफेसर साहब फिर मूड में आ गए थे और लग रहा था कि अब की बार कोई दूसरी ही समस्या सामने आएगी लेकिन दीवार घड़ी ने टन-टन करके आठ बार जब चौंकाया तो मिसेज़ शुक्ला ने राजीव को मुक्त करने की सिफारिश की। वह जब सभी को कुहनी तक हाथ जोड़ कर नमस्ते करके घर से बाहर निकला तो उसने ईश्वर को बार-बार धन्यवाद दिया। उस समय रात हो चुकी थी। सड़क पर चहल-पहल थी। उस दम घुटन वाले वातावरण से मुक्त होकर जब ठण्डी हवा का स्पर्श मिला तो उसे लगा जैसे एक सख्त कैद से रिहा होकर आया हो। अतः बाहर का वाता-वरण एक क्षण के लिए अजनबी-सा लगा।

राजीव जब होस्टिल पहुचा तो रात के ९ वजे थे। कमरे में दाखिल होते ही उसे एक लिफाफा मिला। उसे उठा कर खोला। पत्र निर्मला का था—

राजीव,

तुम जब से गए हो कोई पत्र मुझे नहीं भेजा। ऐसा लगता है कि मेरी किसी भूल से तुम्हें बहुत दुःख हुआ हो। इतना तो मैं जानती थी कि मां के आने से घर में एक तनाव का वातावरण पैदा हो गया। और इसी वजह से तुम अचानक हमें छोड़कर लापता हो गए हो। जानते हो राजीब दीदी की हालत तुम्हारे गायब हो जाने पर बहुत खराब हो गई है। वे बड़ी चिन्तित रहती हैं। तुम कितने निर्दयी हो। दिनेश के एक रिश्तेदार ने बताया कि तुम आगरा कालेज में पढ़ रहे हो। बस दीदी मुझे लेकर आगरा चल दी। सबसे पहले हम लोग कालेज गए। तुम्हें ढूंढा। पता चला कि तुम तीन दिन से कालेज नहीं आ रहे हो। फिर हम लोग

तुम्हारे होस्टिल में गए। वहां ऐसे पता चला कि दो दिन पहले शाम से तुम गायब हो गए हो। निराश होकर हम चौथे दिन लौटे। हम दिनेश के रिश्तेदार के यहां ही ठहरे थे। उनके पत्र से पता चला कि अब तुम फिर कालेज आ रहे हो। दीदी को बड़ी खुशी हुई और तुम्हारे इस बनजारे-पन पर अफसोस भी। दीदी आज ही तुम्हें ५०० रुपये का मनीआर्डर कराके आई है। आशा है कि तुम्हें वह मेरे पत्र से पूर्व ही मिल जाएगा।

राजीव हम लोग इतने समय से एक दूसरे के साथ रहे हैं और हमने एक दूसरे की रुचियों-अनरुचियों भावों और विचारों को समझने का प्रयास किया है। मुझे हर समय यह महसूस हुआ है कि तुम्हारे जीवन को अनुशासित करने के लिए तुम्हें बहुत ज़रूरत है। इसी के बल पर हमारे जीवन का आनन्दमयी भविष्य निर्मित हो सकता है। तुम मेरी प्रकृति से परिचित हो। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। एक युग से हम एक दूसरे के हो चुके हैं। इसी आत्मिक सम्बन्ध के सहारे हम एक दूसरे के हाथ को पकड़े हुए समाज की देहली में प्रवेश कर सकते हैं और नवजीवन को अपने दृढ़ विश्वासों और आश्वासनों से पवित्र एवं आनन्दमयी बना सकते हैं। दीदी चाहती हैं कि तुम एक ज़िम्मेदार व्यक्ति बनो। पत्र का जवाब फौरन देना क्योंकि सभी लोग तुम्हारे प्रति आश्वस्त होना चाहते हैं। यह पत्र मैं दीदी के कहने पर ही लिख रही हूं। समझे बुद्धराम दीदी की तरफ से बहुत-सा प्यार।

केवल तुम्हारी ही
"निर्मला"

राजीव ने पत्र को कई बार पढ़ा और हर बार पत्र के शब्द उसे नई ध्वनि देने लगे। अर्थ में से अर्थ निकलने लगे। वह संकलपात्मक मन के शिकंजे में फंस गया। मनोविज्ञान के आधार पर निर्मला का मनोविश्लेषण करते-करते उस रात वह सो न सका। बार-बार दिनेश अम्माजी और वह बर्थडे पार्टी की चुलबुली औरत का हास-परिहास याद आया। शब्द "बुद्धराम" तो और भी आपत्तिजनक हैं। और यह क्या अनुशासन में भी

रहना होगा ? कदापि नहीं । वह स्वतंत्र है और किसी भी नारी की करुणा की उसे आवश्यकता नहीं । हां एक बार तो वह नियति के शासन को भी नहीं मानेगा । वह आदि पुरुष का प्रतिनिधि बनकर यह दिखा देगा कि प्रकृति उसके वशीभूत है वह प्रकृति के वशीभूत नहीं । ५०० रुपये की उसे आवश्यकता नहीं । यह क्या उसे खरीदा जा रहा है । यदि रुपये की वह चर्चा पत्र में न होती तो उसे इन लोगों की मनोवृत्ति का पूरा ज्ञान नहीं मिल पाता । छिः-छिः दुनिया की मजबूरी से लाभ उठाना चाहती है । उसे अपने अहं की रक्षा निसंदेह करनी होगी । वह पैसे वालों से नफरत करेगा । उनके घृणित मनोरथ को वह धूल में मिला देगा । उसने सोचा क्या राजकुमारी अजीता और चपला भी उसे अहसान के बोझ से दबाना चाहती हैं ? सम्भव है यही बात हो तभी तो कार मेरे कमरे के सामने आ जाती है मुझे ले जाने के लिए । शायद वैभव के चका-चौंध से मुझे अन्धा बनाने के लिए । मैं कभी भी अब दूसरे की कृपा को स्वीकार नहीं करूंगा। क्या होस्टिल और कालेज की फीस देकर ये दोनों युवतियां मुझे बन्धन में मज़बूती के साथ नहीं बांधे रहीं । एक दिन उसका सारा भविष्य गुलाम है । इसी भावनाओं में बहकर उसने सबसे पहले निर्मला को खत लिखा और लैटर बक्स में डाल दिया । फिर उसने होस्टिल छोड़ने का इरादा कर लिया । और सुबह जब कालेज गया तो अपने सहपाठी बलवन्त कुमार से इस सम्बन्ध में बातचीत की । बलवन्त कुमार विचारों से कम्यूनिस्ट ही नहीं था वरन् एक पक्का कामरेड भी था । वह बहुत खुश हुआ । उसने एक योजना उसके सामने रखी । राजीव को उसकी हर बात पसन्द आई । अतः दूसरे दिन ही राजीव ने अपना सारा सामान उठाया और सुखारों की गली मुहल्ले में बलवन्त कुमार के यहां पहुंचा । घर के दो हिस्से थे । एक हिस्से में अब राजीव को मिला कर ६ छात्र थे और दूसरे में मकान मालिक का परिवार था । राजीव के यहां एक नई बात यह देखी कि यहां इन साथियों और परिवार के सदस्यों में कोई भेद-भाव नहीं । उसे लगा जैसे सभी ने राजीव को बड़ी आतमीयता से स्वीकार किया है। खाना

मकान मालिकिन पकाती थी और सभी सदस्य एक समय पर खाते थे। आमदनी का साधन था एक प्राइवेट स्कूल। यह स्कूल शाम को पांच बजे से सात बजे तक लगता था। स्कूल में दसवीं क्लास का कोर्स पढ़ाया जाता था। फीस बहुत मामूली थी। २० रुपये महीने प्रति छात्र से लिया जाता था। स्कूल में ५० छात्र थे। प्रत्येक कामरेड को १ घंटा समय देना होता था। महीने का सारा बजट १००० रुपये के अन्दर तैयार होता था। मकान मालिकिन को खाने के लिए २०० रुपये प्रति मास दिए जाते थे : इतने पैसे में सुबह का खाना, शाम की चाय और रात का खाना बड़ी अच्छी तरह से ही चल जाता था। अब राजीव के आने पर यह रकम २५० रुपये कर दी गई। स्कूल में ५ छात्रों को और प्रवेश मिल गया। कालेज की फीस, मकान का किराया, मनोरंजन तथा ऊपरी खर्च के लिए शेष धन पर्याप्त था। राजीव को यहां आकर बड़ी खुशी हुई। उसने आत्मनिर्भता का यह रूप देखकर विचार किया कि अगर देश का प्रत्येक नौजवान ऐसे ही अपने पैरों पर खड़ा होना सीख ले तो बेकारी की समस्या हल हो सकती है। उसे इन कामरेडों के इस कर्मठ रूप पर बड़ी प्रसन्नता हुई।

ये सभी साथी प्रत्येक इतवार को जिला कमेटी के आफिस में होने वाली साप्ताहिक बैठक में सम्मिलित हुआ करते थे। राजीव भी उनके साथ वहां गया। ज़िला के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं से उसका परिचय कराया गया। वहां पार्टी सेक्रेटरी श्री गुलाम मुहम्मद के साथ, इकबाल बानो, प्रोफेसर वर्मा, डॉ० चौहान तथा राघवजी भी थे। आज का आयोजन एक विशेष कार्यक्रम के लिए था। डा० चौहान ने एक विशेष अभियान शुरू किया था जिसके अनुसार दलित वर्ग के साथ सम्बन्ध स्थापित करना तथा उनमें शोषण के प्रति क्रांति की भावना जगाना प्रधान उद्देश्य था। आज सभी साथी अछूतों के मुहल्ले में एक ऐसी बैठक करने जा रहे थे। जब सभी लोग इकट्ठे हो गए तो वे चल पड़े। मुहल्ले में लोग पहले से ही इन्तजार कर रहे थे। एक कमरे में सभी लोग बिठाए गए। कच्चे फर्श पर चटाइयां बिछी हुई थीं। थोड़ी देर बाद बिना दूध की चाय मिट्टी के कुल्हड़ों में लाई

गई। चाय पीने के बाद कार्यवाही शुरू की गई। सबसे पहले पार्टी सेक्रेटरी ने पिछली बैठक का ब्यौरा पढ़कर सुनाया फिर आगे के कार्यक्रमों पर रोशनी डाली। उनके बाद इकबाल बानो ने भाषण दिया। उनकी आवाज़ में जादू था। राजीव बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे हिन्दी में धारावाहिक रूप से बोल रही थीं। उनके भाषण में ओज था। उन्होंने कहा जब तक हमारी मां और बहनें राजनीति में सक्रिय भाग नहीं लेंगी तब तक समाज में जागृति नहीं आ सकती। बच्चों के विकास में उन्हीं का बड़ा हाथ होता है। आज की नारी को पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग देना चाहिए। हमारा समाज दो वर्गों में बंटा हुआ है। जब तक वर्ग में चेतना का अहसास गहराई तक नहीं होताहै तब तक किसी भी क्रान्ति की भूमिका को हम तैयार नहीं कर सकते। आज हमारे देश में कांग्रेस सरकार का शासन है लेकिन अगर ध्यान से देखा जाए तो उसमें प्रतिक्रियावादी लोगों की ही अधिक संख्या है। ऐसी दशा में सरकार की ओर से शोषक वर्ग को ही ताकत मिल रही है। कांग्रेस का शासन पूंजीपतियों के इशारों पर हो रहा है। ये पूंजीपति अमरीका के पिट्ठू हैं। जब तक जन-जागृति के द्वारा यह पहेली नहीं समझाई जाएगी तब तक अमरीका का जादू सर पर बोलता रहेगा। ये राजे-महाराजे देश के दुश्मन हैं। ये प्रगति नहीं करने देंगे और सरकार ने इन्हें अनेक विशेष अधिकार दे रखे हैं। यह सरासर अत्याचार है। इनके लिए प्रिवीपर्स क्यों होना चाहिए? इन्हें भी सामान्य जनता के साथ एक ही स्तर पर उतारना होगा और इसमें कोई संदेह नहीं कि यह काम सरकार नहीं कर सकती। अगर प्रगतिशील सरकार बनती है तभी जन-जागृति सफल हो सकती है। लेकिन पण्डितजी के जमाने में तो इसकी सम्भावना ही नहीं है।

उनके बाद राघव जी खड़े हुए। उन्होंने पिछड़े हुए समाज की आंखें खोलने का जादूभरा भाषण दिया। सामन्तवादी व्यवस्था के चंगुल से आज़ाद होने पर बल दिया। वर्तमान आर्थिक स्थिति के ढांचे में देश के सर्वहारा समाज का शोषण के लिए वर्ग-संघर्ष अनिवार्य है। मिल-

मालिकों ज़मींदारों, राजा-महाराजाओं और उभरते हुए अभिजात वर्ग को जब तक नेस्तनाबूद नहीं कर दिया जाता शोषण की चक्की चलती रहेगी। उन्होंने इकबाल बानो का समर्थन किया कि वर्तमान शासन-प्रणाली भी आदर्श की रक्षा नहीं कर पा रही और सरकार चन्द सरमायदार लोगों की कठपुतली है। राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय भाग लेने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में तब तक सफलता नहीं मिल सकती जब तक कि हमारे विद्यार्थी क्रियाशील नहीं होते। हमारे विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि अपने देश की सच्ची स्वतंत्रता अभी बहुत दूर है। देश अभी तक स्वतंत्र नहीं कहा जा सकना कि अभी तक हमारे अन्दर मानसिक गुलामी भरी हुई है।

अंग्रेज़ों का देश से जाना आज़ादी की निशानी नहीं है क्योंकि अब भी उनके संस्कार छूत की बीमारी की तरह हममें व्याप्त हैं। अब भी शासन की बागडोर गौरांग महाप्रभुओं के इशारे से हिलती है। हमारी शासक पार्टी के नेता बिना उनकी सहायता के एक कदम भी आगे नहीं रख सकते। चलते-चलते देश को तीन टुकड़ों में बांट दिया। पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान दोनों की सभ्यता और संस्कृति में अलग-अलग देशों की सी विभिन्नता है। भारत के भूभाग में भी अंग्रेज़ी भाषा का ज़हर व्याप्त है। यहां हीनता की योजना से भरे हुए शासन का केवल अभिनय चल रहा है। पर्दे के पीछे निर्देशन पाश्चात्य देशों का ही है। गांधी जी के सिद्धान्तों का जनाज़ा हमारे नेता निकाल ही चुके हैं और निकालना ज़रूरी भी था। आज के युग में औद्योगिकता ने क्रांति कर दी है और हमारा देश इस दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ है। सरकार ने भी योजनाएं बनाई हैं लेकिन वह गलत ढंग से औद्योगिकता के प्रश्न पर सोच-विचार कर रही है। अब तो शोषण के केन्द्र बड़े-बड़े कारखाने बनाये जा रहे हैं। यहां दुहरा शोषण हो रहा है—एक आन्तरिक और दूसरा वाह्य। बाहर के देशों से सहायतार्थ जो धन मिलता है उसे बड़े-बड़े मिल-मालिकों में वितरित किया जाता है। ये उद्योगपति मज़दूरों के श्रम को हड़प जाते

हैं। सरकार के प्रतिनिधि विलायती ढंग का रहन-सहन ही नहीं अपना रहे वल्कि सोच-विचार का ढंग भी विदेशी है। ऐसी दशा में दलित वर्ग के प्रति अन्याय हो रहा है। अब हम अधिक देर इसे सहन नहीं कर सकते। लोगों ने हर्ष ध्वनि के साथ तालियां बजाईं।

इसके बाद प्रोफेसर डा० शर्मा ने जोर दिया कि हमारे प्रगतिशील साहित्यकार इस उद्देश्य में काफी सहायक हो सकते हैं। उन्हें साहस के साथ आगे आना चाहिए। अपने विचारों को आज़ादी के साथ प्रकट करना चाहिए। चाहे आज की परिस्थिति में जहाँ कि आवाज़ दबादी जाती है उन्हें कितनी ही बड़ी कुर्बानी क्यों न करनी पड़े।

उनके बाद डा० चौहान ने भाषण दिया। उन्होंने कहा—"क्रांति का सैद्धांतिक रूप बड़ा आशाप्रद दिखाई देता है लेकिन उसके व्यावहारिक रूप में बहुत-सी कठिनाइयां हैं। हमें बड़ी सावधानी से काम करना होगा। कभी-कभी क्रांति अशांति के बीज भी बो देती है। हमारे देश में क्रांति का क्या अर्थ हो सकता है इस बात को समझना बहुत आवश्यक है। हम अपने देश की परिस्थितियों को देखते हुए क्रांति का सर्वग्राह्य रूप अपना सकें तो बहुत अच्छा हो। इसका अर्थ कदापि नहीं है कि मैं क्रांति का विरोधी हूं। हां मैं इस बात का विरोधी हूं कि हम आवेश में आकर गलत कदम न उठायें। मैं मानता हूं कि सामन्तशाही और सरमायदारी हमारे समाज के लिए एक घुन है और इसका कोई न कोई इलाज करना ही चाहिए।" डा० चौहान का भाषण जैसे ही समाप्त हुआ राजीव खड़ा हो गया। उसने कहा—"मैं डा० चौहान से उन विचारों से सहमत हूँ जिसमें क्रांति के विदेशी रूप को नकारने की बात कही है। मैं यह ठीक समझता हूं कि क्रांति दो स्तरों पर होनी चाहिए। जनता के मानसिक स्तर को ऊंचा करने और उसमें प्रगतिशील बीज बोने की क्रांति बहुत आवश्यक है। दूसरे प्रतिक्रियावादी लोगों के हृदय-परिवर्तन के लिए भी क्रांति का अभियान शुरू करना चाहिए जिससे वे भी अपने को समाज का एक अंग समझने लगें। पूंजीपति और राजे-महाराजे अभी तक अपने को समाज

का अंग नहीं मानते हैं। क्रांति के पहले स्तर पर जनमत एकत्र करना चाहिए और दूसरे स्तर पर ऐसे लोगों के लिए ऐसी परिस्थितियां बनानी हैं जिसमें वे लाचार होकर शोषण का मार्ग स्वयं ही छोड़ दें। मेरे विचार से हम न तो अपने यहां चीन के आदर्श को श्रेष्ठ मान सकते हैं और न रूस के आदर्श को ही ग्रहण कर सकते हैं। हमें अपने देश की समस्याओं और परिस्थितियों को सदैव ध्यान में रखना होगा। अभी राजीव बोल ही रहा था कि बाहर गली में एक औरत के रोने और चीखने की आवाज़ सुनाई दी। बैठक की कार्यवाही में विघ्न पड़ गया। लोगों ने बाहर आकर देखा कि एक आदमी हाथ में डंडा लिए हुए एक औरत को पीट रहा था। औरत गालियां देती जा रही थी और पिटती जा रही थी। उसके सर से खून बह रहा था। क्रांति के अग्रदूत दूर से ही यह तमाशा देख रहे थे। आदमी के शरीर और मन में जानवर उतर आया था। उसकी खूनी आंखों और बलिष्ठ शरीर को देखकर किसी का साहस नहीं हो रहा था कि आगे बढ़कर उस औरत की रक्षा करे। सिर्फ राजीव से यह सहन नहीं हो सका। वह आगे बढ़ा। लेकिन आदमी ने एक जोर के साथ डंडा राजीव पर चला दिया। ड़ंडा कंधे पर लगा। बचाने की कोशिश में कई डंडे हाथों पर लिए तब कहीं डंडा आदमी से छीन सका। राजीव ने उस आदमी को बाहों में भींच लिया। तब तक बहुत से कामरेड आगे बढ़ आए थे। वे उस आदमी की पिटाई करने लगे। जब आदमी के तन-मन से ज़ानवर निकल गया तब मालूम हुआ कि वह प्रायः ताड़ी के नशे में अपनी पत्नी को पीटा करता है। इकबाल बानो ने औरत को सम्भाला। पट्टी बांधी। बेहोशी में वह अब भी चीख-चीख़ कर कह रही थी—"मैं उस बदमाश ठाकुर के यहां नहीं जाऊंगी। "जब होश आया तो उसने बताया कि उसका आदमी ठाकुर के यहां नौकरी करता है और वह उसे नाजायज़ काम के लिए ठाकुर के पास भेजना चाहता है जिससे उसको ताड़ी पीने के लिए बहुत-सा पैसा मिल जाए। वह अब तक मज़दूरी से ही अपने बच्चों का पेट भर रही है। बानो ने पूछा—"कौन ठाकुर ?"

औरत ने जवाब दिया—"कोठी वाले ठाकुर को नहीं जानतीं ? वही अभयसिंह । बड़ा बदमाश है। रास्ते चलती औरतों को उठा ले जाता है।"

उस समय राजीव के दिल में औरत के लिए सहानुभूति के साथ आदर की भावना पैदा हो गई। सभी लोगों ने देखा कि सामंतशाही समाज का कोढ़ है।

× × ×

राजीव अपने सहपाठी रामकृष्ण और बलवंत के साथ बातें कर रहा था कि अचानक एक शोर सुनाई दिया। थोड़ी देर बाद प्रोफेसर शुक्ल बगल में रजिस्टर दबाए हुए बड़ी हड़बड़ी के साथ भागे चले आ रहे हैं। उनके पीछे कई लड़कियां घबराई-सी चली आ रही हैं। सबसे पीछे लड़के 'ही ही हो हो' करते हुए निकल रहे हैं। बलवंत ने एक लड़के से सारा वृतान्त पूछा। प्रोफेसर शुक्ला ने दो दिन पहले बी० ए० के विद्यार्थियों को एक भाषण दिया था। यह उसी की प्रतिक्रिया है। बात यह हुई कि पाठ्य-क्रम के अनुसार डा० नगेन्द्र द्वारा लिखित 'प्रयोगवादी कविता' शीर्षक निबन्ध पढ़ा रहे थे। उसमें उद्धृत कविता की पंक्तियों को शुक्ला जी ने बिना अर्थ और व्याख्यान बताए छोड़ दिया। इस बात पर छात्रों ने शुक्ला जी से अर्थ बताने की प्रार्थना की लेकिन वे टाल गये। फिर सभी छात्र एक स्वर में अनुरोध करने लगे। शुकला जी झल्लाते हुए कहने लगे—"तुम्हें ऐसा आग्रह करते हुई शर्म नहीं आती? इसका अर्थ तो तुम अपनी माताओं के पेट में रहते हुए ही जान गए होंगे।" (फिर सर को झटका देते हुए और एक दृष्टि लड़कियों पर डालते हुए) क्या तुम्हारे घर में मां-बहनें नहीं हैं ?" (फिर तनाव की स्थिति में गर्दन ऊंची करते हुए) और (हाथ को टेबिल पर जोर से मारते हुए) "उन माता-पिताओं को धिक्कार है जिन्होंने तुम जैसी संतानों को पैदा किया।" इतना ही कह पाए थे कि लड़के क्रोध में उन्मत्त होकर प्रोफेसर शुक्ला की ओर बढ़े। शुक्लाजी कमरे की खिड़की से कूदकर स्टाफ रूम की तरफ भागे। जैसे-

तैसे कॉलेज के प्रोक्टर ने लड़कों को काबू में किया। प्रिंसीपल ने कुछ लड़कों को सजा दी। आज कई दिन बाद वे उसी क्लास को पढ़ाने के लिए गए थे। बाहर बरामदे में लड़कियां शुक्लाजी की प्रतीक्षा कर रही थीं। शुक्ला जी के साथ ही लड़कियां क्लास रूम में दाखिल हुईं। लड़के सम्मान में खड़े हो गए। शुक्ला जी ने बैठने को कहा। सभी बैठ गए। शुक्लाजी की टेबिल पर दो गुलाब के फूल रखे हुए थे। उन दोनों गुलाबों के बीच में प्रोफेसर शुक्ल खड़े हो गए। बोर्ड पर लिखा था :–"सुलगती सिगरेट" टेबिल के दोनों ओर लड़कियां बैठती थीं और सामने लड़के बैठते थे। शुक्लाजी गुलाब के फूल को देखकर मुस्कराए। लड़कियों में कुछ फुस-फुसाहट हुई। हाज़री लेने के बाद चश्मा को शुक्ला जी सम्भाल ही रहे थे कि एक लड़की उठी और कहने लगी—"सर हमें बाहर जाने की इजाज़त दीजिए।"

शुक्ला जी ने कन्धे उचकाए और पूछा—"क्यों किसलिए जाना चाहती हो।" लड़कियों ने कहा—"सर जरा ब्लेक बोर्ड पर लिखा हुआ पढ़ लीजिए।"

शुक्ला जी ने ब्लेक बोर्ड पर नज़रें टांक दीं और फिर दो सैकिंड के बाद बोले—"इसमें मुझे तो कोई ऐसी नज़र नहीं आती।" लड़के हंस पड़े। शुक्ल जी लड़कों की तरफ मुस्कराते हुए देखने लगे। लड़कियां खुसुर-फुसुर करने लगीं। भौंहें तानकर शुक्ला जी ने लड़कियों को डांटना शुरू किया—"इंडिसीप्लिन की जड़ तुम्हीं हो। यहां तफरीह करने के लिए ही आती हो। यह फैशन और ये नखरे किसी और को दिखाओ। अगर तुम एडजस्ट नहीं कर सकती हो तो कालेज मत आओ। तुम्हारे बाप-दादाओं की शान मारी जाती है।" लड़कियां "शेम शेम कहती हुई उठ गईं और प्रिंसीपल साहब के पास जाने लगीं। लड़कों ने उन्हें घेर लिया। शुक्ला जी से लड़कों ने कहा—"हम इन लड़कियों के साथ नहीं पढ़ेंगे।"

शुक्ला जी की समझ में कुछ नहीं आया और उन्होंने क्लास छोड़

दिया। लड़के शोर करते हुए निकल रहे हैं। राजीव ने बलवंत से कहा—"बड़े आश्चर्य की बात है कि इतने अनुभवी प्रोफेसर साहब लड़कों को हैंडिल नहीं कर पाते ?" बलवंत ने जवाब दिया—"शुक्ल जी केवल अध्यापक ही नहीं हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि उम्र में शुक्ला जी फेयर सेक्स के प्रति कांशश हो जाते हैं। अभी कुछ महीने पहले लड़कियों वाले सेक्सन ने प्रिंसीपल साहब से प्रार्थना की थी कि वे शुक्ला जी से नहीं पढ़ना चाहते। उनकी जगह राजेश जी से पढ़ना चाहते हैं।" राजेश जी को कुछ भी पता नहीं था। शुक्लाजी ने प्रिंसीपल को भड़का दिया कि इसमें राजेश जी का हाथ है। प्रिंसीपल साहब को बताया कि राजेश अपनी क्लास में कविताएं सुनाते हैं—प्रेम की कविताएं ! पढ़ाते खाक भी नहीं। लड़कियों और लड़कों को चाहिए भी और क्या ? बस यही राजेश जी की अध्यापन-कला है। वे लड़के-लड़कियों को गुमराह कर रहे हैं।

प्रिंसींपल साहब ने राजेश जी को बुलाया तो राजेश जी ने बड़े निर्भीक रूप से कहा—"सर मैं पढ़ाता हूं लेकिन साथ ही साहित्यिक रुची भी जगाता हूं। तभी छात्रों का मनोयोग बना रहता है। मेरे विचार से पढ़ाई को लादना नहीं चाहिए। मैं कोशिश करता हूं कि विद्यार्थी किसी तरह व्यस्त रहें। उनका मन खाली न रहे। यही कारण है कि मैंने अभी तक कोई क्लास छोड़ी नहीं है। मेरी सफलता के सबूत में मेरा पिछले वर्षों का रिज़ल्ट देख लीजिए।"

तब से प्रिंसीपल ने स्वयं कई बार राजेश की क्लास का छुप कर निरीक्षण किया। वे उनकी अध्यापन-कला से बहुत अधिक प्रभावित हुए हैं।"

राजीव ने वह निबन्ध पढ़ना चाहा और विशेषकर वे पंक्तियां जिनके कारण यह उपद्रव हुआ। एक लड़के से किताब ली गई। वे पंक्तियां पांच-सात बार पढ़ी गई। कहीं कोई आपत्तिजनक अर्थ नहीं था। सेक्स सम्बन्धी कोई विकृति नहीं थी। फिर शुक्ला जी को किस संकोच ने दबोच लिया। कवि की उक्ति में कुछ भद्दापन उभर आया है जो चित्र को यथार्थ रूप में

अंकित करता है। तभी तो बिम्ब साकार बना है—

"निकटतर धंसती हुई छत आड़ में निर्वेद
मूत्र-सिंचित 'मृत्तिका के वृत्त में
तीन टाँगों पर खड़ा नत ग्रीव
धैर्य-धन गदहा।"

वास्तविकता यही थी कि इस महत्वपूर्ण कांड के जिम्मेदार शुक्ल जी स्वयं थे। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके पीछे समस्याएं भागती हैं और कुछ ऐसे भी महापुरुष होते हैं जो समस्याओं को पकड़ने के लिए भागते हैं। शुक्ला जी दूसरी कोटि में आते हैं। राजीव के दिल में शुक्ला जी के लिए सहानुभूति पैदा हुई। यह व्यक्ति कूंठा-ग्रस्त भावनाओं का शिकार है। उसे याद आया कि एक बार प्रो० वर्मा ने शुक्ला जी के सम्बन्ध में एक घटना सुनाई। जब राजेश जी नए लेक्चरार बनकर आए थे। सुबह और शाम शुक्ल जी को टहलाते ले जाते थे। उन दिनों शुक्ला ने अपने बीवी-बच्चों तक को भुला दिया था। हर समय राजेश जी के साथ। यह अनुमान लगाना कठिन था कि शुक्लाजी राजेश की छड़ी हैं या राजेश शुक्लाजी की। दोनों के सम्बन्ध में बड़ी चर्चाएं हुआ करतीं। रात के एक बजे। राजेश जी जिस होटल के कमरे में रहते थे उसमें नींद का मिठास भरा हुआ था। लेकिन दरवाज़े की दस्तक ने उसमें विघ्न पैदा कर दिया। राजेशजी ने आधी बंद पलकों से टेबिल लैम्प की रोशनी में देखा कि शुक्ला जी खड़े हैं। एक हाथ में स्टोव, चाय का डब्बा और दूसरे हाथ में देखा ६ अंडे और मिल्क का डब्बा लिए हुए। राजेश जी ने अपनी उंगली को दांतों से काटा और विश्वास हो गया कि यह स्वप्न तो नहीं जागरण है। उन्होंने पूछा—"आप ? इतनी रात और यहां ? यह सब क्या है ?"

शुक्ला जी बोले—पहले कमरे में तो ले चलो अभी सभी कुछ बता दूंगा। और आगे बढ़कर वे कमरे में दाखिल हो गए। राजेश की समझ में कुछ नहीं आया। शुक्ला जी मौन एक टक राजेश जी की तरफ देख रहे हैं। थोड़ी देर के बाद झुँझलाहट के साथ राजेश जी बोले—"कहिए

क्या बात है ?"

शुक्ला जी बड़े विरक्त भाव के साथ बोले—"आज बारह बजे मेरे मन में ख्याल आया कि मेरी प्रतिभा बेकार नष्ट हो रही है। अध्यापन-कार्य में। अब तक मैं महात्मा गांधी के मार्ग पर चल रहा था लेकिन कल से मैं उसे छोड़ रहा हूं तथा बुद्धं शरणं गच्छामि भगवान बुद्ध की तरह मैं भी बीवी बच्चों को छोड़कर अमर शांति पथ का राही बन जाऊं। भगवान बुद्ध तो छुप कर गए थे मैंने सोचा कि मैं कायरता के साथ क्यों जाऊँ। मैंने पत्नी को नींद से जगाया। पहले तो वह उठ ही नहीं रही थीं फिर मैंने महाभिनिष्क्रमण की बात कहते हुए जगाया। मैंने कहा—"मैं जा रहा हूं।" तब भी वे बड़बड़ाती हुई फिर सो गई। बच्चों को भी जगाया लेकिन सभी अभागे करवटें बदल कर सोते गए। खैर उनके भाग्य में मेरे अन्तिम दर्शन नहीं थे।" राजीव जी ने बीच में ही टोका—"आपकी तबियत अच्छी नहीं मालूम होती। चलिए। मैं आपको घर छोड़ आता हूं।" शुक्ल जी बोले—"तुम ज्यादा चिंता मत करो। पहले जरा बैठो तो। मैंने सोचा कि अब तो जा ही रहा हूं क्यों न आखरी बार हम तुम एक कप चाय साथ साथ पी लें। इसलिए ये अंडे और चाय का सामान लेकर आया था। सोचा था कि इतनी रात गए दूध चाय के लिए आप परेशान होंगे। आज आप हमें अंतिम विदा दीजिए। मैं वहां जा रहा हूं जहां से फिर कोई लौटता नहीं।" यह कहते कहते शुक्ला जी की आंखें भर आई और हिचकियों के साथ सुबकने लगे।

राजीव को अजीब-सी झुंझलाहट होने लगी। बोले—"आप जहन्नुम में जाइए लेकिन कृपा करके मेरे यहां आकर ऐसी बकवास न कीजिए। मुझे माफ कीजिए और अभी इसी समय मेरे कमरे से बाहर चले जाइए। या मैं खुद इंतजाम करूं?" राजेश जी उसी आवेश में बोलते रहे। हाथों में अंडे, चाय, दूध का डब्बा और स्टोव को थमाते हुए वे शुक्ला जी को बाहर घसीट लाए। कमरा बंद किया और शुक्ला जी को घर पहुंचाने के लिए चल दिए। राजेश जी के होटल और शुक्ला जी के घर के बीच

रेलवे लाइन बिछी हुई थी। आज लोहे के पुल को पार कर के जाना हुआ। चारों ओर सन्नाटा था। रेलवे लाइन के सहारे रोशनी के बल्ब टिमटिमा रहे थे। दूर कहीं एक कुत्ता ज़रूर भौंक रहा था। दोनों मौन चले जा रहे थे। राजेश को इतना गुस्सा आ रहा था कि शुक्ला जी को पुल से नीचे धकेल दे जिससे इसकी हड्डियां चूर-चूर हो जाएं। घर का दरवाज़ा खुला पड़ा था। राजेश शुक्ला जी को लिए हुए घर में दाखिल हुए। मिसेज़ शुक्ला को जगाया। राजेश की दूसरी आवाज़ पर वे जाग कर खड़ी हो गईं। राजेश ने कहा—"भाभी जी इन्हें संभालिए। ये दुनिया से दूर भाग कर जा रहे हैं। इतनी रात गए इसी पोज़ में मुझे जगाया। परेशान किया। अब आपको सौंप कर मैं चलता हूँ।" मिसेज़ शुक्ला ने बड़ी लापरवाही के साथ कहा—"ये हमेशा से इसी तरह की धमकियां देते रहे हैं। मैं तो ईश्वर से यही चाहती हूं कि ये सचमुच चले जाएं। वह दिन मेरे लिए ज़रूर शांति का होगा। हमारे पूरे परिवार के लिए वह सौभाग्य का दिन होगा। ये बच्चों में भी भेद भाव की नीति बो रहे हैं। रोज़ बच्चों में झगड़े कराते हैं।"

राजेश जी तभी लौट आए थे। रामकृष्ण ने कहा—"हमारे अध्यापकों का स्तर बहुत गिरता जा रहा है। जिसे कहीं कोई नौकरी नहीं मिलती वही इस व्यवसाय में आने लगा है। कुछ लोगों ने इस व्यवसाय को साइड बिजनेस के रूप में ही मान लिया है। शुक्ला जी भी राजनीति से इस व्यवसाय में आए हैं। यही कारण है कि वे ईमानदारी के साथ एक अध्यापक की जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सकते। शिक्षा-संस्थाओं में फैले विषाक्त वातावरण ने ऐसी परिस्थितियों को जन्म दिया है जिसके कारण यह सब कुछ हो रहा है। जो कुछ शुक्ला जी करते रहते हैं उस सबके बारे में क्या प्रिंसीपल को ज्ञान नहीं? लेकिन उनकी इतनी हिम्मत नहीं कि उन्हें कन्डेम कर सकें।" बलवन्तकुमार बोला—"मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही कि राजनीति और शिक्षक दोनों को आप एक दूसरे का विरोधी क्यों मानते हैं? स्वतंत्रता-आन्दोलन में क्या हमारे प्रोफेसर पीछे

थे ? अधिकतर पथ-निर्देशन का कार्य विश्वविद्यालय के कैम्पस् से ही हुआ करता था । आज भी हमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों से बड़ी आशाएं हैं । हमारे शिक्षक राजनीति के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि शासन-व्यवस्था में भी सक्रिय भाग ले रहे हैं । इससे मेरा मतलब यह नहीं कि मैं उन्हें आदर्श समझता हूं । मेरा विचार कुछ और है । जिस तरह चाणक्य ने अपने शिष्य का पथ-प्रदर्शन किया उसी तरह आज के शिक्षक भी महान् उत्तरदायित्व को निभा सकते हैं । शुक्ला जी तो सीधे साधे आदमी हैं । उनका राज-नीति से क्या सम्बन्ध हो सकता है । यह बात मेरी समझ में अभी तक नहीं आई ।" रामकृष्ण ने कहा—"बलवन्त जी तुम्हें नहीं मालूम कि शुक्ला जी के पीछे वह राजनीतिक शक्ति है कि कोई उनका बाल बांका नहीं कर सकता । स्वयं प्रिंसिपल साहब कुछ नहीं कह सकते । वे शुक्ला जी से डरते हैं । दो साल पहले प्रोफेसर सतीश गुप्ता उस सिंधी लड़की के साथ रंगे हाथों पकड़े गए थे और लड़की के बयान से भी यह स्पष्ट हो गया था कि वे अपराधी हैं । मेनेजिंग कमेटी ने केस चलाने का प्रयास किया और कालेज से गुप्ता जी को निकालने का निर्णय लिया था कि एक हफ्ते में ही स्थिति बदल गई । गुप्ता जी के विभागाध्यक्ष त्रिवेदी जी ने अपने विभाग के छात्रों को भड़का दिया । उन्होंने प्रिंसीपल साहब के आफिस पर घेरा डाल दिया । प्रिंसिपल साहब को लेने के देने पड़ गए । वह आर्डर उनकी शेल्फ में ही पड़ा रह गया । लड़के आग लगाने की धमकी दे रहे थे । इतने में त्रिवेदी जी से टेस्टीमोनियल लिखाकर गुप्ता जी लखनऊ दौड़े चले गए । वहां गवर्नर साहब से मिले, मुख्य मंत्री से मिले और अब सारी मैनेजिंग कमेटी गुप्ता जी से मांफी मांगने के लिए विवश है ।

यह कौन नहीं जानता कि गुप्ता जी ने पत्नी के प्रति भी अन्याय किया है । आश्चर्य तो यह है कि त्रिवेदी जी भी सब कुछ जानते हुए गुप्ता जी के सच्चरित्र का गीत गाते-गाते थकते नहीं हैं । सुनते हैं कि गुप्ता जी के पिता जी बहुत बड़े समाज सुधारक रहे हैं और उनका श्री सी० बी०

गुप्ता जी से दूर का सम्बन्ध है। अतः चीफ मिनिस्टर उनके मित्र हैं। वे आदर्शवादी नेता रहे हैं। इसलिए सभी उनका बड़ा सम्मान करते हैं। मैनेजिंग कमेटी की मूर्खता थी कि ऐसे बड़े बाप के बेटे पर हाथ डाला। अब सभी पछता रहे हैं। एक से एक घाघ यहां पड़े हुए हैं। इनके तो आनन्द हैं लेकिन सभी तरह विद्यार्थियों का ही अहित है। उनको अपना प्राप्य नहीं मिलता और उल्टे रास्ते पर चलाया जाता है। अनुशासन हीनता सारे समाज में फैलती जा रही है। इस विषाक्त घेरे को तोड़ना बड़ा कठिन है।" थोड़ी देर बाद बलवंत बोला—"मैं लखनऊ का रहने वाला हूं। प्रोफेसर मिसेज माया एम० ए० थर्ड डिवीजन हैं। उनके इंटरव्यू में योग्य लोग छोड़ दिए गए और माया जी को चुन लिया गया। माया जी ने चीफ सेक्रेटरी को फांस लिया था। चीफ सेक्रेटरी की सिफारिश पर वे प्रोफेसर बना दी गईं। सुनते हैं कि मिसेज़ माया के पति कृष्णलाल ने थोड़ी सी आपत्ति उठाई थी कि उन्हें तुरंत ही सरकारी खर्चे पर इंग्लैंड भेज दिया गया। वे पांच वर्ष के लिए चार्टर्ड अकाउंटेंट की ट्रेनिंग करने चले गए। लखनऊ क़ा बच्चा-बच्चा जानता है कि माया जी चीफ सेक्रेटरी की उपपत्नी हैं। यही नहीं बल्कि माया जी के सम्बन्ध को चीफ मिनिस्टर भी जानते हैं। एक बार तो माया जी के कारण सरकार ही हिलने लगी थी। बात यह थी कि वे प्रोफेसर बनने से पहले सोशल वैलफेयर डिपार्टमेंट में डाइरेक्टर श्री जोशी जी के अन्डर काम करती थीं। एक दिन जोशी जी ने माया जी को अपने घर बुला लिया। रात को १२ बजे माया जी आज़ाद हुईं। जोशी जी का दफ्तरी भी हट्टा कट्टा था। उसने जोशी जी की बड़ी सेवाएं की थीं। थोड़ा सा टेक्स उसने भी वसूल किया। चीफ सेक्रेटरी को यह बात मालूम हुई तो पागल कुत्ते की तरह जोशी जी पर टूट पड़े। खैरियत हुई कि चीफ मिनिस्टर ने बीच बिचाव किया। इस बीच सचिवालय के सभी कार्य ठप्प हो गए थे। अब दो साल से माया जी यहां प्रोफेसर हैं। इस समय वे अविवाहित राजेश जी को अपने चंगुल में फंसाना चाहती हैं। राजेश जी की शादी के लिए अपनी ननद का प्रस्ताव भी रख चुकी हैं

लेकिन राजेश जी बहुत चरित्रवान हैं। राजेश जी की ओर से अब वे निराश सी होती जा रही हैं। आश्चर्य की बात यह है कि माया जी अन्दर ही अन्दर राजेश जी की जड़ों को उखाड़ने की कोशिश कर रही हैं। उन्होंने अपनी प्रगति में राजेश जी को बाधक समझा है। अतः उनके चरित्र के विषय में मैनेजिंग कमेटी के सदस्यों के कान भर रही हैं। प्रिंसिपल साहब तो मिसेज माया का पूरा साथ दे रहे हैं। लेकिन इस कालेज में प्रोफेसर तिवारी जी सबसे अच्छे प्रोफेसर हैं। वे कर्तव्य परायण हैं अपने विद्यार्थियों के लिए सब कुछ न्योछावर करने वाले, सत्य के लिए लड़ने वाले हैं। उनका छात्रों पर आतंक है। प्रिंसिपल भी उनका रोब मानते हैं।

जब कभी अनुशाशन हीनता की घटना घटित होती है तो केवल पंडित जी ही अपने डंडे से छात्रों को वश में करते हैं। ऊपर से कठोर और अन्दर से कोमल यही उनके व्यक्तित्व की विशेषता है।

बहुत पहले जब उपकुलपति ने एक संबंधी को धांधली से अधिक हक दिलाने के लिए एक प्रोफेसर को कहा था। उसने टेबुलेटर 'अ' से अंक बढ़वा दिए, टेबुलेटर 'ब' थे प्रो० तिवारी जी। तिवारी जी ने यह बात पकड़ ली। बात बढ़ गई और गवर्नर साहब के सामने तिवारी जी को सत्य की रक्षा के लिए जाना पड़ा। एक ओर तिवारी जी और दूसरी ओर उपकुलपति। उपकुलपति के द्वारा उत्तेजित किए जाने पर तिवारी जी ने धांधलेबाजी की सारी पोल खोल दी। गवर्नर जो कि कुलपति थे कहने लगे—"पंडित तिवारी क्या आप जानते हैं कि इस समय आप किससे बात कर रहे हैं?" उन्होंने उत्तर दिया था—"निश्चय ही एक बहुत बड़ी हस्ती से। लेकिन सत्य तो किसी भी कुलपति या गवर्नर से बड़ा होता है।"

तब गवर्नर पंडित जी की निर्भीकता पर मुग्ध हुआ। पंडित जी ने न्याय की रक्षा की। सत्य की रक्षा की। धांधलेबाजी को रोका। राजेश जी पंडित तिवारी जी के पक्के शिष्य हैं। उन्हीं के आदर्शों पर वे भी चल रहे हैं।

माया जी और राजेश जी की प्रतिद्वन्द्विता प्रसिद्ध है। पदोन्नति के लिए माया जी ने प्रिंसिपल महोदय की पत्नी को ५००) रु० का कश्मीरी शाल भेंट कर दिया। जब तिवारी जी को मालूम हुआ तो अपने एक शिष्य जिलाधीश मिस्टर सिंह के द्वारा प्रिंसिपल को सचेत कराया। इंटरव्यू से एक दिन पहले शाल लौटा दिया गया। तब राजेश जी की ही पदोन्नति हुई। फिर एक बार सत्य का सूर्य उगा था। अंधेरा छट गया था। आज भी तिवारी जी और प्रोफेसर वर्मा जैसे अध्यापकों का बहुत सम्मान है। ऐसे ही प्रोफेसरों से कालेज की शान हैं। प्रोफेसर वर्मा और राजेश जी की खूब पटती है। यही कारण है कि आजकल प्रोफेसर शुक्ला और माया जी राजेश जी से अधिक नाराज हैं।

× × ×

कुछ दिनों के बाद एम० ए० प्रीवियस की परीक्षा हुई। राजीव अच्छे अंको से पास हो गया। चपला भी पास हो गई। जुलाई में नया सेशन शुरू हुआ। साइकलौजी और फिलासफी विभाग की तरफ से एक पिकनिक (आउटिंग) का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अनुसार सभी विद्यार्थियों को पहले मैंटल हास्पिटल जाना था फिर वहां से सिकंदरा में पिकनिक के लिए व्यवस्था की गई थी। कालेज से पिकनिक स्पाट तक आने-जाने के लिए बस किराये पर कर ली गई। आठ बजे सभी विद्यार्थी कालेज पहुंच चुके थे। लगभग १५ मिनट में मैंटल हास्पिटल में पहुंच गए थे। राजकुमारी चपला गेट पर पहले ही पहुंच चुकी थी। राजीव ने दूर से ही नमस्ते किया। हास्पिटल के इंचार्ज डा० माथुर ने प्रो० वर्मा का स्वागत किया। सभी लड़के-लड़कियां अन्दर गए। राजीव चपला से आंखें मिलाने से झिझक रहा था। वह उसे छुप-छुपकर देख रहा था। कई बार सोचा कि चपला के पास जाया जाय लेकिन एक संकोच था। वह इतना करीब आने पर भी दूर हो चुका था। ऐसा लग रहा था मानो पिछले जन्म की धुंधली सी पहचान हो। ऐसा व्यवहार दोनों तरफ से हो रहा था। एक बार, दो बार, दस बार निगाहें चुराकर देखा गया। लेकिन अंत में एक

साइकिक केस की थर्ड स्टेज वाली युवती को देखकर दोनों की आंखें मिल गईं। चपला की आंखों में तरलता तैरने लगी। आंखें नीली झील मालूम होने लगीं। राजीव को डर लगा कि इस करुणा की अतल गहराई में से वह कभी निकल नहीं सकेगा। पुरनम आंखों को देखने की शक्ति उस में न रही तो अपनी आंखों को दूसरी तरफ फेर लिया। तभी चपला के मुख से एक दीर्घ निःश्वास निकल गया। आगे उन्होंने दो पागलों की बातचीत सुनी। एक ने कहा—"देख साले वह जो सामने आ रही है तेरी बीवी है।"

दूसरे ने कहा—"हट पगले! भूल गया वह तो तेरी ही बीवी है। अगर मेरी बीवी होती तो क्या इतने मर्दों के बीच घूमने देता? यह तो तेरी बीवी है।"

पहले ने कहा—"मेरी बीवी होती तो क्या बिना जेवरों के घूमती। उसके सिंगार के लिए ताजमहल भी बेच देता।"

दूसरा बोला—"ताजमहल क्या तेरे बाप का है? पागल कहीं का।"

पहले ने क्रोध के साथ कहा—"पागल तेरा बाप होगा।"

इसके बाद वे एक दूसरे को भद्दी-भद्दी गालियां देने लगे। यहां तक कि दोनों में मार-पीट होने लगी। डाक्टर को देखकर वे अलग हुए। एक तरफ कुछ अशिक्षित पागल औरतें और पागल काम कर रही थीं। सभी लोग अभी जा ही रहे थे कि दूर से एक ढेला एक लड़की के सिर पर आ पड़ा। पीछे मुड़कर देखा तो एक पागल फूलों में पानी दे रहा था। जब ढेला अचूक निशाने पर लगा तो अपनी सफलता पर वह जोर-जोर से हंसने लगा। तब तक वार्ड नं० ८ के एक कमरे में डा० माथुर सभी को ले जा चुके थे। मरीज बेहोश पड़ा हुआ था। डा० ने बिजली के शौक दिए। जर्क्स से वह धीरे-धीरे होश में आने लगा। मरीज ने आंखें खोलीं। डाक्टर ने जांच की वह कुछ बोला नहीं। केवल विद्यार्थियों के झुंड को देखता रहा। दूसरे कमरे में एक ऐसे युवक को देखा जो डाक्टर को देखकर उठ बैठा। अच्छी तरह बातें भी कीं। डाक्टर के एक इशारे पर रौकनरोल डांस करने लगा।

सभी विद्यार्थी हंसने लगे। इस मरीज ने राजीव और चपला का मूड ही बदल दिया। हास्पिटल में अलग-अलग बहुत से वार्ड देखे गए। सभी प्रकार के मरीजों को देखा। हिस्टीरिया के मरीजों में से कई बड़े दिल-चस्प केस थे। स्ट्रीम आफ कांशसनेस के साहित्य के लिए प्रचुर मात्रा में सामग्री थी। शिक्षित मरीजों के लिए समय से उठाना, नाश्ता कराना, लंच और टी का पूरा-पूरा घ्यान दिया जाता था। इसके अलावा खेल और हाबी के लिए भी व्यवस्था थी। पुस्तकालय में सभी तरह की पुस्तकें थीं। डा० माथुर ने मिस्टर मोहन से परिचय कराया। मि० मोहन डबल एम० ए० थे। खेल में अधिक रुचि रखते थे। वे क्रिकेट और टेनिस के अच्छे खिलाड़ी बताए गए। देखने में बड़े हंसमुख और विनोदी स्वभाव के व्यक्ति थे। हद से ज़्यादा एक्स्ट्रोवर्ट दिखाई दिए। डाक्टर ने कहा— ये लोग आपकी टीम से क्रिकेट का मैच खेलना चाहते हैं।" उन्होंने बड़ी खुशी के साथ इस दावत को कुबूल किया। डाक्टर ने जरा अलग जाकर पूछा—"इस मरीज के बारे में क्या ख्याल है?" सभी ने सरल भाव से कहा—"ये तो बिल्कुल नार्मल हैं। स्वस्थ हैं।" फिर मुस्कराते हुए डा० माथुर बोले—"अच्छा अब आप तस्वीर का दूसरा रूप देखिए।" सभी लोग उत्सुक होकर देखने लगते हैं। डाक्टर साहब ने पूछा—"मिस्टर मोहन आपके खत का जवाब आया?"

"कौनसा खत डाक्टर साहब?"

"वही जिसे आपने १० तारीख को लिखा था। आज तो उसे १२ रोज हो गए।"

"नहीं डाक्टर। मैं बड़ी बेचैनी से जवाब का इंतजार कर रहा हूं।"

"मुझे आप से दिली हमदर्दी है—मिस्टर मोहन।"

"थैंक यू डास्टर।"

अब दिखाई दिया कि मिस्टर मोहन का मूड बदल गया है। जो आदमी कुछ देर पहले ऐक्स्ट्रोवर्ट दिखाई दे रहा था अब बिल्कुल आत्म-केन्द्रित और दिवास्वप्न में डूबा हुआ। कभी वह मेमने की तरह भोलाभाला,

कभी कवि की तरह मधुर कल्पना में लीन तो कभी चंचल दिखाई देने लगा। डा० माथुर ने कुंजी घुमा दी थी और अब बाहर के मुखौटे से अन्दर का चेहरा झांकने लगा। उसकी इस डबल पर्सनैल्टी पर लड़के-लड़कियां हंसने लगे। वह चीख कर बोला—"खामोश! तुम क्या जानते हो हंसना। हंसी को देखना है तो मेरा इतिहास पढ़ लो। लेकिन हंसना जितना सरल है रोना उतना ही कठिन है। है कोई तुम में से जो मेरी तरह रो सके? तुम क्या रोओगे? जब हंसना ही नहीं जानते तो रो कैसे सकते हो? हर हंसने और रोने में एक ताल-स्वर होता है—एक लय होती है। यही हंसना-रोना इंसानियत की सच्ची पहचान है। इसी गुण से आदमी अमर हो जाता है।"

वह थोड़ी देर रुककर फिर बड़ी गम्भीरता से कहने लगा—"हम ज़िंदगी से मरते हैं मौत से नहीं। हमारे जीवन में जब चेतना की पुकार थककर सो जाती है तभी हम सांस लेते हुए भी मुर्दे के समान हैं। कौन कहता है कि मैं मुर्दा हूं। मैं अपने लक्ष्य के लिए तुम लोगों से ज्यादा साव-धान हूं। मैं जब सारा राज जान गया हूं तब तुम मुझे पागल कहते हो? ये तुम्हारे पुरजोश बेताल कहकहे ज़िन्दगी में मौत के प्रतीक हैं। मौत का अट्टहास शायद तुम नहीं जानते। वह इससे कहीं अधिक भयंकर होता है। तुम्हारी ज़िन्दगी इन्हीं अट्टहासों को लेकर मार डालेगी और अगर तुम मौत से ज़िन्दगी चाहते हो तो मेरी तरह जीवन जिओ।"

डाक्टर माथुर ने संकेत किया और सभी लोग मि० मोहन को छोड़कर आगे बढ़े। मि० मोहन के बड़बड़ाने को अभी तक सुना जा रहा था। डा० ने इस मरीज़ की केस हिस्ट्री बताई। वे बम्बई के एक बहुत बड़े रईस के बेटे हैं। इंग्लैंड में पढ़े-लिखे और वहीं की तहजीब में ज़िंदगी को ढाला। कई बार इन्हें रोयल फेमिली से मिलनेका मौका मिला। विशेष-कर वे राजकुमारी के पास मिलने जाते रहते थे। सिर्फ ५ मिनट डांस करने का भी उन्हें चांस मिला। इनके माइंड में एक फोबिया पैदा हो गया जिसने वन साइडेड लव का बीज बो दिया। इसी वजह से इन्हें मिस

कण्डक्ट के अपराध में इंडियन एम्बेसी को सुपुर्द कर दिया गया। तब से इंग्लैंड इनके लिए आउट आफ बाउण्ड है। इनकी एबनोर्मेलिटी इनके लिए परेशानी का कारण बनी। समझाने पर भी शादी नहीं करना चाहते। इन्हें विश्वास है कि राजकुमारी अब भी इनसे मुहब्बत करती है। ये महोदय प्रायः बहुत लम्बे-लम्बे पत्र लिखते रहते हैं। ये पत्र हमारे लिए बड़े सहायक सिद्ध हुए हैं।

अब आइए एक बहुत ही ट्रैजिक केस से मिलते हैं। यह एक बहुत सुन्दर युवती है जिसे नींद में भयंकर स्वप्न देखने की आदत हो गई है। रात को अनजाने में चलती-फिरती है और सुबह इसे कुछ भी याद नहीं रहता। दो सप्ताह पहले यह केस आया है। यह पुलिस केस है। बात यह हुई कि इसके पति बाहर सरकारी दौरे पर गए हुए थे। पति-पत्नी दोनों में बड़ा गहरा प्रेम था। दोनों की ज़िंदगी बड़ी अच्छी तरह चल रही थी। पति रात को एक बजे लौटा। नौकर ने घर का दरवाज़ा खोल दिया। पति जब सोने के कमरे में पहुंचा तो पत्नी सो रही थी। पति ने उसे जगाना ठीक न समझा। वह भी अपनी चारपाई पर सो गया। रात को पत्नी ने नींद में अपने पति को दूसरा आदमी समझा और चाकू से स्टैब कर दिया। उसी चाकू को लिए हुए वह बेतहाशा हंस रही थी। नौकर ने चीख सुनी। वह घटना-स्थल पर आया। पुलिस को खबर कर दी गई। सुबह को जब उसकी नींद खुली तो पता चला कि वह हवालात में है। उसे बताया गया कि उसने अपने पति का कत्ल कर दिया है। वह तभी से चीख-चीख कर कहती फिरती है—"मेरे पति को सरकार ने मरवा डाला है।" हर एक आदमी से प्रार्थना करती है कि वह उसकी सहायता करे। उसके पति को जो जेल में है छुड़वा दो। वह खूनी नहीं है। वह खूनी नहीं है।

तब से हम इसका बहुत ध्यान रख रहे हैं। इसने खाना तक छोड़ दिया है। वह अपने पति के फोटो को सीने से लगाए रखती है। इत्यादि। इत्यादि।

अंत में प्रो० वर्मा ने डा० माथुर को धन्यवाद दिया क्योंकि दोपहर

हो गया था। जब विद्यार्थी हास्पिटल से बाहर निकले तो सभी ने अपने दिलों को बोझिल महसूस किया। अब इन्हें सिकंदरा जाना था। केवल १५ मिनट में वे सिकन्दरा पहुंच गए। सबसे पहले छात्रों ने भोजन किया और साथ ही आपस में कुछ चुहलबाज़ी करते रहे फिर वे अकबर बादशाह का मज़ार देखने के लिए चले। एक मिनट के लिए राजीव को ऐसा लगा जैसे शांति के सुन्दर महल में अकबर की आत्मा से मिलने जा रहा है। अकबर महान जिसके वैभवपूर्ण शासन में सर्वत्र इंसानियत के लिए शांति थी। उसके दरबार में न्याय होता था और मांगने की स्वतंत्रता थी। ऐसा बादशाह जिसने इस महान देश भारत को प्यार किया। इसे सजाया। हिन्दू-मुसलमान की एकता का स्वयं आदर्श बना। देश की सभी जातियों को एक कौम एक मज़हब के रूप में आस्था रखने का स्वप्न देखा। जिसने कलाकारों, कवियों, भक्तों और फकीरों को अपने ताज से भी अधिक सम्मान दिया। यह मकबरा उसी राष्ट्रप्रेमी का है। यहां अब भी लोग मारे अदब के खामोशी से श्रद्धा के फूल चढ़ा जाते हैं।

लाल पत्थरों के इस मक़बरे का बाहरी दरवाज़ा उसकी भव्यता के गीत गाता है। मक़बरे की ऊपरी मंजिल में पहुंच कर ऐसा लगता है कि स्वर्ग यहीं पर है। चपला बहुत देर तक नीचे के हरे भरे मैदान को देखती रही। दूर एक चमकी धारा के साथ जमुना लहराती जा रही थी। खामोश अनजानी और अपने में लीन। क्या यही दशा चपला की अपनी नहीं हैं। वह बहती चली जा रही है किस लिए ? शायद उसके बहने का कोई अर्थ नहीं है। उसकी धारा में उथल-पुथल मचाने वाला तैराक किनारे पर ही खड़ा रहता है। उसमें तैरने का साहस नहीं है। उसे क्या पता कि उसके वक्ष पर मचलने वाली हर एक लहर तट तक कुछ कहने के लिए आती है और अफसोस व्यर्थ ही शांत हो जाती है।

चपला इन्हीं विचारों में खोई हुई थी कि राजीव ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया। वे दोनों एक पल के लिए एक दूसरे को देखते रहे राजीव ने देखा कि चपला के अधर फड़क रहे हैं और वह बरबस भाव को

प्रयास कर रही है। राजीव ने ऊपर के कंगूरे के पास छत के एक कोने में बैठने के लिए कहा। दोनों वहां बैठ गये। राजीव के शरीर से पसीना छूटने लगा। माथे पर पसीने की बूंदें चमकने लगीं चमला ने अपने रुमाल से पसीना पोंछना शुरू किया। राजीव ने आँखें बंद करलीं। जैसे जैसे रुमाल का स्पर्श चेहरे पर अनुभव होता रहा राजीव मदहोश होता गया। रुमाल की सुगन्ध ने तन-मन को अचेत कर दिया। आकाश में बादल सूरज के चारों ओर घिरते आ रहे थे। अचानक सूरज बादलों के अंचल में छुप गया। राजीव ने अपना सर चपला की गोद में छुपा लिया। अब तो चपला की उंगलिया उसके सर के बालों में थिरक रही थीं। नीचे सहन में लोग चुटकुले और शेरो सुखन से जी बहला रहे थे। इस एकांत में दोनों व्यक्ति बेखबर थे। राजीव ने चपला के पवित्र अंचल में अपनत्व और बन्धुत्व का सहारा अनुभव किया। चपला की उंगलियाँ राजीव के बालों में घूम रही थीं। चपला के मन में राजीव का भोला चेहरा जो खरगोश के चहरे से मिलता जुलता था उछला और एक सवालिया निशान बन गया चपला राजीव के बनजारेपन के प्रति सोचने लगी। उसका जीवन एक ऐसे वाक्य की तरह लिखा चला गया था जिसमें कहीं डैश, कौमा या सेमी कौमा नहीं था। पता नहीं इस प्रकार के जीवन का विराम कैसा होगा? वह एक ऐसी शब्दावली से बना है जिसके अर्थ शब्द कोश में भी नहीं मिलते। वह आज उसके जीवन रूपी वाक्य का आदि से लेकर अब तक का इतिहास जानना चाहती है। इस झिझरी वाले वातायन में उन्हें आत्मिक सुख मिला रहा था। चपला ने राजीव की आंखों में आंखें डालते हुए शिकायत भरा प्रश्न किया। राजीव घबरा गया और साहस बटोर कर कहा—"राजकुमारी आप लोगों की तो इतनी कृपा है कि मैं सौ जन्मों में भी ऋण नहीं चुका सकता। होस्टिल तो मैंने इसलिए छोड़ दिया कि वहां रहने से कोई लाभ नहीं था। मैं प्रायः मित्रों के पास ही रहता और पढ़ता था"

"यदि होस्टिल छोड़ना ही था तो क्या हमारी कोठी में नहीं आ सकते

थे ? क्या हम तुम पर अपना कोई अधिकार न समझें ?"

"राजकुमारी आप सभी के लिए मेरे हृदय में बहुत सम्मान है। मैं तो आप सभी का अपना ही हूं। मैं कहीं भी रहूं, कैसे भी रहूं सभी तरह आपके पास ही अनुभव करता हूं और करता रहूँगा।

"तुम तो कवि हो न। इसीलिए हमें अपने शब्दों के जादू में बांध लेते हो।" यह कहते हुए राजकुमारी ने अपने सर को राजीव के सीने से टिका दिया। राजीव पर फिर मदहोशी का नशा चढ़ने लगा। उसके तन-मन को चपला के केशों की सुगन्ध ने महका दिया। उसे ऐसा लगने लगा जैसे ज़िन्दगी थम गई है। दिल की धड़कनें सितार के तारों की तरह बजने लगीं। चमेली की लता हवा में लहराने लगी। वातायन उसकी महक से बहकने लगा। इतने में ही उस ओर किसी की पद-चाप सुनाई दी। दोनों सावधान हो गये। चपला की सहेलियां उसे ढूंढती हुई आ निकली थीं।

अब चलने का समय हो गया था। अतः राजकुमारी की कार आ चुकी थी। वह चलते चलते राजीव को बार-बार आने का आग्रह करती रही। सभी विद्यार्थी बस में बैठे और अपने-अपने घर चले गये।

× × ×

सावन का महीना राजीव को अतीत में पहुंचा देता है। रात को राजीव बहुत देर तक सोचता रहा। दिन भर की घटनाओं को दुहराते-दुहराते एक बज गया। अगस्त के महीने का अन्त हो रहा था। वर्षा थम गई थी फिर भी आकाश पर काले बादल आये हुए थे। बादलों के बीच चाँद कभी-कभी झांक जाता था। पुरवाई का एक ऐसा झौंका आया जिसने राजीव के रोम-रोम में दर्द भर दिया। दूर कोई मज़दूर ऊंचे स्वर में गाते गाते सो चुका था, उसकी आवाज़ अब भी कानों में गूंज रही थी—

कारी बदरिया तेरे पाय लागूं
कौंधा लगे सरग में जाय।
आज बरसजा मेरी नगरी में
कंता एक रैन रहि जाय॥

राजीव को महसूस हुग्रा कि उस ग्रनुगूंज के साथ उसके ग्रन्दर का सारा संसार घूम रहा है। ऊपर के बादल घने होते जा रहे हैं ग्रौर गगन नीचे की ग्रोर झुकता चला ग्रा रहा है। कहीं-कहीं छितरे बादल हैं ग्रौर उन के बीच में से पीले चाँद की रोशनी झलक रही है। उसे बरबस एक मीठी याद कसमसाने लगी। उस रोज़ भी तो बादल घिरे हुए थे। जमुना की लहरों पर वह नाव चला रहा था। जब ग्रांखें टकरा जाती थीं तो लगता था कि भटकती हुई जिन्दगी को सहारा मिल गया। वह कुछ महीनों पहले ही तो गांव से नया-नया ग्राया था। निर्मला की करुणा ग्रौर ममता भरी दृष्टि उसके मन में गहरी ग्रौर गहरी उतरती चली गई थी। वह उसके सामने एकटक देख रही थी। हवा के चलने से उसके चेहरे पर कुछ लटें बिखर गई थीं। बिलकुल इस समय के चाँद की तरह। उसकी इच्छा हुई कि निर्मला के चेहरे से इन लटों को हटा दे। उसका चप्पू चलाना बन्द हो गया। हवा के एक झौंके के साथ ही निर्मला का पल्ला नीचे खिसक गया। गर्दन का निचला हिस्सा झांकता नज़र ग्राने लगा। नाव डगमगाने लगी लेकिन राजीव उस रूप को देखता रहा। देखता रहा। लटें ग्रौर ज्यादा चेहरे पर घिर ग्राई थीं। उससे न रहा गया ग्रौर उठकर ग्रपने हाथ से उन लटों को जैसे ही हटाया कि बादलों की गड़गड़ाहट हुई। बिजली चमकने लगी। निर्मला खिलखिला कर हंस पड़ी थी ग्रौर उसका साथ देता हुग्रा वह भी लगातार हंसता रहा उन दोनों की हंसी को सुनकर तटवर्ती झींगुरों की ग्रावाज़ बंद हो गई थी। उसने कहा था—"देखो निर्मो कैसा सन्नाटा छा गया है ?" ग्रौर फिर ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा था। उन दोनों के लगातार हंसते रहने से पेटों में बल पड़ने लगे थे। सहसा निर्मला ने रूठते हुए कहा—"जाग्रो हम नहीं तुमसे बोलते।"

"क्यों ? निर्मो मुझसे क्या गलती हुई है ?" ग्रौर उसने हल्की-हल्की उदासी भरी ग्राँखों को निर्मला के चेहरे पर टिका दिया। निर्मला ने देखा एक सवालिया चेहरा उसकी नज़र के छोर पर लटक गया है। तभी

वह फिर खिलखिलाकर हंस पड़ी। उसको हंसते देख उसे लगा कि जमुना की लहरों पर हज़ारों गुलाब के फूल खिल उठे हैं। मनमें आया कि यह मधुर हंसी कभी बन्द न हो। थोड़ी देर बाद निर्मला ने उनींदी-सी नज़र के साथ कहा—"सुना दीजिए न। अगर गीत नहीं सुनाओगे तो मैं रूठ जाऊंगी।" एक मासूम चेहरा जैसे रूठने के लिए मचलने वाला ही हो।

उसने गीत गाना शुरू कर दिया था। गीत के स्वर वातावरण में दर्द का मिठास पैदा करते हुए गूंज रहे थे। निर्मला का अन्तर थरथरा उठा। थरथराती भीगी आवाज़ के साथ बोली —"राजीव भगवान के लिए ऐसे दर्द भरे गीत मत लिखा करो। ये आत्मा को भी कंपा देते हैं। दिल हिलने लगता है और मैं सुनने की शक्ति भी नहीं रखती।" यह कहते हुए उसकी आँखें छलछला आई थीं।

वह उठा और निर्मला का हाथ अपने हाथ में थाम लिया। उसने अपने रुमाल में करुणा की देवी के पवित्र आंसू और जज़्ब कर लिए। थोड़ी देर तक वे खामोश रहे। तब तक चांद बादलों से संघर्ष करते-करते अपनी पूरी कला के साथ चमकने लगा। सहसा उसे ख्याल आया कि देर हो गई है और पीछे प्रकाश भैय्या और भाभी घाट पर उनके लौटने का इंतज़ार कर रहे होंगे। उसकी जबान से निकल पड़ा—"निर्मो भैय्या भाभी देख रहे होंगे हमें अब लौटना चाहिए।"

वह इतना कह तो गया था लेकिन उसे खुद ऐसा लगा था कि रस-मलाई खाते-खाते बीच में कोई कंकड़ी दांतों से टकरा गई हो। जब वे लौट रहे थे तो बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी। घाट पर सचमुच भैय्या और भाभी चिंतित खड़े हुए मिले। उस समय पुरवाई के झोंकों ने उसे अजीब तरह से अलसा दिया था। आज तो यह पुरवाई सोने ही नहीं देती। वह सोचने लगा इन कामरेडों ने उसके दिलोदिमाग पर ऐसा जादू किया है कि वह इन्सानियत से भी गिर गया है। इनकी दृष्टि में अर्थ ही सब कुछ आधार है और वर्गक्रांति के नारे देते-देते अर्थ की तुला पर ये स्वयं तुल जाते हैं। क्या केवल दुख-दर्द गरीबों के ही होते हैं अमीरों के नहीं? क्या

आज के युग में गरीब लोग ही कठिनाइयों और समस्याओं के शिकार होते हैं ? क्या अमीर की कोई ट्रैजिडी नहीं ?

इन लोगों के साथ-साथ रहते हुए सोच-विचार का आधार ही धन हो गया है। अर्थमूला कुंठा ही इसकी ज़िम्मेदार है। इसमें कोई संदेह नहीं राजीव ने निर्मला को जो पत्र लिखा वह लिखा वह इन्हीं कामरेड भाइयों के प्रभाव का उदाहरण है। राजकुमारियों के प्रति द्वेष के बीज़ बोये इसी संगति ने। प्रोफेसर वर्मा कितने महान हैं। उनके विचारों को भी साम्य-वादी विचारधारा बहा ले गई। निर्मला के दिल पर क्या बीती होगी। उस पत्र को भेजे हुए भी तीन महीने हो गए। भाभी के लिए मनमें किसी दुर्भावना को लाते समय उसे शर्म भी नहीं आई। वह किसी को मुख दिखाने योग्य नहीं है। उसके मन का कोना-कोना दुखी था। अन्त-रात्मा की पुकार थी कि राजीव तू पापी है। हां पापी है। तुझे तो जीने का अधिकार नहीं है। तू किसी का नहीं। तू किसी के लिए वफादार नहीं। तुझे तो अभी इसी समय अपने जीवन का अन्त कर लेना चाहिए। तूने राजकुमारी चपला पर अपने मनहूस साये को क्यों फैलाया ? तूने सबकी भावनाओं का शोषण किया है। तू उन पूंजीपतियों और सामन्तशाही लोगों से भी अधिक गिरा हुआ है जो केवल धन के पीछे आत्मा बेच देते हैं। लेकिन अब तो तू इतना गिर चुका है कि मौत ही तुझे सुधार सकती है।

लेकिन···लेकिन आत्महत्या तो पाप है। ऐसा करके तो तू कहीं का न रहेगा। फिर उसे क्या करना चाहिए ? प्रायश्चित ? क्या प्रायश्चित करने की शक्ति है उसमें ? उसने तो नैतिक साहस को भी अपनी आत्मा से निचोड़ फैंका है। उसने हताश होकर अपने शरीर को बिस्तर पर बिखेर-सा दिया। वह फूट-फूट कर रोने लगा और रोते-रोते न जाने कब नींद ने दबोच लिया।

× × ×

राजीव सुबह काफी लेट बिस्तर से उठा। उसे अपनी सूजी-सूजी

आंखों में जलन सी महसूस हुई। उसने पहले निर्मला को पत्र लिखा जिसमें अपनी भूल पर पश्चाताप प्रकट किया था। उसने लिखा कि अब एक वर्ष बाद हम दोनों की शादी हो जाएगी। जीवन के सभी स्वप्न पूरे हो जायेंगे। वह एस० ए० करने के बाद किसी अच्छी नौकरी पर लग जाएगा। एक छोटा-सा परिवार उनका संसार बनेगा। किसी कोने में रहते हुए और एक दूसरे का मुख देखते हुए वे अपनी शेष ज़िन्दगी को दुख-सुख के समभागी होकर काट देंगे। उसे और कोई महत्त्वाकांक्षा नहीं है। वह तो केवल प्यार की ज़िन्दगी जीना चाहता है। एक-दूसरे के लिए कुर्बानी का भाव रखते हुए फिर कुछ नहीं चाहिए उसे। जो कुछ उसने अब तक किया है वह उसका गम्भीरता के साथ अहसास कर रहा है। आशा है कि हमेशा की तरह निर्मो क्षमा कर देगी।

पत्र लिखकर उसने लैटर बाक्स में डाल दिया। कई दिन तक वह अनमन-सा पड़ा रहा। कालेज भी न जा सका। कालेज में पोस्टमैन का आना वरद प्रतीत होता था लेकिन उसका लौटना उसके चेहरे पर निखार की स्याही ही पोत जाता था। जब उसमें अब और प्रतीक्षा करने की ताकत न रही तो वह सुबह की गाड़ी से दिल्ली चल पड़ा। बलवंत और रामकृष्ण उसे स्टेशन तक पहुंचाने के लिए आए। गाड़ी दो घंटे लेट थी उसे बड़ी बेचैनी महसूस हो रही थी। बलवंत और रामकृष्ण से बातें करने में कोई मज़ा नहीं मिल रहा था। एक-एक पल युग-युग की तरह महसूस होने लगा। मनमें विचार की भीड़ जमा होने लगी।

जैसे-तैसे गाड़ी आई। राजीव थर्ड क्लास केडब्बे में बैठ गया। गाड़ी लगभग दो बजे दिल्ली पहुंची। स्टेशन पर पहुंचकर उसने सोचा कि कोई तोहफा भाभी के लिए खरीद ले। निर्मला के लिए भी तो कुछ खरीदना होगा। उसने भाभी के लिए कांच की चूड़ियों का एक डब्बा और निर्मला के लिए जूड़े के पिन और एक खूबसूरत कंघा खरीदा। उसने अपना हाथ चेहरे पर फेरा तो शेव बढ़ा हुआ मालूम हुआ। उसने मन में एक शरारत करने का इरादा कर लिया। क्यों न बढ़े हुए शेव से फायदा उठाया

जाए। उसके कपड़े गन्दे हो गए थे। इसलिए उसे पूरा यकीन था कि इस वेश में भाभी नहीं पहचान पायेगी और अब तो वह कुछ लम्बा भी हो गया है। उसने टैक्सी ली और चल पड़ा। बाज़ार से सामान खरीदा और फिर घर के लिए रवाना हुआ। उसे आश्चर्य हुआ कि दिल्ली में एक साल के अन्दर सब कुछ बदल चुका है। मुहल्ले का जुगराफिया ही बदल गया था। लेकिन भैय्या का घर वैसा ही था। ड्योढ़ी में जाकर उसने एक फकीर की आवाज़ बनाकर दस्तक दी—"भैय्या भूखे को एक रोटी दे दे।" वह लगातार कई मिनट तक यही सदा देता रहा। लेकिन अन्दर से किसी के आने की आवाज़ नहीं सुनाई दी। उसने कुंडी खट-खटाई। थोड़ी देर बाद किसी के आने की आहट मिली। उसने किवाड़ों की दरार से झांकने की कोशिश की। उसने सोचा अगर निर्मला हुई तो पहले एक रोटी का सवाल करूँगा और उसके फौरन बाद उसके गले में बाहें डाल दूंगा। अगर भाभी हुई तो पैरों को पकड़ लूंगा। फिर रोटी का सवाल करूंगा। जब वे नाराज़ होंगी तो हंसते हुए सारा हाल कह सुनाऊंगा। आहट बिल्कुल करीब आती जा रही थी और उसके साथ ही राजीव के दिल की धड़कनें तेज़ होती जा रही थीं। वह "भैय्या एक रोटी दे दो।" वह बड़ी कठिनाई से कह पाया था।

भाभी ने दरवाज़ा खोला। उसने अभिनय करने की कोशिश की लेकिन आंखों में आंसू छलछला आए। भाभी एक साल के अन्दर कैसी हो गई हैं? वह उनके कदमों से लिपट गया। विमला ने उसे उठाकर अपने सीने से चिपटा लिया और अन्दर ले चली। वह एक बच्चे की तरह फफक-फफक कर रोने लगा। भाभी उसके सर पर ममता का हाथ फेरती रही। राजीव की सिसकियां बंध गई थीं। उसे पुरानी यादें सताने लगी। भाभी की आंखें भी नम हो चुकी थीं। राजीव को चुप कराके बिमला उठी और ग्लास में ठंडा शर्बत ले आई। राजीव पीता जा रहा था और नजरें चारों ओर फेंकता जा रहा था।

उसे घर सूना-सूना नजर आया। चीजें भी बेतरतीब इधर-उधर पड़ी

हुई थीं। उसने एक पल के लिए सोचा शायद निर्मला उसे देखकर कहीं छुप गई हो। भाभी के आँसू रूमाल से पोंछते हुए कहा—"भाभी यह आपकी क्या हालत हो गई है ? मैं विश्वास दिलाता हूं कि अब आपको ज़्यादा दुःख नहीं दूंगा। भाभी मुझे माफ कर दो।"

इतना सुनते ही विमला अपने को नहीं संभाल सकी। वह बेतहाशा रोने लगी। राजीव घबराया। उसकी नज़र भाभी के सिर पर पड़ी। वही बदस्तूर सिंदूर था। तो क्या निर्मला ? नहीं नहीं ऐसा नहीं हो सकता। उसने भाभी को संभालते हुए बड़ी बेसब्री से पूछा—"भाभी निर्मला कहां है ? क्या वह ऊपर कमरे में है ?" वह इतना ही प्रश्न कर पाया था कि विमला को बेहोशी का दौरा पड़ गया। वह पानी लेने दौड़ा। पानी के छींटे चेहरे पर डाले। बिमला धीरे-धीरे होश में आई। राजीव ने उसे चारपाई पर लिटा दिया। उसने भाभी से पूछा—"भाभी निर्मला को क्या हुआ है ? जल्दी बताओ। जल्दी बताओ भाभी? तुम्हें मेरी कसम है। बिमला ने जवाब दिया—"राजू निर्मला बिल्कुल ठीक है।"

—"तो वह कहां है भाभी अच्छा मेरे वाले कमरे में होगी। मेरा ख्याल ठीक निकला। वह मुझसे रूठ गई है।" इतना कहते हुए वह बेतहाशा दौड़ा और जीने पर चढ़ने लगा। उसने ऊपर जा कर देखा। कमरा बिल्कुल खाली पड़ा है। बहुत दिनों से उसमें शायद झाड़ू भी नहीं लगी है। वह पत्थर की मूर्ति के समान जड़ होकर खड़ा रहा। बिमला भी पीछे-पीछे कमरे पर आ गई। उसने बताया—"निर्मला माता जी के साथ घर गई है। वह एक हफ्ते के बाद घर आ जाएगी। चलो नीचे चलें। कुछ नाश्ता कर लो। राजीव को कुछ धैर्य मिला लेकिन मन अब भी सशंकित था। वह भाभी के कंधे पर सर टिका कर पूछने लगा—"भाभी सच कह रही हो न ?"

—"हां बेटा ! भैय्या मैं बिल्कुल सच कह रही हूं। मैं तो तेरी हालत को देखकर रो पड़ी थी। तू कैसा लग रहा है ? ये सूने रूखे बाल, दाढ़ी बढ़ी हुई, ओठों पर पपड़ी जमी हुई है। तूने यह क्या हाल बना रक्खा है ?

पगले मैं तेरी भाभी ही नहीं मां भी हूं। तुझे मैं इस तरह कैसे देख सकती हूं। न जाने कहां-कहां भटकता रहा। तूने रुपए लौटा दिए तभी से मैं बीमार रहती आई हूं। जब से तू गया मुझे दिन रात तेरी फिकर बनी रही। इतनी जल्दी सभी को भूल गया ? तेरा वह पत्र ! तूने वह सब कैसे लिख दिया ? अच्छा जाने भी दे ये सभी बातें। चल कर जल्दी मुंह हाथ धो और कुछ खा ले।"

राजीव चुपचाप भाभी के साथ नीचे उतर आया। दो तीन मिनट में शेव की। नहाया और फिर कपड़े बदल कर नाश्ता करने लगा।

राजीव बार-बार भाभी की आंखों के भावों को पढ़ने का प्रयत्न करने लगा। भाभी अपनी नज़रों को समेटती हुई गम्भीर बनती जा रही थीं। उसने साहस बटोर कर शांत और गम्भीर सतह पर कुतूहल की कंकड़ी फैंकी। कंकड़ी गिरी लेकिन थोड़ी-सी कम्पन पैदा करती हुई डूब गई। सतह पर फिर खामोशी छा गई।

विमला ने राजीव से आराम करने के लिए कहा। राजीव चारपाई पर लेट गया और आंखें बन्द कर लीं। उसके हृदय में संदेहों की कुलबुलाहट मची हुई थी। उसने भाभी से पूछा—"मेरा पिछले सप्ताह का पत्र कब मिला ?"

"दो दिन पहले मिल गया था।" बड़े ही शांत भाव से बिमला ने उत्तर दिया।

राजीव के कान आतुर हो रहे थे यह सुनने के लिए कि इस विषय में भाभी क्या कहती हैं। कान दिल की धड़कनों की आवाज़ सुनते-सुनते थकने लगे लेकिन भाभी खामोश ही रहीं। आंखें बार-बार भाभी के लटकते हुए चेहरे पर भावों को पढ़ रही थीं। आंखें उबने लगीं शरीर हजारों मन भारी हो गया था। राजीव में उस शरीर को बटोरने की शक्ति मानो नहीं रही थी। मन एक अजीब सी घुटन महसूस कर रहा था। उसका मन उदास वातावरण की तहों में घिरा हुआ बुझे चिराग के समान हो रहा था।

वह सोचने लगा कि एक सप्ताह की बात सोचकर वह परेशान हो रहा था। भाभी को छेड़ना अब उचित न था। अतः मन मारे हुए वह चुपचाप पड़ा रहा।

साढ़े चार बजे बड़े भय्या आ गये। राजीव ने उठकर उनके पैर छुए। प्रकाश ने कंधे से पकड़ कर पूछा—"कब आए तुम ? इतने दिनों तक कहां रहे ? भले आदमी ऐसा भी कोई करता है ?"

थोड़ी देर के लिए मौन रहा। राजीव अपराधी सा आंखें नीचे किए हुए खड़ा रहा। शर्म से उसकी गर्दन ऊपर नहीं उठ रही थी। फिर थोड़ी देर बाद वे अपनी मूछों पर उंगलियां फेरते हुए कहने लगे—

"क्या तुम्हें शादी का समाचार नहीं मिला था ? हमने तो हास्टिल के पते पर कई पत्र और शादी-कार्ड भी डाला था।"

"किसकी शादी दादा ?" धड़कते दिल के साथ राजीव ने पूछा लिया।

"अरे तुझे बिमला ने कुछ नहीं बताया ? जून की २२ तारीख को निर्मला की शादी हो गई। लड़का डाक्टर है।"

उसे लगा जैसे दिल की धड़कनें बंद होने वाली हों। उसके सामने कोई बहुत बड़ा तूफान आ रहा है। उसे ज़मीन हिलती मालूम होने लगी, बड़ा भयानक भूकम्प था। उसके पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक रही थी। उसका अन्तर थरथरा उठा। ज़मीन आसमान चक्कर लगा रहे थे। उसकी नज़र के सामने पिघले हुए लोहे से असंख्य चिनगारियां छूट रही थीं। अहसासों की भीड़ शोर कर रही है। थोड़ी देर बाद उसे लगा कि वह गिर पड़ेगा। उसने कातर दृष्टि से बिमला की तरफ देखा। उसे लगा जैसे भाभी की बुझी-बुझी सी आंखों में बादल फिर घुमड़ आए हैं। उसने शरीर के भार को चारपाई पर पटक दिया बेहोशी में प्रकाश भैय्या के शब्दों को सुनने की कोशिश करने लगा। लेकिन कुछ सुन नहीं सका। क्योंकि उसके कानों में किसी ने मानो जलता हुआ लावा भर दिया हो।

× × ×

सुबह बहुत देर हो गई थी। बिमला ने सोचा राजीव काफी देर तक जागता रहा होगा। यही वजह है कि वह ऊपर से अभी तक नीचे नहीं आया। अभी तक सो रहा होगा। आठ बजे विमला ऊपर गई। ऊपर जा कर देखा तो उसके हाथों के तोते उड़ गए। कमरा खाली पड़ा था। चारपाई पर कंघा, जूडे के पिन और चूड़ियों का डब्बा रखा हुआ। उसी के पास एक पत्र था जिसमें उसने भाभी को समझाया था कि वह उसके बारे में चिन्ता न करें। वह जहां भी रहेगा अच्छी तरह रहेगा। वह भाभी को कभी नहीं भुला सकता। भाभी उसे क्षमा करें। साथ ही लिखा था कि वह भाभी के लिए चूड़ियों का डिब्बा लाया था। और ये जूड़े के पिन······ कंघा······किसी को दे दीजिएगा। कृपा करके निर्मला को उसके बारे में कुछ न बताएं।

विमला थोड़ी देर तक सकपकाती खड़ी रही। उसने बार बार पत्र पढ़ा। इस आशा से कि राजीव कहां गया है। उसका कुछ अनुमान लगा सके। लेकिन उसने कोई संकेत नहीं दिया था। उसके दिल में राजीव के लिए एक गहरी हमदर्दी थी। उसे डर लग रहा था कि आवेश में राजीव कहीं गलत कदम न उठा ले।

× × ×

राजकुमारी अजीता स्वप्न में अक्सर राजीव के प्रति अपने विचार प्रकट किया करती। एक दिन उसे दिखाई दिया कि राजीव ने उसे जगाया है। वह दोनों चांदनी रात में टहलते हुए चले जा रहे हैं। हवा बहुत धीरे-धीरे बह रही है। राजीव उससे सटकर चल रहा है। वे दोनों कभी-कभी एक दूसरे को कनखियों से देख लेते हैं। राजमहल के बगीचे से गुलाब का फूल राजीव तोड़ लेता है और अजीता के जूड़े में खौंस देता है। वे दोनों सरों के पेड़ के पास जाकर ठिठक जाते हैं। वहां एक काला मोटा सर्प मुंह उठाए हुए खड़ा है। उसने रास्ता रोक लिया है। वे दोनों जिस तरफ जाते हैं वह सर्प भी दौड़कर उसी तरफ रास्ता रोकता है।

राजीव एक बड़ा सा पत्थर हाथ में उठाता है। पत्थर सर्प के मुख पर

लगता है। सर्प ने तिलमिला कर अजीता पर हमला कर दिया। उसने कई जगह पर दांतों से काटा लेकिन राजीव को आता हुआ देखकर उस पर भी झपट पड़ता है। राजीव की ओर जब वह बढ़ता है अजीता तुरंत अपनी साड़ी के आंचल से उसे लपेट लेती है। सर्प फुंकारें भरता रह जाता है। थोड़ी देर बाद वह साड़ी के छोर में गांठ बांध कर बंद कर लेती है।

राजीव सर्प का विष उतरवाने के लिए राजकुमारी को दोनों बाहों में लिटाये हुए ले जा रहा है। गेट पर सन्तरी सो रहा है। उसकी जेब में से चाबी निकाल कर दरवाज़ा खोलता है। वह अपने अँचल में बंधे सर्प को टटोलती है। लेकिन वह कहीं पर खिसक गया है। राजीव तेजी के साथ उसे लिए जा रहा है। मन्दिर में एक साधु है। वह सर्प का विष निकालना जानता है। राजीव एक कुटिया के सामने रुक जाता है। दरवाज़ा खटखटाता है। एक लम्बी दाढ़ी वाला बुड्ढा निकलता है। उसने आगे बढ़कर अजीता को दोनों हाथों के सहारे पुआल बिछे हुए बिस्तर पर लिटा दिया। एक लोटे में पानी भर लाया। बहुत देर तक लोटे के पानी को हाथ में लिए हुए कुछ पढ़ता रहा। फिर लोटे से चुल्लु में पानी भर कर अजीता के पैर पर छिड़कता रहा। आधे घंटे के बाद क्या देखती है कि वही सर्प बड़ी तीव्र गति से दौड़ता हुआ आता है। अजीता के चारों ओर परिक्रमा करता रहता है। राजीव प्रतिशोध लेने के लिए आगे बढ़ना चाहता है कि साधु उसे संकेत से रोक देता है। सर्प लगातार परिक्रमा करता रहता है। अजीता ने घबराहट में आँखें बन्द कर लीं लेकिन अधिक देर तक आंखें बन्द नहीं कर सकी थोड़ी देर बाद वह आधी आंखों को खोलकर देखने का साहस करती है। साधु जल्दी जल्दी मंत्र पढ़ता जाता है। अन्त में सर्प ने, अपने मुख को उन्हीं जगहों पर रख दिया जहां-जहां उसने काटा था उसने अपनी जुबान से जगह चूस लिया। थोड़ी देर तक सर्प साधु के पैरों तले पडा रहता है। साधु फट-कारते हुए सर्प को भगा देता है। राजीव के चेहरे पर ख़ुशी नज़र आती है। जब अजीता की नींद खुलती है तो अपने को राधास्वामी के मन्दिर

में पड़ा हुआ देखती है।

× × ×

महारानी पटेसुर एक विलासिनी महिला थीं। उन्होंने अपने वैधव्य से जो सुख लिया वह सुहाग के दिनों में कभी नसीब भी न हुआ। उसने अपने शरीर के न जाने कितने चोले बदले। वृद्ध महाराज ने उसको नीचे से उठाकर स्वर्ग तक पहुंचा दिया था। बात यह हुई थी एक बार महाराज पटेसुर शिकार खेलकर लौट रहे थे गर्मी के दिन थे। ज़मीन से लेकर आकाश तक लू की लपटें उठ रही थीं। एक नहर के किनारे एक छोटा-सा हरा-भरा आमों का बाग था। महाराजा ने घोड़े को एक पेड़ के तने से बांध दिया और बाग की झोंपड़ी की तरफ बढ़े। उस समय सभी जगह सन्नाटा था। झोंपड़ी में एक १६ वर्ष की लड़की टूटी सी चारपाई पर सो रही थी। वह आमों की रखवाली करने और भैंसें चराने के लिए रोज इस छोटे से बाग में आ जाती थी। महाराज बड़ी देर तक उसके उभरे मांसल सीने को गिरते और उठते हुए देखते रहे। फटे और मैले वस्त्रों से झांकते हुए सौन्दर्य को मुग्ध दृष्टि से देखने के बाद उन्होंने उसे जगाया। लड़की आंखें मलते हुए उठ बैठी। सामने एक अपरिचित भद्र-पुरुष को देखकर सकपका गई। उससे महाराज ने पूछा—"क्या तुम हमारे साथ चलोगी? हम तुम्हें महलों की रानी बनायेंगे।" लड़की आश्चर्य और कौतूहल से देखती रही। फिर राजा ने उससे पानी पिलाने के लिए कहा। वह दौड़ती गई और कुएँ से ठंडा पानी निकालकर ले आई। राजा ने ठंडा पानी पिया फिर उसी झोंपड़ी में आराम करने लगे। लड़की ने अब तक महाराज को पहचान लिया था। वे कई बार उसके गांव का दौरा कर चुके थे। वह ज़मीन पर बैठकर टूटे दफ्ती के टुकड़े से महाराज पर हवा करने लगी। महाराज ने आराम किया। तब तक महाराज का अमला उनकी खोज करता हुआ बाग में आ पहुँचा। महाराज ने तुरन्त कुछ लोगों को पटेसुर भेजा। वे शाम तक शादी का सारा सामान लेकर आ गए थे। लड़की को घर भेज दिया गया। उसका

बड़ा भाई बुलाया गया। बड़े भाई ने शादी के प्रस्ताव को मंजूर कर लिया।

शाम को बारात सजाकर चढ़ाई गई। बहुत बड़ा लंगर लगाया गया। सारे गांव का प्रतिभोज था। गांव की मानो किस्मत चमक गई। महाराज ने अपने साले साहब को पांच गाँव जागीर दे दीं। दूसरे दिन के दिन चंदो उर्फ महारानी चन्द्रप्रभा महाराज के महल की रौनक बनी।

महाराज महलों से अब कम दिखाई देते थे। वे चंद्रप्रभा के सौन्दर्य के गुलाम बन गये। धीरे-धीरे बुढ़ापे ने उन्हें ऐसा दबोचा कि राजयक्ष्मा के शिकार हो गये। महारानी विधवा हो गई थीं। वे अधिकतर आगरे वाली कोठी में रहने लगीं। राज्य का कार्य-भार रियासत के मैनेजर डा० भूपसिंह ने सम्भाला।ठाकुर साहब महारानी के पहले प्रेम-पात्र बने। उनके जब गर्भ रह गया तो गर्भ-पात के सिलसिले में एक नौजवान डाक्टर से उनका सम्बन्ध स्थापित हुआ। यह उनका दूसरा प्रेम था। अब तो मैनेजर साहब ठा० भूपसिंह दूध से मक्खी की तरह बाहर निकाल फेंके गए। मैनेजर का कार्य-भार महारानी के बड़े भतीजे ने सम्भाला जो उनका गोद लिया पुत्र था।

डाक्टर ने महारानी के हृदय-साम्राज्य पर आधिपत्य जमा लिया। डा० ने आप्रेशन करके महारानी के लिए निंदापवाद से आज़ादी दे दी। आजकल बहुत दिनों से उनकी कोठी में ठाकुर अभयसिंह मेहमान बने हुए हैं। अभय ने उनकी कोठी को विलास-भवन बना रखा है। आसपास की गरीब-बस्ती की कोई जवान लड़की पड़ेसुर हाउस के पास से नहीं गुज़रती। दिन-दहाड़े औरतें उठा ली जाती हैं। अभय ने एक बहुत ही शानदार कोठी इस कोठी के साथ ही बनाई है। अभय के लिए महारानी बहुत दिनों तक साध्य रहीं साधन अब बनती जा रही हैं। अभय का इस इलाके में बड़ा आतंक है। लोग इतने शैतान से भी नहीं डरते जितना अभय से डरते हैं। अंधेरे-उजाले में यह कोठी पाप-केन्द्र बनी हुई थी।

× × ×

दिल्ली से निराश लौटकर राजीव आगरा चला आया। राजकुमारी चपला ने उसे अकस्मात आता हुआ देखकर आश्चर्य का अनुभव किया। लेकिन राजीव के उदास चेहरे को देखकर उसके मन में कई प्रश्न करवटें बदलने लगे। वह राजीव को बड़े सौहार्द्र के साथ अन्दर ले गई। चपला को लगा जैसे राजीव कई दिनों से लगातार रोता रहा है। उसकी आंखें सूजी हुई थीं। वह भूखा प्यासा है। नौकर ने फलों को पिक टेबुल पर सजा दिया। स्वयं छुरी से काटकर खिलाने लगी कि कोई असाधारण घटना घट चुकी है। वह मानो हारा हुआ पथिक हो और पिटा हुआ योद्धा हो। उसने समस्त करुणा भाव को उंडेलते हुए पूछा—

"राजीव इतने दिनों कहां रहे?"

"दिल्ली गया था।"

"सब ठीक है न?"

"हां सभी ठीक है।"

"फिर तुम उदास क्यों हो? ज़रूर कोई बात मुझसे छुपाई जा रही है। अरे हां—वह निर्मला कैसी है?"

राजीव के चेहरे पर दर्द भरा मौन छा गया। राजकुमारी ने मर्म की बात पहचान ली। उसकी समझ में सब कुछ आ गया। उसने पूछा—

"राजीव निर्मला को क्या हुआ?"

"वह बिलकुल ठीक है।"

"क्या तुम उससे लड़कर आए हो?"

"नहीं राजकुमारी! उससे तो मुलाकात भी नहीं हुई क्योंकि आजकल वह अपनी ससुराल में है।"

—"क्या उसकी शादी हो गई। तुम्हें इसकी इत्तला भी नहीं दी गई? यह क्या हो गया राजीव! प्यारे राजीव मुझे तुमसे हार्दिक सहानुभूति है।"

राजीव शांत था अतः थोड़ी देर तक चपला भी खामोश रही। चपला ने सैर करने के लिए राजीव से आग्रह किया। वे दोनों कार द्वारा

ताजमहल के लिए चल दिए।

× × ×

यह कार्यक्रम चलता रहा। राजीव को चपला से एक मित्र की प्राप्ति हुई। ऐसा मित्र जिसे उसने अपने जीवन का सारा इतिहास बता दिया। एक रात जब चपला राजीव को छोड़कर कोठी वापस लौट रही थी तो गेट पर जो दृश्य देखा वह दंग रह गई। कोठी के चारों ओर पुलिस तैनात खड़ी थी। उसकी समझ में नहीं आया कि मामला क्या है? गेट पर उसकी कार रोक ली गई। कार की खानातलाशी ली गई। उसके बाद उसे अन्दर जाने दिया।

सन्तरी से पता चला कि शैलेन्द्र भैय्या डाकुओं के गिरोह के साथ पुलिस से टक्कर लेते हुए घायल हो गए हैं। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। चपला को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। भैय्या समाज के दुश्मन कैसे बन गए। उनके विचार तो कितने महान् थे। लेकिन आदमी के पतित होने में कुछ देर नहीं लगती।

उसे याद आया कि कल रात अभय और भैय्या गुपचुप बातें करते रहे थे। जैसे कोई बड़ी योजना सोच रहे थे। उसे अभय पर बहुत पहले से ही संदेह था। कई बार उसने अभय की आंखों में शैतान को उतरते हुए देखा था। जब तक वह नासमझ थी अभय से मिलती-जुलती रही लेकिन जैसे ही थोड़ी-सी समझदारी आई वह उसके साये से दूर रहने लगी। कोठी में ज़रूरत से ज्यादा अन्धेरा छाया हुआ था। वह सीधी दीदी के कमरे की तरफ चली। दीदी बेहोश थीं। डाक्टर इलाज के लिए आया हुआ था।

वह चिन्तित मुद्रा में खड़ी रही रात को लगभग ११ बजे अजीता होश में आई। उसने फटी-फटी नज़रों से चारों तरफ देखा। अजीब पागलों जैसी मुद्रा थी। चपला को दीदी का चेहरा भयानक लगा। ऐसा लगा था कि वे सचमुच किसी की हत्या करने का इरादा कर चुकी थीं। डाक्टर ने स्लीपिंग पिल्स दीं। थोड़ी देर तक वे अनर्गल प्रलाप करती रहीं।

जमुहाइयां लेते-लेते कई बार वे ग्रावेश में कापने लगी थीं। लगभग साढ़े १२ बजे उन्हें नींद ग्राई।

दूसरे दिन राजीव भी यह खबर सुनकर कोठी की तरफ चल दिया। सड़क पर ग्रभय डी० ग्राई० जी० पुलिस की कार में बैठा दिखाई दिया। राजीव ने नमस्ते करने के लिए हाथ उठा दिए दोनों की ग्रांखें चार हुईं। ग्रभय राजीव को देखकर बड़बड़ाया। कार जल्दी से निकल गई। उसने सोचा कि ग्रभय शायद अपने चुनाव के कारण ही ग्राफीसरों से मेल बढ़ा रहा है। ग्रतः शैलेन्द्र को छुड़ाने के लिए प्रयत्नशील होगा।

कोठी के बाहर सन्नाटा था। गेट पर सन्तरी ने बताया कि महाराज-धिराज ग्राए हुए हैं। राजीव सावधानी से ग्रन्दर जाने लगा। उस समय महाराज लान में सुबह का नाश्ता कर रहे थे। महाराज के पास ही दोनों राजकुमारियां थीं। नौकर ने राजीव के आने की खबर दी। राजीव को वहीं बुला लिया गया। ग्रभिवादन के बाद भी राजीव खड़ा रहा। महाराज ने संकेत से उसे बैठने को कहा। १० मिनट तक बातें हुईं। महाराज राजीव के व्यक्तित्व से बहुत ग्रधिक प्रभावित हुए।

× × ×

राजीव गांव के खेतों को बेचने के लिए चला गया था। वहीं प्रकाश भय्या से मालूम हुग्रा कि निर्मला एक बेटे की मां बन गई है। उसके हृदय में गुदगुदी होने लगी। उसने सम्पूर्ण धन-राशि निर्मला के बेटे के नाम कर दी ग्रौर निश्चित होकर आगरा लौट ग्राया। ग्रभी तक महाराज ग्रागरे में ही ठहरे हुए थे। वह प्रत्येक दिन उनसे मिलने ग्राता रहा। महाराज ने राजीव को देवनगर चलने के लिए ग्राग्रह किया महाराज के इस प्रेमपूर्वक ग्रादेश को वह नहीं टाल सका। ग्रतः वह राजकीय परिवार के साथ देवनगर पहुंच गया।

देवनगर का किला देखकर उसे बड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा। वैसे तो उसने बहुत से बड़े-बड़े किले देखे थे लेकिन इस किले में जो खास बात थी कि वह एक ऊँची-सी पहाड़ी पर बना हुग्रा था। पहाड़ी के चारों ग्रोर बहुत

गहरी खाई थी। सिर्फ एक ओर लोहे का हेंगिंग ब्रिज था जिसे दुश्मन के आक्रमण के समय उठाया जा सकता था। पहाड़ी काफी ऊंची थी। फिर उसके ऊपर बहुत ऊंची चहार दीवारी थी जो लाल पत्थरों की बनी हुई थी। किले के दरवाज़े में से गुज़रने के बाद दोनों ओर हाथी खाने और घुड़सालें बनी हुई थीं। उसके बाद एक बहुत ऊंचा दरवाज़ा था जिसके अंदर जाने के बाद दोनों ओर फौज के जवानों की कोठरियां थीं और अन्त में फौज़ के पदाधिकारियों के क्वार्टर बने हुए थे। सामने एक बड़ा सा मैदान। उसके बाद एक तोरण जिसके दोनों ओर संतरी पहरा देते हुए दिखाई दे रहे थे। इसी तोरण के दोनों ओर ऊंचे से चबूतरों पर तोप-गाड़ियां खड़ी हुई थीं। तोरण के बाद सामने सुन्दर बाग और बाग के साथ लगी हुई झील। झील के सहारे आकाश महल जो संगमरमर का बना हुआ था। बाग के दाईं ओर कचहरी का दरवाज़ा जहां बसंत पंचमी और दशहरे के उत्सवों पर महाराज बहुत बड़ा दरबार लगाते हैं। दरबार के साथ ही चन्द्र महल बना हुआ है। इसी महल में महाराज निवास करते हैं। झील में से चारों ओर नहरें निकाली गई हैं। इन नहरों में हर समय पानी के फव्वारे चलते रहते हैं। दोनों महल किले के बीचों-बीच स्थित हैं। सबसे ऊंची जगह पर इनका निर्माण हुआ है जहां से सम्पूर्ण देवनगर का दृश्य दिखाई देता है। महलों के चारों ओर ढलान है और फौज के लिए क्वार्टर और कोठियां बनी हुई हैं। महलों की ऊंची-ऊंची मीनारों से मीलों दूर का दृश्य देखा जा सकता है। मीनारों के पास से सुरंगें जाती हैं। इन सुरंगों में से एक का सम्बन्ध दूर राजकीय उपवन में बने हुए मोती महल से है। आजकल महाराज के छोटे भाई युवराज विक्रमसिंह मोती महल में रहते हैं। दूसरी सुरंग नहर के रूप में है जो नदी से मिल जाती है। नदी के किनारे एक छोटी-सी कोठी है जहां आजकल खास महमानों के ठहरने की व्यवस्था है। महाराज ने इसी कोठी में राजीव को ठहराया है। कोठी से नीचे उतरने के लिए घाट बना हुआ है। नदी की एक धारा इस कोठी के लिए राजकीय रूप में सुरक्षित कर ली गई है। इस धारा पर केवल

महाराज का ही अधिकार है। सुरंग नहर के रूप में है और नौका-विहार का सुख देने वाली है। कोठी से लौटने की सुरंग दूसरी है।

राजीव इस छोटी-सी कोठी में रहते हुए कभी भी भयभीत नहीं हुआ। प्रायः प्रत्येक रात को राजकुमारी अजीता सुरंग के मार्ग से कोठी में आती रही है। चपला नौका का संचालन करती रही है। महाराज स्वयं चन्द्र महल में महारानी वसुमती के साथ रह रहे हैं। दोनों राजकुमारियां आकाश महल में रह रही हैं जहां से रात के समय सुरंग द्वारा वे कोठी तक जाती रही हैं। रात में चांदनी की मादकता सुन्दर उपवन, नदी में नौका विहार और राजीव के गीतों की तानें एकांत वातावरण को रंगीन रूपों में प्रस्तुत करती रही हैं। राजीव आधी रात तक इन दोनों राजकुमा-रियों के साथ घूमता रहा है, गाता रहा है, मुस्कराता रहा है और हंसता रहा है।

शैलेन्द्र भी अभय के साथ देवनगर पहुंच गया है। महाराज की एक फटकार ने ही डी० आई० जी० के होश उड़ा दिए अतः उन्हें आतंकवश शैलेन्द्र को रिहा करना पड़ा। इस वर्ष दशहरे का उत्सव बहुत ज़ोर-शोर से मनाए जाने का कार्यक्रम शुरू हो गया है। शैलेन्द्र और अभय दोनों आकाश महल में ठहरे हुए हैं। महाराज ने बहुत-बहुत दूर के कवियों को दशहरे के दरबार में बुलाया है। राजीव की कविताओं ने तो महाराज को बहुत प्रभावित किया। छः महीनों में राजीव को यहां बहुत सम्मान मिला है। राजीव देवनगर के महाराज महेन्द्रसिंह जी के राज-कवि के पद पर नियुक्त हो चुके हैं। अतः दरबार में उसका बहुत अधिक सम्मान है। राजीव की कविताओं को सुनकर राजकुमारी अजीता अपनी सुध-बुध खो बैठी है। उसे पूर्ण आशा है कि दशहरे की प्रतियोगिता में राजीव को ही पुरस्कृत किया जाएगा। भावना की पुतली अजीता उसको उत्साहित करती रहती है। देखते-देखते वह दिन भी आ पहुंचा जबकि भरे दरबार में सभी की आंखों का आकर्षण राजीव बना हुआ था। बहुत से प्रतिष्ठित कवि आए हुए थे। सभी कवि नवयुवक राजकवि के प्रति ईर्ष्याभाव से देख रहे

थे। सामने राजपरिवार के सदस्य विराजमान थे। उनके ऊपर चार फुट की ऊंचाई पर सिंहासन था। इसी सिंहासन के पीछे रेशमी चिकें पड़ी हुई थीं जहां अंत:पुर की रानियों और राजकुमारियों के बैठने की व्यवस्था थी। राज परिवार के सदस्यों के दोनों ओर महाराज के उच्च पदाधिकारी तथा महमान विराजमान थे। उसके बाद राजकवि तथा आमंत्रित कवि-गण थे नीचे जनता के लोगों के बैठने की व्यवस्था थी। सहसा ही दरबार में खलबली मच गई। चोबदार के शब्द गूंजने लगे "सावधान प्रजापालक अरिगण घालक करुणानिधान के० सी० आई० महाराजाधिराज श्रीमान महेन्द्रसिंह दरबार में पधार रहे हैं।"

सभी लोग महाराज के सम्मान में खड़े हो गए। जब महाराज अपने सिंहासन पर विराजमान हुए तो सभी लोग अपनी अपनी जगह पर पुनः बैठ गए। महाराज ने अपने मंत्री जी को कार्यवाही शुरू करने के लिए आदेश दिया। आज ठा० फतहसिंह महाराज की बगल वाली कुर्सी पर बड़े सजधज कर बैठे हुए पान चबा रहे थे। महाराज ने ठाकुर साहब के कान में कुछ कहा और ठाकुर साहब का चेहरा खुशी के मारे चमकने लगा। मंत्री जी ने खड़े होकर राजकवि का परिचय दिया और तीन सदस्यों की निर्णायक समिति की घोषणा की जिसमें ठाकुर फतहसिंह भी एक थे। एक के बाद दूसरा कवि मंच पर आता रहा और कविता सुनाकर अपने स्थान पर बैठता गया। अंत में एक पगड़ीधारी प्रौढ़ पंडित ने महाराज की प्रशंसा में एक सवैया सुनाया। सुनकर ठाकुर फतहसिंह तो अपनी कुर्सी से उछल-उछल पड़े। सारे दरबार में छापातिलक लगाए पगड़ीधारी का आतंक छा गया। पूरा सवैया श्लेष, यमक और अनुप्रास के चमत्कार से भरा हुआ था। पंडित नटवरलाल ने अपना सिक्का जमा दिया। अंत में मंत्री ने राजकवि को कविता सुनाने के लिए कहा। राजीव सोच रहा था कि पंडित नटवरलाल का सवैया केवल चाटुकारी को प्रकट करनेवाला उदा-हरण था वह उसे कविता अर्थात् शुद्ध कविता कैसे माने। इसी बीच दुबारा मंत्री ने राजकवि को सम्बोधित किया लेकिन राजीव ने जैसे कुछ भी न

सुना हो। तीसरी बार स्वयं महाराज गरजने लगे। राजीव ने महाराज की ओर कातर दृष्टि से देखा लेकिन उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अब भी वह टकटकी लगाए महाराज की ओर देख रहा था। इसी बीच रेशमी चिक के अंदर पायल बजी और राजीव सचेत हुआ। उसकी चेतना लौट आई। वह उठा और उठकर मच की ओर बढ़ा। सारा दरबार कुतूहल से देख रहा था। पंडित नटवरलाल अभिमान के साथ सिर उठाए हुए था। लोग कभी राजीव की ओर देखते और कभी नटवर की ओर। राजीव ने एक गीत गाना शुरू किया। गीत गाते समय उसका शरीर वीणा की तरह कोमलता के साथ कांप रहा था। मधुर स्वर और मधुर होता गया। बीच में एक बार फिर पायल बजी महाराज चौंक पड़े। राजीव को जैसे बल मिल गया हो। राजीव गीत गा रहा था। उसने अपनी आत्मा की पुकार एक-एक शब्द में भर दी थी। सारे दरबार में सम्मोहन का जाल फैल गया। लोग सुधबुध खो बैठे। ठाकुर फतहसिंह क्रोध से भिनभिनाने लगे। नटवरलाल अपनी टेढ़ी मुखाकृति से यह जता रहा था कि यह मामूली कविता है। लोग व्यर्थ ही मंत्रमुग्ध हो रहे हैं। महाराज के कान अंतःपुर की ओर लगे हुए थे। करुणा भरा गीत सुनकर अंतःपुर की ओर से आहें निकल रही थी और आंसुओं के शब्द मानो मुखरित हो रहे थे। महाराज के कान में ठाकुर साहब ने कुछ कहा। और फिर एक ज़हरीली फुंकार मारते हुए ठाकुर साहब खड़े हो गए। अजीता भरे दरबार में फूलों की माला लेकर राजीव के गले में डालने के लिए अंतःपुर से निकल पड़ी। महाराज की भृकुटियां तन गईं। पायल बेसुध होकर बजती जा रही थीं। दोनों हाथों में थामे हुए सुगंधित जयमाला लिए अजीता धीरे-धीरे चली आ रही थी। निर्भीक, मौन अचंचल। कुछ ही दूर उसका प्यारा कवि आत्मा की बंसरी बजा रहा था। वह वहीं अपने प्राणों को उसी सुर में जज्ब करने आ रही थी। राजीव को कुछ भी पता नहीं था। अजीता भी अचेत थी। दोनों आंखें खुली हुई थीं। उन आंखों में तरल-तरल गुलाबी रंग का रस भरा हुआ था। महाराज ने चीख

कर कहा—"बंद करो कविता।" लेकिन राजीव ने सुना ही नहीं। "ठहरो अजीता" लेकिन अजीता रुकी नहीं। वह दृढ़ता के साथ चली जा रही थी। सारा दरबार सशंकित और विस्मित देख रहा था अब कोई भी गाने की ओर ध्यान नहीं दे रहा था समाज के सामने जो एक दृश्य था विचित्र दृश्य था लेकिन कवि गा रहा था और कवि-प्रिया सुन रही थी। दरबार में कोलाहल छाया हुआ था। इसी बीच कवि ने गीत समाप्त किया, उसकी आंखें खुलीं और सामने अजीता को खड़े पाया। जयमाला डालने के लिए हाथ फैलाए हुए। बड़ी तीव्र गति से—महाराज सिंहासन से उतरे और आगे चलकर वे कवि और कवि-प्रिया के बीच खड़े हो गए। उन्होंने चिंगारियां फेंकती आंखों से राजीव की ओर देखा। राजीव सहम गया। महाराज ने तुरंत अभय को बुलाया और अजीता के दोनों हाथ थाम कर वह जयमाल अभय के गले में बलपूर्वक डलवा दी। अजीता को होश आया। शैलेन्द्र ने अजीता को सहारा देते हुए अंतःपुर पहुंचा दिया। महाराज ने गम्भीर स्वर से घोषणा की, "आज आप लोगों को यह जानकर खुशी होनी चाहिए कि हमारी बड़ी राजकुमारी अजीता जी का स्वयंवर कुंवर साहब अभयसिंह के साथ सम्पन्न हुआ। सभी नागरिकों को इस सम्मान में अपने घरों में दीपमालाएं सजानी चाहिए। अतः शाम को राजकीय भोज में आप सभी आमंत्रित हैं। इसके बाद महाराज ने अपने गले में से हीरों का हार निकाल कर राजीव की ओर घृणा और उपेक्षा की नज़र से देखते हुए नटवरलाल को पहना दिया। नटवरलाल आज से राजकवि घोषित कर दिए गए। सभा विसर्जित हो गई। जाते हुए लोगों ने दरबार में हतबुद्धि राजीव को देखा। बार-बार पलट कर देखा। वह आंखें फैलाए हुए जाते और बतियाते लोगों को देख रहा था। वह जैसे खड़ी हुई लाश हो। वह मानो स्वयं एक बेहोशी की चेतना हो। वह एक खम्भा हो जो बेहोशी और सन्नाटे के आकाश को अपने कंधे पर साधे हुए अचल खड़ा है। बहुत देर हो गई। वह स्तब्ध खड़ा रहा। जब सभी लोग चले गए तो राजकुमारी चपला ने उसका हाथ पकड़ा। वह चौंक पड़ा। चपला उसे

अपने महल की ओर ले गई। चपला ने राजीव को जगाया। उसे सचेत किया। वह अजीता के पास ले गई। अजीता ने दौड़कर राजीव को अपने गले से लगाना चाहा लेकिन इतने में ही कुंवर अभयसिंह कमरे में दाखिल हुए। उनके हाथ में बिजली का कोड़ा था। राजीव को देखकर क्रोध से आग बबूला हो गए—"अच्छा तो आप यहां पधारे हुए हैं ?" राजीव ने कोई उत्तर नहीं दिया। चपला ने कहा—"अभय भैय्या कृपा करके आप दीदी के कमरे से बाहर चले जाएं। राजीव हमारे मेहमान हैं। मैं उनका अपमान होते हुए नहीं देख सकती।"

अभय गुर्राया—"चपला तुम जानती हो कि अब से यह कमरा केवल मेरा है इसमें तुम्हारी दीदी के अलावा और कोई नहीं आ सकता। और जो साहस करेगा वह अपनी जान भी खोएगा।" अजीता ने समर्थन किया—"बेशक ! कुंवर साहब सही कह रहे हैं। (कुँवर साहब की ओर रुख करके) मैं एक राजपूतानी हूं। आप चिंता न करिए ऐसे लोगों का इलाज़ मैं खुद कर सकती हूं। हां तो राजीव आप मुझे भगाकर ले जाने के लिए आए हैं ?"

इतने में ही अभय ने ताली बजाई और दो नंगी कृपाण लिए हुए आदमी सामने आए। वह गरजने लगा "देखो इस कमीने को पकड़ कर ले चलो और उत्तरी बुर्ज के नीचे कुएं में कंगूरों से······अच्छा।" वे आदमी राजीव को पकड़ने के लिए आगे बढ़े। फौरन अजीता ने डांट कर कहा—"ठहरो तुम इस मरे हुए आदमी का क्या मारोगे ? मैं ही इसका काम तमाम किए देती हूं।" चपला आगे आ गई। अजीता ने राजीव के गाल पर चांटा जड़ दिया। अभय को संतोष हुआ। उसने अपने जल्लादों को भगा दिया। चपला चीख पड़ी "दीदी यह आपने क्या किया ?" राजीव की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। वह अजीता को आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। अजीता चीख रही थी—"खबरदार अब तुम हमारे महल में आए। तुम मुझे भगाकर ले जाना चाहते हो ? मैं तुम्हारे शरीर की खाल में भूसा भरवा दूंगी। मैं राजपूतानी हूं।" "दीदी" चपला चिल्लाई।

"चुप रह चपला। तू वकालत मत कर। यह अगर मर्द होता तो राजदरबार में झट बढ़कर मेरे हाथों से जयमाल पहनता। इस मेमने को तू ले जा कहीं दूर।"

"दीदी न्याय की बात कीजिए। क्या वह दिन आप भूल गईं जब गुंडों के हाथों से आपकी रक्षा राजीव ने की थी।"

"अगर इसमें इतना साहस है तो कुंवर साहब से द्वन्द्व-युद्ध करके मेरी रक्षा करने आगे बढ़े।

"हां, हां, यह ठीक है।" अभय ने मूंछें ऐंठते हुए कहा। राजीव के शरीर में रक्त उबलने लगा। दोनों जुट गए। राजीव ने पूरी शक्ति लगा दी लेकिन अभय को नहीं गिरा सका। अभय ने भी अपना भारी शरीर राजीव पर पलट दिया लेकिन राजीव के फौलादी शरीर को झुका नहीं सका। चपला ज़ोर लगा कर राजीव को सम्बोधित किया। अभय दूसरे ही क्षण धूल चाटने लगा। राजीव खूंखार शेर की तरह टूट पड़ा। उसके प्रहारों से अभय की नाक से खून बहने लगा था। इतने में ही महाराज की गर्जना कानों में पड़ी। "हम भी द्वन्द्व देखने के लिए आए हैं।" न जाने क्या हुआ कि राजीव बेहोश होता गया। बेहोश होता गया। यहां तक कि उसका शरीर जड़ हो चुका था। अभय को मौका मिला और राजीव को उसने दबोच लिया। महाराज ने देखा कि राजीव नीचे पड़ा है—बेहोश। उसकी बेहोशी में ही महाराज ने मुश्कें बंधवाईं। चपला ने साहस करके बेहोश होती हुई अपनी बहन को संभालने का प्रयत्न किया। अभी दो आदमी राजीव को घसीटते हुए ले जा रहे थे कि शैलेन्द्र आ गया। शैलेन्द्र ने मुश्कें छुड़वाईं। महाराज जब तक जा चुके थे। शैलेन्द्र ने अपनी कार में लिटा कर राजीव को कमरे में पहुंचाया। शाम का झुटपुटा था। डाक्टर ने राजीव का उपचार किया। राजीव जैसे ही सचेत हुआ उसने अपने हाथ का प्रहार किया। शैलेन्द्र को उसकी दशा पर तरस आ गया। उसने राजीव को गले से लगा लिया। राजीव शैलेन्द्र के कमरे से बाहर निकला देवनगर की सड़कों पर मारा-मारा फिरता फिरा। शाम होते ही लोग

घरों में दीपमालाएं सजा रहे थे। उसकी डबडबाती आंखों में वह चमक खटक रही थी। वह बेतहाशा भागा भागता चला गया। एक खंडहर के के रूप में मीनार के टूटे जीने पर चढ़ने की कोशिश की। लेकिन वहां से राजकीय महल जगमगाता हुआ करोड़ों नेत्रों से देखता हुआ राक्षस मालूम दिया। उसने आंखें बंद कर लीं। वह फिर नदी की ओर भागने लगा। झाड़ी में से एक खरगोश निकल पड़ा। वह भी उसी दिशा में भागा। कई बार पैरों में कांटे चुभे। लेकिन अब तो कंटीली झाड़ियों पर दौड़ने में उसे आनन्द मिल रहा था। सामने ही वह कोठी थी। वह अपने कमरे में शरीर को पटक देना चाहता था। × × ×

गेट मैन ने कब सैलूट किया, उसे पता नहीं। वह सीधा अपने कमरे में घुसा चला गया। बिजली की रोशनी उसे अच्छी नहीं लगी। उसने एक मोटी सी शमां जलाई। कमरे में आधा अंधेरा और आधा उजाला था। बाजार से वह आज एक अनमोल वस्तु खरीद कर लाया था। उसे इतना मालूम था। उसने शर्बत तैयार किया और बिस्तर के पास रखे स्टूल पर रख दिया। उसने अपने शरीर को पलंग पर पटक दिया। शरीर का जोड़-जोड़ टूट रहा था अंग-अंग तिनकों की तरह चटक रहा था। आंखें बंद करके वह अधिक देर तक निर्जीव और निश्चल भी नहीं पड़ा रह सका। उपेक्षा और घृणा के अतिरेक से आंखें बार-बार झलमला जातीं। खिड़की से झांक कर देखा तो रात काजल जैसी काली थी। वृक्षों की शाखें झूलने लगीं। रात की सांय सांय बढ़ने लगी। इस समय राजीव को अपना जीवन न तो वीरान और अकेला महसूस हो रहा था और न कोई आशा ही उल्लास प्रदान कर रही थी। अंधकार की पर्तों में ढंकी हुई कुछ आकृतियां सूने माहौल में उभरती चली आ रही थीं। बेबस और बेतहाशा राजीव ने सर झटका दिया। थोड़ी देर के लिए वह कमरे से बाहर निकला। घाट की सब से ऊंची सीढ़ी पर बैठकर नदी की धार को देखता रहा। वहां कितना वैषम्य था। उसका हृदय आन्दोलित जहां ऊंची-ऊंची हिलोरें उठ रही थीं लेकिन नदी की धारा शांत और समताल पर बह रही थी।

वहां लगता था जैसे कि तरंग भी नहीं है। बाहर झींगुरों की झन्कार हो रही थी। राजीव को प्रकृति का यह रूप हृदय-हीन मालूम हुआ उसने धीरे से गुनगुनाया—

मेरे दुःख में प्रकृतिन देती, पल भर मेरा साथ।
उठा शून्य में रह जाता है, मेरा भिक्षुक हाथ॥

इसके बाद वह उठ खड़ा हुआ और फिर कमरे में पलंग पर लेट कर कुछ सोचने लगा। सोचते-सोचते वह हड़बड़ाने लगा—हार! जीवन की सबसे बड़ी हार। मेरे प्रेम की हार। एक कवि की हार।······नहीं नहीं यह हार नहीं। मेरा हृदय स्वीकार नहीं करता। लेकिन मेरे स्वीकार करने या न करने से क्या? ओह! नहीं नहीं मैं हारा नहीं। राजकुमारी! मैं हारा नहीं। मेरी हार तो तुम्हारे प्रेम का अपमान है। लेकिन सच है—मेरे प्रेम को अपमान ही तो मिला है। अब तो व्याकुल आत्मा इस पिंजड़े को तोड़ कर शांति के साथ उड़ भी नहीं सकती। मैं—क्या मैं राजीव हूं? वही राजीव जिसकी कविताएं राजदरबार को मुग्ध करती थीं। जिन्हें सुनकर राजकुमारी की ममता का समुद्र सिमट आता था। आह! मेरा प्रेम सिर्फ बालू का एक महल। मेरा जीवन पागल की कहानी और मेरी कविताएं जीवन की तुच्छ अनुभूतियां। इसलिए कविते! कोमल भावने! तुम्हें आज जलती आग में झौंक कर अरमानों की होली खेलूंगा। अच्छा पहले तुम्हीं आओ। तुम वही तो हो जिसने राजकुमारी को कांपते अधरों के साथ बेतहाशा रूला दिया था—

बींध रहे उर पंखुड़ियों में, आज वेदना—शूल।
क्या तुमको अवसादन होगा, करके इतनी भूल॥

क्या अवसाद और क्या भूल। आज तो मैं इन सीमाओं से ऊपर उठना चाहता हूं। फाड़ कर टुकड़े करते हुए जलती हुई शमां को समर्पित कर देता है। दूसरी कविता पढ़ता है—

ढलता नीरव चांद गगन में
दीप बुझे अरमान सो गए।

अरमान के साथ तुम भी सो जाओ। अब तुम आओ। आह ! तुम्हें आखरी बार पढ़ लूं क्यों कि यह समय फिर कहां ?

बुझेगी शमां प्यार की जब तुम्हारी
गिरेगा झुलस कर शलभ भी बिचारा
तभी शेष जीवन का सम्बल रहेगा
वही मौत का टिमटिमाता सितारा।

शमां अब तू भी आराम कर क्योंकि मौत का वह टिमटिमाता सितारा अब दिखाई देने लगा है। आग, अरे दिल की आग ! तुम्हें सब कुछ सौंप रहा हूं। कल्पने ! सो जा क्यों कि तेरे भाव की मौत हो चुकी है। मेरा जीवन पैरों से कुचले हुए तिनकों का ढेर है जो जल कर मुट्ठी भर राख में बदल जाएगा।

वह आगे बढ़ता है। एक प्याले में से दूसरे प्याले में कोई तरल पदार्थ उंडेलते हुए—शहद तुम कितने मीठे हो और ज़हर ! तुम कितने कड़वे। इसी की परीक्षा आज लेना चाहता हूं।"

कुछ देर मुग्ध दृष्टि से देखता है। प्याले वाला हाथ कांपने लगता है। लेकिन दूसरे ही क्षण आंखें बन्द करके एक ही घूंट में पी जाता है। प्याला हाथ से गिर पड़ता है। चेहरे पर कई भाव आते हैं। फिर पलंग पर लेट जाता है। दो दिन पहले मिले हुए भाभी के पत्र की सहसा याद आ जाती है। वह दूसरी शमां फिर जला लेता है। बैग में से पत्र निकालता है और पढ़ने लगता है। भाभी ने लिखा था—"निर्मला अपने पति के साथ दिल्ली आई हुई है। मैंने तुम्हारा तोहफा जब दिया तो फूट-फूट कर रोने लगी थी। वह तुम्हारे आने में ढेर सारी बातें पूछती रहती है। वह तुमसे कुछ बात करना चाहती है। तुमने गांव के खेतों को वेचने के बाद जो ५०,००० रुपये निर्मला के बेटे के नाम लिख दिए हैं उसी के सम्बन्ध में वह तुमसे बात करना चाहती है। राजीव, मुझे विश्वास है कि तुम ज़रूर आओगे। उसने पत्र रख दिया और बड़बड़ाने लगा। एक तीखी कसैली मुस्कान उसके होठों पर फैल गई। "ज़रूर आऊंगा। हां,

ज़रूर आऊंगा। भाभी तुम्हारा विश्वास अटल है।" और फिर निश्वास लेकर पत्र पढ़ने लगा—"राजीव तुमने मुझे मां का दर्जा दिया है और मैं भी सच्चे दिल से अनुभव करने लगी हूं कि तुम मेरे असली बेटे हो। मेरी सारी जायदाद के एकमात्र अधिकारी हो। तुम आ जाओगे तो मैं हरी-भरी मां हो जाऊंगी।" राजीव की आंखों से आंसुओं की लड़ियां बहने लगीं। आंसू आंख से निकलते गाल पर फिसलते और कुर्ते के कालर को भिगोते रहे। वह इस पत्र को पढ़ना चाहता है ज़रूर पढ़ना चाहता है। आगे लिखा था—वैसे तुम्हारे भैय्या देवनगर आने के लिए सोच रहे थे लेकिन अचानक बीमार पड़ गए। वे चाहते है कि तुम उनकी सेवा करो और दिल्ली में स्थायी रूप से रहने लगो। हां, निर्मला की छोटी नन्द भी आई हुई है। निर्मला के पति चाहते हैं कि तुम उनकी छोटी बहिन प्रमिला के साथ शादी कर लो। राजीव मेरे बेटे। तुम नहीं जानते हो कि मां का सबसे बड़ा मधुर स्वप्न क्या होता है ?

प्रमिला इतनी सुन्दर और सुशील लड़की है कि मैं तो अभी से उस पर जान छिड़कती रहती हूं। निर्मला तो उसे बेहद प्यार करती है। इसी वर्ष उसने बी० ए० पास किया है। और हां, वह भी तुम्हें चाहने लगी है। तुम्हारे फोटो को रोज़ प्रातः चमेली का हार पहनाती है।" राजीव के मुख से एक दीर्घ आह निकल पड़ती है। "निर्मला अपने बेटे का फोटो भेज रही है।" वह उठता है और बैग से फोटो निकालकर देखने लगता है। उसे लगता है कि सचमुच बच्चा किलकारी मारकर उसकी गोद में उछलकर आ गया है। वह उसे चूमने लगता है। अब आगे पत्र पढ़ने की शक्ति उसमें नहीं है। वह शिशु के साथ निर्मला की कई मुद्राओं की कल्पना करने लगता है। उसे क्षण-भर के लिए ऐसा लगता है कि निर्मला उसकी पत्नी है। शिशु उसका अपना बेटा है और वह एक बेटे का बाप है। कैसी सुन्दर छोटी-सी गृहस्थी है। कैसा सुन्दर जीवन। इसी समय खिड़की से हवा का एक झोंका आया और कमरे की शमां को बुझाता हुआ चला गया। जैसे राजीव को स्वर्ग से नरक में फैंक दिया हो। एक

गहरी निःश्वास के साथ पत्र अलग फेंक देता है। थोड़ी देर बाद उन्माद में गाने लगता है—

न जाने कौन नहीं है पास ?
बिना जिसके जीवन निस्सार।
इसलिए आओ स्वप्न अनन्त।
पसारे मृदु अंचल का प्यार॥

वह बार-बार गुनगुनाता जा रहा है। हर बार आवाज धीमी होती-जाती है। उसे लगता है जैसे पायल की झंकार कमरे में गूंजती जा रही है। वह चौंकते हुए आंखें फाड़कर देखने की कोशिश करता है, लेकिन उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता। वह सवाल करता है—

कौन ?

आवाज आती है—"राजीव ! राजीव ! राजीव !"

"कौन ?...राजकुमारी ?"

"हां, हां, मैं ही हूँ मेरे कवि !"

"तुम कहां हो ?...मे...र्री स्वामिनी—"

"देखो न यह तुम्हारे सामने ?"

"मुझे कुछ नहीं दिखाई देता, (राजकुमारी)।"

मानो कमरे की लाइट जलती है

"राजीव !"

"राजकुमारी !"

निराश न हो मेरे कवि ! देखो मैं तुम्हें विजयमाला पहनाने आई हूं। इस माला में मेरे प्रेम की कलियां गुंथी हुई हैं। इस माला को मैंने अपने आंसुओं से सींच-सींचकर मुरझाने से बचाया है। सिर्फ तुम्हारे लिए ही। मेरे प्रियतम ! इस माला में मेरा समर्पण है...लो उठो ! स्वीकार करो इसे। वह पलंग से उसी मदहोशी में उठता है लेकिन लड़-खड़ाते हुए धड़ाम से ज़मीन पर ढुलक पड़ता है। पर्दा हमेशा के लिए गिर जाता है।
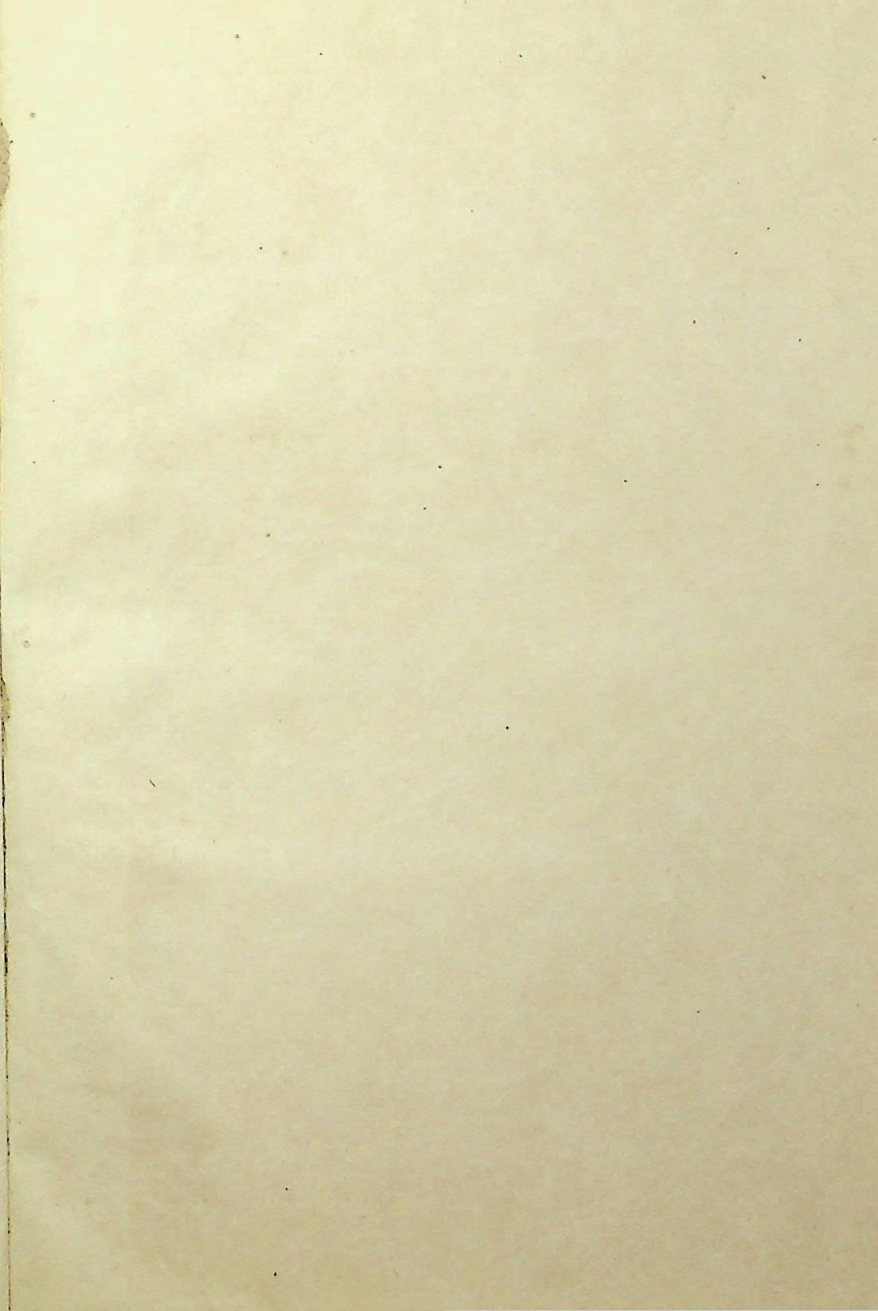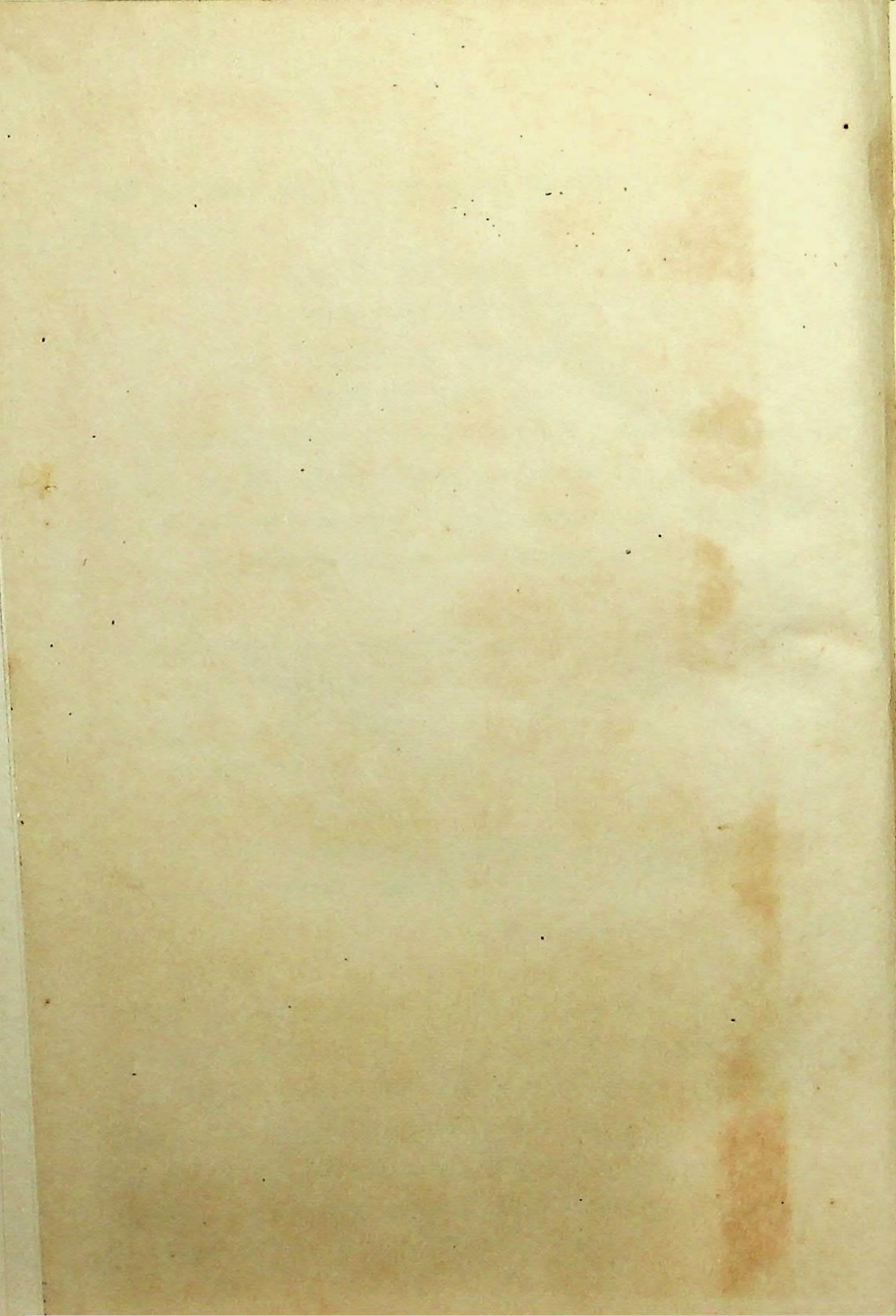
• • •

ये कंगूरे

इस उपन्यास का सब से मनमोहक तत्त्व तो लेखक का अपना भोला-भाला, कुछ सोचता और कुछ हिचकिचाता-सा अस्तित्व है। पूरी पुस्तक में मानो अंधेरी रात में कमरे में फैली हुई नीली, धुंधली-सी परन्तु आंखों को सुख और मन को शान्ति प्रदान करने वाला प्रकाश है, जो प्रकाश है भी और नहीं भी है क्योंकि धुंधलेपन से उसका सम्बन्ध अटूट है। लेखक ने एक स्थल पर जीवन को स्वप्न बताया है और मृत्यु को स्वप्न का टूटना। यही स्वप्न की सी मिठास, ठंडक और धुंधलाहट लेखक ने उपन्यास के हर पृष्ठ पर बिखरा दी है।

दूसरी बात जिसने मुझे आकर्षित किया वह है सोच में डूबा हुआ मगर सीधा-सा स्टाइल। जैसे आपसे कोई बातचीत कर रहा हो और वह भी कान में। इन बातों में बड़ी मधुरता है, नर्मी है। सोच की शीतल मधुर लहरें बहती चली जाती हैं और उनकी इस शीतलता और मधुरता के नीचे जीवन का कितना कोलाहल, उसके व्यंग्य का कैसा विष और कांटे की भांति खटने वाला चिन्तन भरा है।

जाने-पहचाने पात्रों की यह दुनिया सजाकर जीवन के चिंतन को नये ढंग से प्रस्तुत करने पर मैं लेखक को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि पाठक इस यथार्थपरक उपन्यास का हार्दिक अभिनन्दन करेंगे।।

—मुहम्मद हसन
आचार्य तथा अध्यक्ष
स्नातकोत्तर उर्दू विभाग
कश्मीर विश्वविद्यालय
श्रीनगर